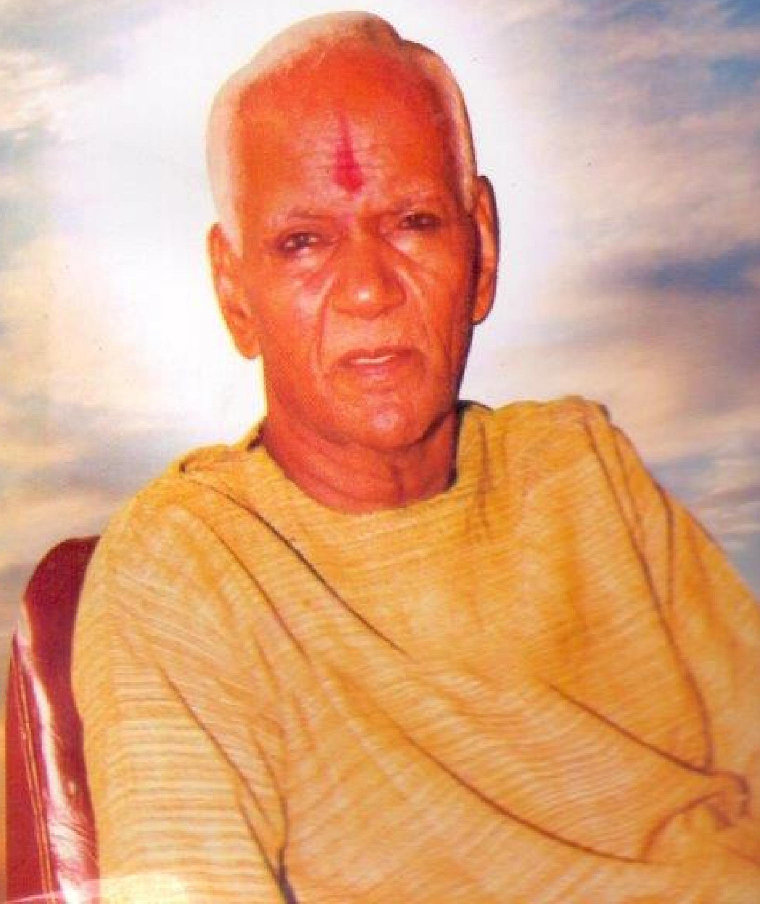
पूज्य गुरुदेव के
मार्मिक संस्मरण



पूज्य गुरुदेव के मार्मिक संस्मरण



लेखक :

पं० लीलापत शर्मा



प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०– २५३०२००



सन् २०१०

मूल्य : ३५.०० रुपये

■ प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

■ लेखक :
पं० लीलापत शर्मा

■ संस्करण :
सन् २०१०

■ मूल्य :
३५ रुपये मात्र

■ मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

पुस्तक परिचय

हमारे जीवन का अनुपम सौभाग्य और संयोग ही कहा जाना चाहिए कि हमें एक अवतारी चेतना का गुरु सत्ता के रूप में सान्निध्य, संरक्षण मिला । परम पूज्य गुरुदेव के दृश्य जीवन के पटाक्षेप के बाद कई परिजनों ने हमसे आग्रह किया कि पूज्यवर के जीवन तथा अपने जीवन के उन महत्वपूर्ण प्रेरणाप्रद प्रसंगों को उजागर करें जिनसे जन-जन भी शिक्षण पाकर लोक सेवा के प्रगति पथ पर अग्रसर हो सके । सबकी जिज्ञासाएँ पूर्ण हों । परम पूज्य गुरुदेव की लिखी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' आज जिज्ञासुओं के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर रही है । पूज्यवर ने जो उपलब्धियाँ पाईं उसके पीछे कितनी तप तितिक्षा और परिश्रम किया यह सब जानने समझने के लिए वह पुस्तक समीचीन है, परन्तु उनके साथ रहने पर हम अनुचरों ने जो कुछ सीखा, जिस जिस रूप में उनको देखा, उसे जानने की उत्सुकता हर परिजन में दिखाई दे रही है । परिजनों का आग्रह हम लंबे समय से टालते रहे हैं । आखिरकार हम उन जीवन सूत्रों को प्रकट कर देना ही चाहते हैं जिनके बलबूते हम आज इस स्थिति में हैं ।

प्रज्ञावतार हमारे गुरुदेव नामक पुस्तक में हमने पूज्यवर के जीवनवृत्त से जुड़े प्रसंगों को लिखा है, परन्तु वे प्रसंग जो

पूज्यवर के सान्निध्य में हमारे साथ घटित हुए, वे प्रेरणाप्रद प्रसंग इस पुस्तक में आप पढ़ेंगे और जानेंगे कि पग-पग पर किन-किन परिस्थितियों में कैसा जीवन जीना पड़ा और अपने आचरण से क्या-क्या उपदेश उन्होंने दिए । अपने अनगढ़ जीवन को परम पूज्य गुरुदेव के चरणों में समर्पित कर जो सीखा और पाया, जीवन को सुगढ़ बनाया । इस लंबी जीवन यात्रा के संस्मरणों से भरी पूरी यह पुस्तक लोक सेवा के पथ के हर राही को दिशा देगी । ऐसा हमारा मानना है ।

सुग्रीव के सेवक के रूप में बाली के भय से ऋष्यमूक पर्वत पर निवास कर रहे हनुमान जी ने अपनी चातुर्य बुद्धि से भगवान राम को पहिचान लिया था । वैसे ही हमने भी परम पूज्य गुरुदेव को श्रीराम के रूप में पहिचाना और तब से 'राम काज कीन्हे बिना मोहि कहाँ विश्राम' 'की भावना से ही कर्म क्षेत्र में सारा जीवन समर्पित है ।

-पं० लीलापत शर्मा

पूज्य गुरुदेव के प्रथम दर्शन

डबरा में गायत्री परिवार के मुख्य कार्यकर्ता श्री द्वारिका प्रसाद बड़ेरिया थे । बाद में उनका नाम गुरुदेव ने द्वारिका प्रसाद चैतन्य जी रखा था। जिन्हें हम सभी अब चैतन्य जी के नाम से जानते हैं । वह हमको डबरा में गुरुदेव का साहित्य दे गए । साहित्य को हमने पढ़ा । उस साहित्य का हम पर इतना प्रभाव पड़ा कि हम नित्य प्रतिदिन उस साहित्य को जब तक पढ़ते नहीं थे, हमको बड़ी बेचैनी रहती थी । हम समझने लगे कि ऐसा साहित्य जिस व्यक्ति ने लिखा है, ऐसा लेखक आज तक हमारी नजर में नहीं आया, क्योंकि हमें पुस्तक पढ़ने का शौक था । सबसे पहले साहित्य का प्रभाव पड़ा, तब तक हमने गुरुदेव के दर्शन नहीं किए थे, सिर्फ साहित्य पढ़कर हम गुरुदेव से बहुत प्रभावित थे । श्री द्वारिका प्रसाद चैतन्य जो भी नई पुस्तकें छप कर जाती थी, हमको दे जाते थे ।

एक दिन उन्होंने कहा कि हमारे गुरुदेव आ रहे हैं । हम पंच कुंडीय यज्ञ भी कर रहे हैं । हमने कहा-हमारे लायक कोई सेवा हो तो बतलावें । हमारा भी मन है कि ऐसे महापुरुष के दर्शन करना चाहिए । चैतन्य जी ने एक छोटी पोटली मेरी तरफ करते हुए कहा-इसमें हमारी धर्म पत्नी के जेवर हैं, इनको बेचकर कुछ रुपये मिल जाएँगे और कुछ धन की व्यवस्था आप कर दें तो यज्ञ कार्य में मदद मिल जाएगी । हम उस समय डबरा में मिल उद्योग एशोशिएशन के प्रेसीडेन्ट थे । हमने उनसे कहा-कितना धन चाहिए ? (उस समय चैतन्य जी करीब २०-२१ वर्ष के लड़के ही थे ।) पाँच सौ रुपये की मदद कर दें तो हमारा काम चल जाएगा । कुछ प्रयत्न हम करेंगे । हमने कहा-पाँच सौ रुपये में पाँच कुंड का यज्ञ कैसे होगा ? खैर हमने पाँच सौ रुपये मिल से दिलवा दिए और मिल उद्योग के सेक्रेट्री को बुलाकर चैतन्य जी के साथ मिल वालों के पास भेज दिया । उसी दिन करीब ३१०० रुपये मिल वालों के सहयोग से प्राप्त हो गए । जब चैतन्य जी आए तो हम से कहा-हमारी

सारी समस्या का हल हो गया है । शायद यह सन् १९५६ की बात है । उस समय बहुत शानदार यज्ञशाला बनी, हमने मिल के इंजीनियर और अन्य स्टाफ से कहा कि तुम यज्ञ में मदद करो । क्योंकि हम पहले से गायत्री के उपासक थे ही और वह गायत्री-यज्ञ था । द्वारिका प्रसाद जी ने हमसे कहा-इस यज्ञ का यजमान आप बन जाएँ । हमने सहमति दे दी । तब कलश यात्रा निकली । उस समय डबरा में एक सन्यासी आश्रम था । सन्यासी जी के पास हम नित्य प्रति जाते थे । चैतन्य जी से हमने कलश यात्रा की रूप रेखा समझी, क्योंकि उनने हमें भी यात्रा में चलने को कहा था । जल यात्रा बड़ी शानदार निकली । जब सन्यास आश्रम पर यात्रा पहुँच गई तब चैतन्य जी ने हमसे कहा-अब आपको दस स्नान करने हैं । हमने कहा-आपकी जैसी व्यवस्था हो वैसा करो । वहाँ पर हमको दस स्नान कराए गए । कलशों का पूजन बहनों से कराया गया । विधि-विधान से कार्य हुआ, उसका हम पर बड़ा असर पड़ा । वहाँ से कीर्तन करते हुए निकले तो बड़ा लम्बा जुलूस बन गया । यज्ञ शाला पर आए, वहाँ कलशों का पूजन करके उनको यज्ञशाला में रखा गया, प्रसाद वितरण हुआ और यज्ञ के कार्यक्रम की रूप रेखा बनाई गई । उस दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ । उस दिन जनता गाड़ी से गुरुदेव आने वाले थे । हम भी अपने मिल वाले साथियों के साथ गुरुदेव को लेने स्टेशन पहुँचे थे । गाड़ी आने से आधा घंटे पहले सभी स्टेशन पर पहुँच गए । गाड़ी प्लेट फार्म पर आ गई । हम सब भाइयों के हाथ में माला थी । हमने प्रथम श्रेणी व द्वितीय श्रेणी के सभी डिब्बे देखे, उस समय ट्रेन में तृतीय श्रेणी के डिब्बे भी लगते थे । किसी में भी गुरुदेव नहीं मिले । हमने सोच रखा था कि गुरुदेव त्रिपुन्ड लगाए हुए होंगे । गले में रुद्राक्ष की माला होगी । भगवा वस्त्र होंगे, जैसे साधुओं के होते हैं वैसा स्वरूप हमारे दिमाग में घूम रहा था, परन्तु ऐसा व्यक्ति हमको कोई भी दिखाई नहीं दिया । हम निराश हो गए कि गुरुदेव नहीं आए ।

गाड़ी के सबसे पीछे के तृतीय श्रेणी के डिब्बे से उतरकर हाथ में टीन का बक्सा बगल में बिस्तर लिए हुए एक भद्र पुरुष चले आ रहे थे । चैतन्य जी दौड़कर गए, प्रणाम किया और बक्सा तथा बिस्तर उनके हाथ से ले लिया । हम देख रहे थे, हम सभी ने समझा इनके कोई रिश्तेदार आ गए हैं । घुटनों तक का कुर्ता था तथा जवाहरकट पहने हुए थे । हमको विश्वास नहीं हुआ कि यही गुरुदेव हैं । हमने चैतन्य जी से पूछा, क्या गुरुदेव नहीं आए ? चैतन्य जी ने इशारे से कहा–यही गुरुदेव हैं । हम सभी भाइयों ने गुरुदेव को प्रणाम किया । गुरुदेव को देखकर हमको ऐसा लगा, कि ये सचमुच भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं । जब हमने उनके साहित्य को पढ़ा तब हमारे दिमाग में सबसे अच्छे लेखक का स्वरूप आया था । जब स्टेशन पर सादगी पूर्ण वेश में देखा तब भारतीय संस्कृति के दर्शन हुए । स्टेशन से जुलूस के साथ गुरुदेव को यज्ञशाला में ले आए । दिन में यज्ञ का कार्यक्रम चलता था, शाम को गुरुदेव के प्रवचन होते थे । पहली बार जब गुरुदेव का प्रवचन सुना तब हमने कहा–यह तो बड़े क्रांतिकारी हैं । बड़ा ही क्रांतिकारी प्रवचन हुआ था । समाज के प्रति बड़ी टीस थी । उनका प्रवचन सुनने के बाद हमने उनमें एक बड़े क्रांतिकारी की झलक देखी । व्यक्ति के व्यक्तिगत दोषों तथा समाज में फैली कुरीतियों के प्रति उनके हृदय में बड़ी टीस थी । प्रवचन के बाद गुरुदेव जब मंच से नीचे आए तब चैतन्य जी से कहा कि बेटा, तुमने तो यज्ञ की बड़ी अच्छी व्यवस्था की है और भोजन तथा ठहरने की भी अच्छी व्यवस्था है । तुमको इसके खर्चे के लिए बड़ा ही परिश्रम करना पड़ा होगा । द्वारिका प्रसाद चैतन्य जी ने कहा–गुरुदेव आपके आशीर्वाद से हमको एक दिन में चार पाँच लोंगों से ही इस खर्चे की सारी व्यवस्था बन गई । हम वहीं खड़े थे, चैतन्य जी ने हमारी तरफ इशारा करके कहा–ये पंडित हैं । यह मिल उद्योग ऐशोसिएशन के प्रेसीडेंट हैं । इनसे हम मिले थे और इन्होंने चार पाँच घन्टे में ३१०० रुपये मिल वालों

से फोन करके दिलवा दिए थे । (उस समय ३१०० रुपये की बहुत कीमत थी ।) उसमें अच्छी व्यवस्था हो गई । गुरुदेव ने हमारी तरफ देखा, थोड़ी देर बात भी की थी । हम वापस मिल पर चले गए । सुबह द्वारिका प्रसाद जी को लेकर गुरुदेव हमारे पास मिल पर पैदल पहुँचे । गुरुदेव ने हमको अपने पास बिठाया और बच्चों की पढ़ाई के बारे में पूछा, लड़की की बाबत पूछा । हमने कहा-बड़ी लड़की की शादी हो गई है, दोनों छोटे लड़के पढ़ रहे हैं । सबके स्वास्थ्य के बारे में पूछा, जैसे कोई पिता अपने पुत्र से अपने परिवार की सारी बात पूछता है । हमारी माँ हमको दो वर्ष का छोड़कर स्वर्गवासी हो गई थी । आठ-दस वर्ष के थे तब पिताजी का स्वर्गवास हो गया । हम अपने माता पिता की इकलौती सन्तान थे । हमने अपने जीवन से जुड़ी लगभग सारी घटनाएँ उनको बताईं । काफी देर तक बात-चीत चलती रही । हमको ऐसा लगा कि गुरुदेव से हमारे पूर्व जन्म के संबंध हैं और हमारे पास हमारे पिताजी आए हैं । धर्म पत्नी को बुलाया, उससे स्वास्थ्य की चर्चा की, सब बात पूछी । हमसे उन्होंने आत्मीयता भरी बातें कीं, हम पर उनका बड़ा असर पड़ा । यज्ञशाला को जब आने लगे तब हम भी उनके साथ ही यज्ञशाला तक पैदल आए । यज्ञ प्रारंभ हुआ, पूर्णाहुति के बाद गुरुदेव का प्रवचन हुआ । उसमें उन्होंने एक बुराई छोड़ने और अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प लेने को कहा और कहा-जो एक बुराई नहीं छोड़ेगा एक अच्छाई ग्रहण नहीं करेगा उसको यज्ञ का लाभ नहीं मिलेगा । आप लोगों ने हमको बुलाया है तो दक्षिणा देकर जाना चाहिए । जिसने यज्ञ नहीं किया है और दक्षिणा देकर जाता है उसको यज्ञ का लाभ अवश्य मिलेगा । सबको अपने पास बुलाकर पूछते रहे कि क्या बुराई छोडी क्या अच्छाई ग्रहण की है । सैकड़ों ने बीड़ी, सिगरेट, माँसाहार, शराब, जुआ आदि बुराइयाँ छोड़ी, एक अच्छाई गायत्री मंत्र का जप, चरण स्पर्श, मीठा बोलना, भगवान को भोग लगाकर खाने की अच्छाइयाँ ग्रहण की । हमने आज तक ऐसा यज्ञ नहीं देखा था,

जिसमें इस प्रकार बुराई छुड़ाई जाती हों । हमने गुरुदेव से पूछ ही लिया कि बुराई छुड़ाने तथा अच्छाई ग्रहण करने का यज्ञ से क्या मतलब है ? जितने भी यज्ञ हमने देखे हैं वहाँ तो पंडित यज्ञ कराते हैं मंत्र बोलते हैं, परन्तु बुराई कोई नहीं छुड़ाता । आपने तो एक नया तरीका इस यज्ञ में अपनाया है । गुरुदेव ने कहा-बेटा, यज्ञ तो प्रतीक है । कर्मकांड ही सब कुछ नहीं है । यज्ञ तो हमारी डुमडुमी है । हम लोगों को कहा करते हैं कि अपनी बुराई छोड़ना तथा अच्छाई ग्रहण करना ही यज्ञ का उद्देश्य है । जो खाली मंत्र बोलकर प्रवचन देकर यज्ञ करते हैं, वह भ्रम में डालते हैं और अपना अहं पूरा करते हैं । इसका हम पर बहुत असर पड़ा । गुरुदेव की विदाई का समय आया, गुरुदेव ने कहा-बेटा पत्र व्यवहार हमसे करते रहना तथा इधर हमारे विचारों को फैलाना । द्वारिका प्रसाद अभी बच्चा है इसकी मदद करते रहना । हमने कहा-गुरुदेव जितना समय हमारे पास होगा उतना समय प्रचार में अवश्य लगाएँगे । गुरुदेव के पत्र हमारे पास इस कार्यक्रम के बाद आने लगे थे । (इन पत्रों को हमने अभी हाल ही में **पत्र पाथेय** नामक पुस्तक में छापा है ।) हम भी गुरुदेव के पास पत्र लिखते रहते थे । अब हमारा मन गायत्री परिवार की ओर आकर्षित हो गया था । हम उनके सभी कार्यक्रमों में भाग लेने लगे थे । धीरे-धीरे हमने कर्मकाण्ड कराना भी सीख लिया । घर-घर यज्ञ भी कराने जाने लगे ।

पुत्र की आयु बढ़ाई

हमारे मिल पर मोहन लाल दलाल दलाली का काम करता था । उसका एक वर्ष का लड़का था, उसका स्वर्गवास हो गया । हमने जब यह शोक समाचार सुना तो उसके पास उसे सान्त्वना देने गए । उसने कहा-मैं कहाँ तक हिम्मत करूँ, अब मेरी हिम्मत टूट गई है, मैं तो प्राण-त्याग ही करूँगा । उसने कहा-मेरे तीन पुत्र हुए एक वर्ष के भीतर ही जन्म लेते और चले जाते हैं, सुनकर हमको भी बड़ा दुःख हुआ । हमने

उससे कहा कि अब की बार तेरे लड़का ही होगा और वह लड़का पूर्ण आयु का होगा । उसके जन्म के समय हम गायत्री यज्ञ करा देंगे और उसी में उसका नामकरण संस्कार करा देंगे । उसको सान्त्वना देकर हम चले आए । उसके बाद उसके यहाँ फिर लड़के का जन्म हुआ । हम तब उसके घर गए और उससे पूर्ण विश्वास के साथ कहा-लड़का पूर्ण आयु का होगा । पाँच कुन्ड के यज्ञ की तैयारी की, चैतन्य जी उस समय यज्ञ का कार्य करते थे । उन्होंने बहुत ही सुन्दर यज्ञशाला तैयार कराई । उस दलाल ने अपने सब रिश्तेदार बुलाए । वह यज्ञ वहीं के कार्यकर्ता मिलकर करा रहे थे । हमने किसी को भी उसकी सूचना नहीं दी थी । गुरुदेव को भी इस विषय का पत्र नहीं डाला था । यज्ञ बहुत ही शानदार हुआ । डबरा के भी सभी भाई बहिनों ने उसमें भाग लिया । अब नामकरण का समय आया तब मोहन लाल ने हमसे कहा-आप ही इसका नामकरण करावें । हमने उसका नामकरण संस्कार कराया और उसका नाम हमने गुरुप्रसाद रखा । तीन दिन बहुत ही अच्छे ढंग से यज्ञ का कार्यक्रम चला । चौथे दिन पूर्ण आहुति थी । यज्ञ कार्यक्रम सुन्दर चला । पूर्णाहुति हो गई तब सभी बहन भाई यज्ञशाला की परिक्रमा लगा रहे थे । **यज्ञ रूप प्रभो हमारे..** की ध्वनि चल रही थी । न मालूम कहाँ से यज्ञशाला में यकायक आग लग गई । यज्ञशाला को साड़ियों से सजाया था, बहुत सामान था । थोड़ी देर में आग ने यज्ञशाला भस्म कर दी । हम भी देख रहे थे । परम पूज्य गुरुदेव गायत्री माता का चित्र था, उस पर आँच नहीं आई । हजारों भाई बहिन थे, किसी को भी रत्ती भर नुकसान नहीं हुआ और कोई जला भी नहीं । वहाँ पर जो दूसरे पंडित थे, उन्होंने हल्ला मचाया, बड़ा अनर्थ हो गया, बड़े गलत मंत्र बोले थे । औरतों से यज्ञ कराया गया । चारों तरफ हाहाकार मच गया । वहाँ पर जितने उसके नातेदार रिश्तेदार थे, सभी बहन भाइयों की आँखों में आँसू थे । सब रोने लगे । चारों तरफ रोने की आवाज थी । हमारे दिल को भी बहुत

धक्का लगा कि यह क्या हो गया । हम भी पछताने लगे, एक दम हमको हिम्मत आई और वहाँ माइक लगा था, उस पर जाकर हमने कहा-भइयो बहनो यह यज्ञ हमारे कहने से हुआ है । इसका जो भी दंड हो हमको मिले और लाभ हो तो इसका लाभ यज्ञ करने वालों को मिले । बहुत समझाने पर काफी देर बाद रोना पीटना बंद हुआ । हम मिल उद्योग के प्रेसीडेन्ट थे इसलिए हमसे किसी ने भी कुछ नहीं कहा, परन्तु दिल में हमारे घबराहट ही रही । दूसरा हमारी जगह होता तो उसका बुरा हाल होता । हमको रात भर नींद नहीं आई । सुबह जब हम स्नान कर ऑफिस में गए तो हमारी मेज पर पोस्ट मैन डाक रख गया । उसमें सबसे ऊपर एक अन्तर्देशीय पत्र था, वह गुरुदेव के हाथ का लिखा हुआ था । हमने उसको खोला और पढ़ा । जिस दिन आग लगी थी, उसके एक दिन पहले पत्र गुरुदेव ने लिखा था । सुबह साधना के समय अपनी उपासना करने के तुरन्त बाद ही पूज्यवर ने यह पत्र हमको लिखा था । उसमें गुरुदेव ने लिखा था कि बेटा तुम एक आदमी से ऐसे कह दोगे कि तुम्हारे अब की बार लड़का होगा, पूर्ण आयु का होगा । उस भाई के पूर्व जन्म के कर्म ऐसे हैं कि उसके लड़का पूर्ण आयु का होगा ही नहीं । इस लड़के की आयु भी बहुत कम थी, लेकिन तुमने उसको विश्वास दिलाया कि यज्ञ करो । गायत्री माता और यज्ञ भगवान के आशीर्वाद से लड़का पूर्ण आयु का होगा । बेटा इस यज्ञ में आग लगेगी और बहुत ही रोना पीटना होगा । तुमको भी चिंता लग जाएगी । तुम तो चिंता नहीं करना । आग लगने से यज्ञ पिता और गायत्री माता ने लड़के की आयु बढ़ा दी है क्योंकि इसकी आयु थी ही नहीं । यों इस घर में अशुभ कार्य होने वाला था । उसको गायत्री माता और यज्ञ भगवान ने अपने ऊपर ले लिया और उस लड़के की आयु बढ़ा दी है । जो इस घर में रोना पीटना होने वाला था वह इस यज्ञ में ही हो जायगा, तुम चिन्ता मत करना । लड़के की आयु बढ़ा दी है । हमने पत्र अपने पास रख लिया और कुछ समय बाद उस

लड़के की जन्म पत्री बनवायी। ग्वालियर के अच्छे पंडित जी से उस जन्म पत्री को दिखवाया। वह दलाल भी हमारे साथ था। पंडित जी ने कहा, इस लड़के की आयु बहुत ही कम है। हमने पत्र पढ़कर सोचा, जब हमने गुरुदेव को पत्र नहीं दिया, गुरुदेव को कैसे पता चला ? हमारे दिमाग में आया कि साधना में भी ऐसी शक्ति मौजूद है कि वह साधक को घटित होने वाली घटना का अहसास मीलों दूर होने पर भी करा सकती है। अब हमारा विश्वास गुरुदेव के प्रति और भी अधिक बढ़ गया। हमने सोचा कि गुरुदेव त्रिकालदर्शी महापुरुष हैं। हम इस किस्से को दूसरे भाई बहनों को सुनाते थे तब उनको बड़ा अचरज होता था।

वंदनीया माता जी के प्रथम दर्शन

अब हमने विचार किया कि अब तक हम पत्र व्यवहार गुरुदेव से करते थे, अब मथुरा चलकर गुरुदेव माता जी के दर्शन करने चाहिए। हम मथुरा आए। गुरुदेव घिया मंडी स्थित अखंड ज्योति संस्थान में रहते थे। हम वहाँ पहुँचे तो वहाँ के कार्यकर्ताओं ने बताया कि गुरुदेव किसी काम से बाजार गए हैं। वंदनीया माता जी को मालूम हुआ तब उन्होंने हमको ऊपर बुलाया। हम माता जी के चरण स्पर्श करके उनके पास बैठ गए। माता जी ने सब बच्चों की तथा परिवार की कुशलता के बारे में पूछा। माता जी चाय बनाकर लाईं और कहा-बेटा जब तक तू चाय पी मैं तेरे लिए भोजन बनाती हूँ। कुछ देर बाद हमने भोजन किया। हम थाली को और चाय के कप को उठाकर जब उनको साफ करने को चले तब माता जी ने थाली हमारे हाथ से ले ली। हमने माता जी से काफी आग्रह किया कि माता जी थाली हम माजेंगे। माता जी ने कहा-बेटा बता थाली माता माँजती है कि बेटा। बेटा, मैं तेरी माँ हूँ, तू मुझे भूल गया है। जब माता जी ने यह शब्द मुझे कहे तब मेरी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी क्योंकि मेरी माता जब मैं दो वर्ष का था तभी स्वर्गवास हो गया था। किसी माता ने मुझसे आज तक ऐसे शब्द नहीं

कहे । मुझे माता जी ने ऐसा प्यार दिया कि अपनी जन्म देने वाली माता की याद करता था कि अगर मेरी माता होती तो मुझको भी ऐसा ही प्यार देती । मुझको ऐसा प्रतीत हुआ कि हमने इसी माँ के पेट से जन्म लिया है । माता जी ने हमारा मस्तिष्क ही बदल दिया । हमने सोचा कि डबरा जब हम पहली बार गुरुदेव से मिले थे तब हमको ऐसा प्रतीत हुआ कि जो प्यार बेटे को अपने पिता से मिलता है वह हमको गुरुदेव ने दिया और जब हम मथुरा आए तब हमको प्रतीत हुआ जो प्यार एक बेटे को अपनी माता से मिलता है वह हमको माता जी से मिला । जब हम डबरा रहते थे तब हमको हर समय ही गुरुदेव माता जी की याद आती रहती थी ।

जब हम मथुरा जाने-आने लगे तब गुरुदेव माता जी हमको कहते कि बेटा सन् ५८ के एक हजार आठ कुन्ड के यज्ञ में तुझे अवश्य ही आना है । हमने कहा-माता जी हम अवश्य ही आएँगे । अब हमारा मन मथुरा में ही लगा रहता था । जब भी हम दिल्ली की तरफ जाते, मथुरा अवश्य ही ठहरते ।

कामधेनु का दूध

एक दिन हम छः-सात भाइयों के साथ कोसी किसी काम से आए थे । उनको हम मथुरा लेकर आए । हमने उनसे कहा-गुरुदेव के दर्शन करके चलेंगे । वह सब राजी हो गए । हम गुरुदेव के पास बैठे थे तभी माता जी हम सबको एक-एक गिलास दूध लेकर आईं । हमने माता जी से कहा-माता जी हम तो दूध नहीं पिएँगे । हमारे पेट में गैस बनती है । तब हमारा वजन भी भारी था । दूध के लिए हमने मना किया । गुरुदेव बोले, बेटा दूध पीले यह नुकसान नहीं करेगा । यह दूध कामधेनु का दूध है । हमने कहा-कामधेनु गाय का दूध है तब तो हम अवश्य पिएँगे । गुरुदेव ने कहा-बेटा, कामधेनु गाय के तुझे दर्शन कराएँ । हमने कहा-अवश्य ही हम कामधेनु गाय के दर्शन करेंगे । गुरुदेव ने रसोई के पास एक पीतल का घड़ा रखा था, इशारा करके कहा-वह कामधेनु है । हमने

कहा–यह तो घड़ा है गाय कहाँ है । गुरुदेव ने कहा–बेटा हम आधा सेर दूध मँगाते हैं और २०० रुपये माहवार में अपना खर्च चलाते हैं पाँच व्यक्ति हैं । ताई (गुरुदेव की माता जी) भी उस समय थीं । बेटा सात आदमी तुम हो और पाँच आदमी हम हैं कुल १२ आदमी हैं और आधा सेर दूध है । माता जी घड़े का पानी मिलाकर चीनी मिलाकर तुमको पिला रही हैं । यह कैसे गैस पैदा करेगा ? हमको बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि जिनको सारा देश गुरु मानता है वह दो सौ रुपये माहवार में घर का खर्चा चलाता है । हम सब पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा । गुरुदेव ने कहा–बेटा ब्राह्मण उसे कहते हैं जो कम से कम में अपना खर्च चलाता है । अपने लिए सुख सुविधा कम रखता है और दूसरे की सुख सुविधा का ध्यान रखता है । हमको बड़ी शर्म आई, एक हम ब्राह्मण हैं जो अनाप शनाप खर्च करते हैं और अपने को ब्राह्मण कहते हैं । हमने कहा–गुरुदेव क्या दान नहीं आता है । गुरुदेव ने कहा–बेटा दान का पैसा खाने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । हमने गुरुदेव में सच्चे ब्राह्मण के दर्शन किए और अपने को धन्य माना ।

सन् १९५८ का महायज्ञ

सन् १९५८ में १००८ कुंडीय यज्ञ में हम मथुरा आए । यज्ञ स्थल के आस–पास बहुत से नगर बसे हुए थे । हमको एक नगर में ठहरा दिया गया । पूज्यवर ने जब हमारे आने की बाबत सुना, तब उन्होंने हमको रात को दस बजे गायत्री तपोभूमि बुलाया और हमसे कहा–इस यज्ञ का रुपये पैसे का हिसाब तुमको संभालना है । हम नये थे, पुराने कार्यकर्ताओं ने एतराज किया कि गुरुदेव नये भाई को रुपये–पैसे का हिसाब किताब संभालने का काम नहीं देना चाहिए । न जाने गुरुदेव को इतना विश्वास हमारे ऊपर कैसे हो गया ? द्वारिका प्रसाद जी डबरा से आए थे । उनसे हमने मदद ली और खास ही मानकर उनको अपना सहयोगी बनाया । यज्ञशाला बहुत सुन्दर थी । भोजन का कार्य चल रहा था । जहाँ भी

गुरुदेव जाते थे, उनके साथ हम रहते थे और जो पैसा उनके चरणों में आता था, उसको हम अपने पास जमा करते थे। दान का पैसा हमारे पास ही आता था, परन्तु हमने हिसाब लगाया कि लगभग पाँच लाख आदमी इस यज्ञ में अवश्य ही आए होंगे। हमारे पास जो पैसा दान का गुरुदेव के चरणों में आया, वह इतना धन था कि जितने नगरों में टैन्ट लगे थे यज्ञशाला बनी थी उसका पेमेन्ट हमने कर दिया था। हमने हिसाब लगाया कि पाँच लाख आदमी से कम नहीं थे ज्यादा हो सकते हैं। हमने गुरुदेव से पूछा, गुरुदेव इन सब व्यक्तियों के खाने पीने का खर्च कैसे पूरा हो गया ? ये बात हमारी समझ में नहीं आ रही है। वे बोले- बेटा तू तो हिसाब के चक्कर में पड़ा है। अरे ! यह भगवान का काम था और भगवान ने पूरा कर दिया। हमने सोचा जो व्यक्ति २०० रुपये माहवार में अपने घर का खर्च चलाता है और एक टूटे-फूटे मकान में रहता है। उसके पास इतना पैसा कहाँ से आया। हमने समझ लिया कि यह व्यक्ति नहीं ईश्वरीय शक्ति है। उस दिन से हम गुरुदेव में ही गायत्री माता के दर्शन करते थे। उस दिन से गुरुदेव माता जी के प्रति हमारी श्रद्धा हजार गुनी बढ़ गई।

साक्षात् कृष्ण के दर्शन

कुछ दिनों बाद गुरुदेव का एक पत्र हमारे पास आया, उसमें लिखा था कि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल गायत्री तपोभूमि आ रहे हैं, तुम दो दिन को मथुरा आ जाओ, उनकी व्यवस्था करनी है। हम दो दिन के लिए मथुरा आ गए। गुरुदेव का जितना भी साहित्य था, वह भी हमने साहित्य स्टाल पर रख दिया था। उस समय मिशन के कार्यकर्ता तो यहाँ नहीं थे, परन्तु मथुरा के सभी बड़े ऑफिसर यहाँ आए थे। राज्यपाल ने यहाँ पूज्यवर का साहित्य देखा, गुरुदेव से बातचीत की। हॉल बन गया था उसमें उनका प्रवचन हुआ। राज्यपाल ने कहा-हम मथुरा में भगवान कृष्ण के दर्शन करने आए थे। सभी मंदिरों में दर्शन किए, मथुरा वृंदावन

गए, परन्तु हमको भगवान कृष्ण के दर्शन कहीं भी नहीं हुए, परन्तु जब हम यहाँ गायत्री तपोभूमि आए तब हमने आचार्य जी में साक्षात कृष्ण के दर्शन अवश्य किए हैं । राज्यपाल के मुँह से ऐसा सुनकर हमारी श्रद्धा गुरुदेव के प्रति हजार गुनी बढ़ गई । अब विचार किया, इन भगवान का पल्ला अब हमको अवश्य पकड़ लेना चाहिए ।

प्रगतिशील जातीय सम्मेलन

मथुरा में गुरुदेव ने एक बार प्रगतिशील जातीय सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें हमें भी डबरा से आमंत्रित किया गया था । पूज्यवर उप-जातियों का बंधन समाप्त करना चाहते थे । आज अनेक उप-जातियाँ बनने से कई समस्याएँ पैदा हो गई हैं । विवाह इत्यादि में तो इसी कारण भारी अड़चनें आती हैं । उप-जातियों की कट्टरता को समाप्त किया ही जाना चाहिए और अपनी छोटी परिधि को समाप्त कर बड़ी जाति की सीमा में विस्तृत कर देना चाहिए । यह विवाह संबंध की जटिलताएँ दूर करने में काफी हद तक लाभकारी होगा । नियन्ता ने यह संसार वर्ग जाति के भेद से परे बनाया है । यह भेद तो सब मनुष्यों की क्षुद्र बुद्धि की ही उपज है । परम पूज्य गुरुदेव के प्रवचन सुनकर हमारे मन में भी कुछ प्रयत्न करने का संकल्प उभरा । पूज्यवर ने कहा कि दहेज रूपी पिशाच आज निरीह कन्याओं को उत्पीड़ित कर रहा है । कितनों की जीवन लीला विवाह के पूर्व एवं बाद में इसी राक्षस के कारण समाप्त हो गई है । इन बेटियों के प्रति करुणा को जगाना चाहिए । भगवान राम ने ऋषियों की हड्डियों के ढेर को देखकर भुजा उठा कर संकल्प ले लिया था-"निशिचर हीन करौं महि ।" आज समाज संस्कृति राष्ट्र पर चारों तरफ से कुरीतियों, कुप्रथाओं तथा अनाचार के आक्रमण हो रहे हैं । ऐसे समय में अकर्मण्य, आलसी, विलासी बनकर बेखबर रहना समाज के प्रति कर्त्तव्यहीनता ही कही जायेगी । समाज में धूमधाम के बेतुके खर्चीले विवाहों का प्रचलन रोकें । प्रेरणाप्रद वातावरण में सामूहिक आदर्श

विवाहों का आयोजन करें । हमने १५ पुस्तकें इन विषयों पर प्रकाशित की हैं । उन्हें घर-घर जाकर पढ़ाने का क्रम बनाएँ । अपना समय, श्रम, धन कुरीतियों को दूर करने में लगा कर इस अति विशिष्ट समय का युगधर्म पालन करें । जो हमारे विचारों को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं उनसे हमें कुछ नहीं कहना है । जिन्होंने हमारे विचारों को हृदय में धारण किया है उन्हीं से हमें बड़ी आशा है । पूज्यवर के इस मार्मिक उद्‍बोधन ने हमारे अन्तःकरण को झकझोरा । पूज्यवर ने हमें अपने हृदय की पीड़ा का और समाज के प्रति कर्त्तव्य का बोध कराया । हम १५ पुस्तकें खरीद कर ले गए । खूब मन लगा कर आद्योपान्त पढ़ीं । मनन, चिन्तन किया । घर-घर झोला पुस्तकालय द्वारा इन पुस्तकों को पढ़ाने का क्रम भी बनाया । हमारे एक आत्मीय स्वजन श्री रंगी लाल जी थे । उन्हें इन पुस्तकों को पढ़ने के लिए दिया । उन्होंने गुरुदेव के विचारों को पसंद किया और भी पुस्तकें पढ़ने की उनके मन में रुचि जागी । वे हमारे पास आकर पुस्तक ले जाते, पढ़ने के बाद वापस दे जाते । यह क्रम चलता रहा । मथुरा से पूज्यवर का रचा हुआ सारा साहित्य मँगा लिया था । झोला पुस्तकालय द्वारा ज्ञान अमृत बाँटने तथा संस्कार कराने के कार्यक्रम से अखंड ज्योति पत्रिका के सैकड़ों सदस्य बनाने तथा मिशन से जोड़ने में सफलता मिली । उस समय हम मिल उद्योग एशोसिएशन के अध्यक्ष थे, इसी कारण संपर्क व प्रभाव क्षेत्र भी व्यापक हो गया था ।

सन्यासी की स्वाद साधना

हम नित्य प्रातः टहलने जाया करते थे । रास्ते में एक सन्यासी की कुटिया पड़ती थी । वह संन्यासी अपने को साधना की भट्ठी में गलाने, तपाने के विविध क्रम अपनाते रहते थे । उस कुटिया में नित्य थोड़ी देर रुक कर संन्यासी जी को प्रणाम करते इसी कारण उनसे विचार विनिमय जैसा क्रम चल पड़ा । उनको भी हमारी जिज्ञासाएँ एवं पूज्य गुरुदेव के

विचार सुनने में रुचि आने लगी । एक दिन टहल कर हम वापस आ रहे थे लेकिन संन्यासी जी के वहाँ दिखाई न देने पर हमने उनके शिष्य से पूछा तो जबाब मिला कि वे एक कोठरी में बंद हैं कोई विशेष अनुष्ठान चल रहा है । हमें बड़ा आश्चर्य हुआ । दूसरे दिन भी जब दिखाई नहीं दिए तब बंद कोठरी के दरवाजे के पास हम बैठ गए जिससे आहट सुन सकें, परन्तु अन्दर से संन्यासी जी के शब्द बार बार सुनाई दे रहे थे । खा क्यों नहीं रहा है । यह हमारे लिए रहस्य बन गया । तीसरे दिन संन्यसी जी कोठरी के बाहर बैठे थे, अपने शिष्य से नीम की पत्तियां मँगाकर उसे पीस कर रस निकलवा रहे थे । हमारे अन्दर इन बातों को जानने की बड़ी उत्सुकता थी । हमारी संन्यासी के प्रति श्रद्धा तथा उनका हमारे प्रति गहरा स्नेह था सो हमने पूछ ही लिया कि स्वामी जी आप तीन दिन से कोठरी में बंद होकर कौन सी विशेष साधना कर रहे थे । उन्होंने हमारे प्रश्न का उत्तर देने से पहले कहा कि पहले कोठरी में घूम कर आओ फिर बताऊँगा । हमने कोठरी देखी तो वहाँ तरह-तरह के फल व्यंजन मिठाइयाँ रखी थीं । फिर अचरज में पड़ गए कि आखिर यह सब क्यों रखी हैं ? हमने सन्यासी जी से कहा कि उसमें तो नाना प्रकार के व्यंजन, मिठाइयाँ व फल रखे हैं । स्वामी जी ने कहा कि मेरा मन कुछ दिनों से अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए मचल रहा था, उसी को दण्ड देने के लिए यह सब किया है । अब कड़वे नीम का रस पी रहा हूँ कि अब मन स्वाद की तरफ ललचाया तो इसी तरह का भोजन मिलेगा । संन्यासी जी ने आगे कहा-तीन दिन से मन को सिर्फ दिखाया है खाया कुछ भी नहीं है । अब वह सीधा हो गया है । मन को साध लेने पर सब इंद्रियाँ वशीभूत हो जाती हैं । हमने संन्यासी जी की इस साधना से प्रेरणा ली कि मन की हर इच्छा पूरी नहीं करनी चाहिए । उस पर घोड़े की लगाम की तरह अपना नियन्त्रण बनाए रखना चाहिए । दिशाहीन न हो जाएँ इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए । नियमित टहलने के लिए श्री द्वारिका प्रसाद जी

भी हमारे साथ जाने लगे । तब हम दोनों मिलकर मिशन के अधिक विस्तार के बारे में बातें करने लगे । विचार विमर्श में एक दिन हमें सूझा कि क्यों न इसी आश्रम (सन्यासी कुटिया) को ही यज्ञशाला बनाकर साप्ताहिक यज्ञ का कार्यक्रम चलाया जाय । सामूहिक साधना सत्संग, गोष्ठी होने से प्रचार प्रसार भी होगा । सन्यासी जी ने भी खुशी-खुशी सहमति दे दी । यज्ञशाला बाँस बल्लियों, घास इत्यादि लाकर निर्मित कर ली । वहाँ प्रत्येक रविवार को यज्ञ का कार्यक्रम चल पड़ा । मिशन की सब गतिविधियों को नई गति देने में यह क्रम सब कार्यकर्ताओं को पसंद आया । परम पूज्य गुरुदेव पत्रों द्वारा हमारा उत्साह बढ़ाते रहे, दिशा देते रहे ।

उप जातीय बंधन तोड़ा

हमने जिन्हें पूज्यवर के साहित्य द्वारा प्रभावित किया था उनमें से एक भाई रंगी लाल जी गौड़ तथा एक श्रोत्रिय जी सनाड्य ब्राह्मण भी थे । एक दिन भाई श्रोत्रिय जी ने हमसे कहा-पूज्य गुरुदेव ने विवाहों के आदर्श स्वरूप के बारे में कितनी अच्छी बातें लिखी हैं यदि ऐसा समाज में चल पड़े तो हम जैसों को इन दिनों कन्या के लिए वर खोजने में जो कठिनाइयां आ रही हैं वे रहती ही नहीं । हमने उनसे पूछा-कौन सी कठिनाई आ रही है ? वे बोले-कहीं घर-वर अच्छा मिल जाता है तो उपजाति की समस्या आ जाती है । कहीं अपनी बिरादरी के लिए जाएँ तो दहेज की माँग करते हैं । हमने कहा कि समस्या का यही समाधान है कि रंगीलाल जी आपके घनिष्ठ मित्र हैं ही, फिर उनका लड़का योग्य भी है क्यों नहीं यह संबंध कर लेते हैं । श्रोत्रिय जी बोले-सो तो ठीक है परंतु हम सनाड्य ब्राह्मण हैं और रंगी लालजी गौड़ ब्राह्मण हैं हम तैयार भी हैं, किन्तु हम दोनों की पत्नियाँ मानने को तैयार नहीं हैं । समाज क्या कहेगा, कैसे ऐसी परंपरा का उल्लंघन कर दें ? हमने दोनों पक्षों को सहमत कराने के सब प्रयत्न कर डाले । आदर्श विवाह का स्वरूप समझाया तो दहेज न मिलने की बात परिवारीजनों को खलेगी । हमने

कहा–लड़का और लड़की दोनों संस्कारवान, शिक्षित और सुशील हैं फिर यह संबंध तो हम करेंगे ही । हम समाज से लड़ लेंगे । केवल दोनों पक्ष के अभिभावक तैयार हो जाएँ बस । हमने कहा–समाज वालों से लड़ना हमारे ऊपर छोड़ दो । हमने विवाह के लिए दोनों पक्षों को सहमत कर लिया । बाकी विरोध करने वाले वृद्ध और रूढ़िवादी परिजनों ने शादी में सम्मिलित होने से इंकार कर दिया । हम नवयुवकों एवं गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं को बारात में शामिल कर बारात लेकर पहुँच गए । वहाँ बड़े विवाद खड़े हो गए । हमारा विश्वास था कि परमपूज्य गुरुदेव के विचारों की ही विजय होगी । उनका आशीर्वाद हमारे साथ है । अन्ततः विजय हमारी अर्थात् सत्य की ही हुई और जन समर्थन भी हमें मिला । इन सारे प्रयत्नों में भाई द्वारिका प्रसाद जी बड़ेरिया का भी सहयोग रहा । उन्होंने ही गुरुदेव का साहित्य पढ़ने को सर्वप्रथम हमें दिया था, उन्हीं कारणों से ही हमने परम सत्ता को पाया । रात दिन परम पूज्य गुरुदेव के विचार घर–घर पहुँचाने की धुन सवार थी । हमारी श्रद्धा निरन्तर बढ़ती रही । दो घंटा समय नित्य ही इस कार्य में लगाए बिना चैन नहीं था ।

गरीब–अमीर का बंधन तोड़ा

एक दिन हमारे पास एक मुनीम जी आए और कहने लगे आपने कितना विरोध लेकर सनाड्य और गौड़ की शादी करा दी । हमने विनत भाव से यही कहा कि यह हमने नहीं हमारे गुरुदेव ने विवाह कराया है । हम तो डाकिया (संदेशवाहक) मात्र हैं । उनके विचार बड़े शक्तिशाली हैं । उनकी शक्ति से ही सब संभव बन पड़ा है । मुनीम जी ने कहा–हमारी भी एक प्रार्थना अपने गुरुदेव से करें । हमारी एक लड़की उच्च शिक्षित है, परन्तु कोई सुयोग्य वर मिल जाता तो अच्छा रहता । दहेज देने की सामर्थ्य हमारी है नहीं । हमें बड़ी चिन्ता है । हमने उन्हें आश्वासन दिया कि परम पूज्य गुरुदेव की शक्ति से आपकी समस्या हल हो जाएगी । मुनीम जी जिस जगह काम करते थे उन सेठ जी का एक

लड़का था । हमने पूज्य गुरुदेव का साहित्य पढ़ा कर उनकी मानसिकता को मिशन के अनुरूप बना दिया था, परन्तु उनके घर में सबको बदलना बड़ी टेढ़ी खीर थी । पूज्य गुरुदेव के अनुग्रह से ही सब कार्य होने का विश्वास प्रबल था । हमने सेठ जी को सहमत तो कर लिया, परन्तु परिवार के सदस्य उनकी धर्म पत्नी इत्यादि को सहमत करने के लिए कई दिनों के प्रयास के बाद सफलता मिली । हमने कहा कि दहेज लेकर आने वाली कन्या को तो यह अहं रहेगा कि हमारे बाप ने धन दिया है । वह न तो ढंग से सेवा कर पाएगी न घर का काम करेगी । वह तो अपने आप को सेठानी मानेगी । यह मुनीम की लड़की सुन्दर है सुशील है, शिक्षित है यह आप सबकी सेवा करेगी, सम्मान देगी । धूम धाम से विवाह करने पैसा पानी की तरह बहाने से कोई फायदा है नहीं । सेठ का अर्थ श्रेष्ठ होता है । परम पूज्य गुरुदेव के विचारों की उपेक्षा करने से पतन ही होगा उत्थान नहीं । इस बात को अच्छी तरह हृदयंगम करा दिया । आखिर आदर्श विवाह सम्पन्न कराने की सब व्यवस्था कर दी गई । प्रेरणाप्रद वातावरण में वैदिक पद्धति से आदर्श विवाह संपन्न कराया । दर्शकों में कितनों ने ही कार्यक्रम को सराहा और दहेज लोलुपों को धिक्कारा । इस विवाह में सेठ जी की इस श्रेष्ठता अपनाने की पहल को विचारशीलों ने प्रेरणाप्रद और आदर्श बताया । रूढ़िवादियों को मुँह की खानी पड़ी । हमें अपनी सफलता पर भारी संतोष हुआ । ऐसे विवाह संस्कारों के समाचार को परम पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण योजना पत्रिका में प्रकाशित करने का क्रम भी प्रारंभ कर दिया । हमें परम पूज्य गुरुदेव ने पत्र लिखा कि इन समाचारों का ब्योरा लिखें । हमने इन समाचारों को भेजा और परमपूज्य गुरुदेव ने प्रकाशित भी किया ।

एक दिन मथुरा गए तब परम पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माता जी भी मिली । माता जी पत्र खोलकर पढ़कर सुना रही थी तथा गुरुदेव उत्तर लिख रहे थे । हमारे पहुँचते ही बोले-बेटा तू आ गया । हम तेरी ही याद

कर रहे थे । डबरा में तुम बच्चों ने मिशन का जितना कार्य किया है वह दूसरी शाखाओं के लिए अनुकरणीय है । हमें बड़ी प्रसन्नता है । डबरा में उपजातियों के बंधन तोड़कर जो विवाह कराए उसका और मुनीम जी की लड़की का सेठ के लड़के से विवाह करने के सब समाचार विस्तार से सुनाओ । हमने सब बातें बताईं । माता जी भी बड़ी प्रसन्न हुईं और कहा-बेटे तो मेरे बहुत हैं पर तू ही अकेला सबसे प्रिय है । परम पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया और कहा-हम उनके साथ सदैव हैं जो हमारा कार्य कर रहे हैं । जो केवल तस्वीर पूजते हैं माला जपते हैं इतने से ही हमारे आशीर्वाद की कामना करते हैं और जहाँ समर्पण, त्याग, आदर्श प्रस्तुत करने का समय आता है तो दांत निपोरते हैं, वे हमारे शिष्य नहीं हैं । सच्चे शिष्य होने के लिए समर्पण की परिभाषा अपने कार्यों से प्रमाणित करनी होगी । अध्यात्म का लाभ भी मात्र चिन्ह पूजा से नहीं मिल जाता । अध्यात्म रग रग में नस नस में छा जाना चाहिए ।

वेदों का प्रचार-प्रसार

एक दिन हम मथुरा आए घीया मंडी अखंड ज्योति संस्थान जहाँ गुरुदेव तथा वंदनीया माता जी रहते थे, वहाँ पहुँचे । गुरुदेव ने कहा-बेटा तुम्हारी याद ही कर रहा था । तुम आ गए ठीक रहा । हमने कहा-गुरुदेव क्या आज्ञा है ? गुरुदेव ने कहा-चारों वेदों के भाष्य छपकर तैयार हैं, तुमको अब एक काम करना है । कम से कम चारों वेदों के सभी खन्डों के पाँच-पाँच सैट ले जाने चाहिए । एक-एक वेद के कई खन्ड थे । वेदों को लोग भूल गए हैं । अब घर-घर वेद पहुँच जाएँगे । हम उस समय वहाँ से पाँच सैट वेदों के लेकर ग्वालियर चले गए । वहाँ पर जब हम पहुँचे तब हमको मालूम हुआ कि सन्त विनोबा ग्वालियर आए हैं और वह मुरार में ठहरे हैं । हम वेदों को लेकर विनोबा जी के पास पहुँच गए । वहाँ पर हमने उनके चरण स्पर्श किए और हमने उनसे कहा-हम आपको वेदों का एक सैट भेंट करना चाहते हैं । विनोबा जी ने वेदों को

देखकर कहा-इनको हमारे पास रख जाओ । सुबह आना, हम पहले इनको पढ़कर देख लें । हम वेदों का एक सैट विनोबा जी को देकर चले आए । अगले दिन सुबह हम विनोबा जी के पास पहुँचे तब हमने कहा- आपने वेद पढ़ लिए होंगे । अब आप हमारी भेंट स्वीकार करें । उन्होंने कहा-आज हमारा प्रवचन ग्वालियर कंपू पर है । वहाँ हम तुमको जब बुलाएँ तब वेदों को लेकर आ जाना । तब हम वापस ग्वालियर-लश्कर आ गए । ग्वालियर लश्कर मुरार ग्वालियर के ही हिस्से हैं । वहाँ पर विनोबा जी प्रवचन के लिए स्टेज पर आ गए । हमारे साथ तीन-चार भाई थे, जो वहाँ पर खड़े थे । विनोबा जी ने प्रवचन में पहले कहा-जिन्होंने हमको मुरार में वेद दिए थे वह यहाँ आकर हमको भेंट करें । हम स्टेज पर ऊपर चले गए और वेदों का सैट उनको भेंट किया । विनोबा जी ने वेदों को लेकर सिर पर रखा और खुशी से झूमने लगे तथा कहा-जिस ऋषि ने इसका भाष्य किया है उनको मैं प्रणाम करता हूँ । इन वेदों को सबको पढ़ना चाहिए । बड़ा सरल भाष्य किया गया है । हमने इनको पढ़कर देख लिया है । हम जैसे ही स्टेज से नीचे उतरे, सारे लोग वेदों का सैट माँगने लगे । हमारे पास सिर्फ चार ही सैट थे । कुछ समय में ही चारों सैट बिक गए । हम उसी समय मथुरा के लिए कंपू से ही बस में सवार हो गए क्योंकि उधर विनोबा जी का प्रवचन चार दिन होने वाला था । हम मथुरा आए और अखन्ड ज्योति संस्थान से सौ सैट ले गए । लश्कर में विनोबा जी का प्रवचन था । एक दिन में ही सारे सैट बिक गए । अगर सौ दो सौ सैट और उस समय होते सब बिक जाते । हम कुछ समय बाद जब मथुरा आए तब परम पूज्य गुरुदेव वंदनीया माता जी घीयामंडी मकान में बैठे मिले । हँस कर गुरुदेव ने कहा-बेटा सौ सैट वेदों के ले गया था उनका क्या हुआ कितने सैट बचे हैं ? हमने कहा- गुरुदेव वह उसी समय दो घन्टे में ही सारे सैट बिक गए । अगर सौ दो सौ सैट मेरे पास होते तो वे भी बिक जाते । गुरुदेव ने कहा-बेटा इधर तो

जो भी आता है मुश्किल से एक सैट लेता है । काफी कहते हैं तब ले जाता है । तूने इतने सैट कैसे बेच दिए ? हमने सारा किस्सा गुरुदेव को सुनाया । गुरुदेव माता जी ने कहा-ऐसे लगन वाले बच्चे हमको थोड़े भी मिल जाएँ तो हमारे विचार भारत में ही नहीं सारे विश्व में घर-घर पहुँच सकते हैं । गुरुदेव ने कहा-बेटा मेरा पूर्ण आशीर्वाद तुम्हारे साथ है । तू तो मेरे विचारों को घर-घर पहुँचा । तब से हम जब भी मथुरा आते साहित्य ले जाते थे । डबरा से भी साहित्य का आर्डर देते थे । हमारी रुचि तभी से साहित्य के प्रति है । जब तक हम गुरुदेव के विचारों को पढ़ नहीं लेते हैं तब तक हमको बड़ी बेचैनी रहती है । हम जब भी उनका साहित्य पढ़ते हैं तब हमको ऐसा प्रतीत होता है कि हम गुरुदेव के पास बैठकर उनसे बातें कर रहे हैं । जो भी व्यक्ति चाहे उनका साहित्य पढ़कर उनके पास बैठने का पूरा पूरा लाभ प्राप्त कर सकता है । आज गुरुदेव वंदनीया माता जी की तस्वीर पर चंदन फूल चढ़ाते हैं भोग लगाते हैं, जयकारा भी बोलते हैं, जप भी करते हैं, परन्तु जब उनके विचारों को पढ़ने तथा गुरुदेव के पास बैठने को कहते हैं तो लोग कह देते हैं कि हमारे पास समय नहीं है । उनके पास बैठने उनसे बात करने की भी जिन भाई बहिनों की इच्छा हो वह एक पुस्तक प्रति दिन पढ़ें । उनके विचारों की सेवा ही उनकी सबसे बड़ी सेवा है ।

गुरुदेव एक सच्चे ब्राह्मण

एक दिन हम अखंड ज्योति संस्थान आए । वहाँ से गुरुदेव तपोभूमि पैदल आते थे । हम भी उनके साथ पैदल आए । गायत्री माता के दर्शन करने के बाद गायत्री माता के सामने खुला चौक था, उसमें धूप में बैठ गए । सर्दी का समय था, हम भी गुरुदेव के पास बैठ गए । उसी दिन घनश्याम दास बिरला तपोभूमि आए और गुरुदेव के पास बैठ गए । काफी देर तक गुरुदेव की बिरला जी से बातें होती रहीं, बिरला जी ने गुरुदेव से कहा-तपोभूमि में यज्ञ आदि का खर्च काफी है । आचार्य

जी ! आप चाहें तो हम भी आप की मदद कर दें । गुरुदेव ने बिरला जी से कहा-आपको कौन देता है ? बिरला जी बोले, हमको भगवान देता है । गुरुदेव ने कहा-भगवान से हमारी भी जान पहिचान है, हम उनसे सीधे ही क्यों नहीं माँगें ? बिरला जी सुनकर चुप हो गए । गुरुदेव का इतना ईश्वर विश्वास देखकर हम नत मस्तक हो गए । हमने सोचा, कितने आत्म विश्वासी हैं गुरुदेव । तबसे हमने भी निर्णय कर लिया कि किसी से माँगेगे नहीं । जब कभी भी धन की आवश्यकता पड़ी है तब आप सब परिजनों से कर्ज ले लिया है और समय पर सारा पैसा लौटा भी दिया है । किसी से माँगा नहीं है । गुरुदेव ने हमको हर प्रकार से शिक्षा दी है । उनके पास बैठने से ही उनके विचारों का हम पर पूरा प्रभाव पड़ा है । गुरुदेव अपने कार्यों के द्वारा दूसरों को शिक्षा देते थे ।

एक दिन गुरुदेव के साथ हम गायत्री तपोभूमि आए । यहाँ पर एक छोटा सा कमरा था । यज्ञशाला के पास उसमें गुरुदेव बैठ गए उनके पास हम भी बैठ गए । हम उनके पास बैठकर जो बातें वे दूसरों से करते थे उनको सुनते थे । उनके पास एक व्यक्ति आया और गुरुदेव को नोटों का पुलंदा दिया । गुरुदेव ने कहा-हम इसका क्या करेंगे ? वापस कर दिया । मगर वह व्यक्ति जिद पकड़ गया नहीं यह पैसा आपको लेना ही है । उसने रुपया वापस नहीं लिया । गुरुदेव ने पैसे ले लिए और उससे कहा-हमारे साथ चल । हम भी उनके साथ ही थे । बाजार में जाकर एक दुकान से उन पैसों से कंबल खरीदे और उसको साथ लेकर जहाँ गरीब लोग जाड़े से ठिठुर रहे थे उनमें कंबल वितरित करा दिए । हमने सोचा, गुरुदेव को गरीबों के प्रति कितनी करुणा है । जब भी गुरुदेव किसी दु:खी को देखते थे, उनकी आँखों में आँसू आ जाते थे और उनके पास जो भी सुख साधन थे उसको बाँट देते थे और उनके दु:खों को बँटा लेते थे । ऐसे करुणा के सागर थे गुरुदेव । गुरुदेव जब भी अखबार में पढ़ते थे कि दहेज के कारण लड़की को जला दिया गया तो उनकी

आँखों में आँसू आ जाते थे । दहेज के दानव के प्रति उनका बड़ा रोष था । समाज की कुरीतियों के प्रति उनका बड़ा रोष था । वह बड़े ही क्रांतिकारी थे । गुरुदेव सारे दिन समाज की सेवा करते थे । हमने जीवन में गुरुदेव से बहुत कुछ सीखा है ।

एक बार गुरुदेव अज्ञातवास में जा रहे थे । तब करीब ३०-४० कार्यकर्ताओं को बुलाया था । गायत्री मंदिर के पीछे जहाँ अब कार्यकर्ता रहते हैं वहाँ पर एक हॉल था । अब उसके कमरे बन गए हैं । वहाँ पर गुरुदेव का प्रवचन हुआ था । गुरुदेव अज्ञातवास में चले गए, तब हमको भारी दु:ख हुआ । माता जी ने कहा-उनका कार्य उनको करने दो । मैं तो तुम्हारी माँ हूँ और पास ही हूँ । हमको यही सान्त्वना माता जी ने दी ।

अखंड दीप एवं मिशन का कार्य

हम डबरा चले गए, वहाँ हमको प्रेरणा हुई कि हमको अखन्ड दीप जलाना चाहिए । हमने अपनी धर्म पत्नी से पूछा, उसने कहा-ठीक है हम पूरा सहयोग करेंगे । हमने सुबह अखंड दीपक जलाया सुबह शाम गायत्री मंत्र का जाप उसी के पास बैठकर करते थे । जब डबरा रहते थे तब दोपहर को भी जप करते थे । २४ माला सुबह २४ माला शाम को जप करते थे । दोपहर को रहते तब १० माला करते थे । यह क्रम हमारा करीब दस वर्ष चला । अब हमको मिशन के कार्य से बड़ा ही लगाव हो गया । हम शाम को प्रतिदिन संस्कार आदि कराने निकलते थे, जन्म दिन आदि संस्कार सम्पन्न कराते थे । हमारा नियम था कि एक दिन में कम से कम एक अथवा दो तीन भी संस्कार करा देते थे । हमने एक झोला बना रखा था, उसमें पंचपात्र, गुरुदेव-माता जी, गायत्री माता का चित्र, हवन सामग्री आदि भी हम स्वयं ही ले जाते थे । स्वस्तिवाचन से आशीर्वाद देते थे । जिसके घर संस्कार कराते, उसके अड़ौसी-पड़ौसी बड़े प्रभावित होते थे और सभी अपने बच्चों का जन्म दिन मनवाते थे । इस जन्म दिन संस्कार मनाने से हमारा प्रभाव बहुत बढ़ गया था । जब हम बाजार जाते

सभी उठकर नमस्कार करते थे । सभी लोग बहुत सम्मान करते थे, अतः सम्मान को देखकर हम जितना समय मिलता था संस्कारों में लगाते थे । जो आरती आदि के पैसे आते थे उनसे ज्ञान मंदिर स्थापित कर देते थे । सभी घरों में गुरुदेव के विचार पढ़े जाते थे । अब हमारा नाम संस्कार कराने वाले पंडित जी पड़ गया था । जिधर जाते लोग सम्मान करते और हमको दूध, फल, मिठाई खिलाते थे जिससे हमारा स्वास्थ भी अच्छा हो गया था । संस्कार कराने का हमको चस्का लग गया था ।

डबरा से हम ग्वालियर गोपाल मिल पर आ गए । डबरा का भी कार्य अभी देखते थे और ग्वालियर का भी काम देखते थे । अब अधिकतर हम ग्वालियर रहते थे । अखंड दीपक को भी हम ग्वालियर ले आए थे । वहाँ पर भी हम घर-घर संस्कार कराने जाते थे । हमारा वहाँ के बहन भाइयों के घर बड़ा असर पड़ा था । उस समय ग्वालियर में कोई शाखा नहीं थी । श्री सत्यनारायण पंड्या (डा. प्रणव पंड्या के पिताजी) उस समय वहाँ सिविल जज थे । वे भी गुरुदेव के विचारों से बहुत प्रभावित थे । हमारा इनके पास भी आना जाना था । उस समय जजों को मिलने पर प्रतिबंध था, फिर भी मिशन के कार्य में बड़ी मदद करते थे । डा० अमल कुमार दत्ता (वर्तमान में शांति कुंज के कार्यकर्ता) उस समय ग्वालियर में डाक्टर थे । हम तीनों ही उस समय ग्वालियर में थे । डाक्टर दत्ता के पास मोटर साइकिल थी जिससे कई बार वह हमारे पास आते थे । मिशन का कार्य भी करते थे, हम डबरा थे तब वहाँ भी वे पहुँच जाते थे । डा० दत्ता अपना समय मिशन के कार्य में भी लगाते थे ।

गुरुदेव हमें लेने ग्वालियर पधारे

एक बार गुरुदेव ग्वालियर आए थे । उनका उस समय भव्य स्वागत हुआ था, क्योंकि जिनके घर हमने संस्कार कराए थे, उन सभी बहन भाइयों ने बड़ा स्वागत किया था । उस समय हम एक कुंड का यज्ञ करते थे । गुरुदेव का प्रवचन होता था । अब तो गुरुदेव जब भी समय मिलता हमारे पास अकेले पहुँच जाते थे और गोपाल मिल पर ही हमारे

पास जंगल में तीन चार दिन ठहरते थे । हमको समझाते रहते थे । श्री छोटे लाल गर्ग जे. सी. मिल के इंजीनियर थे, वह मिशन के कार्य से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने एक जमीन कॉलोनी बनाने को ली थी, उसमें से गायत्री माता के मंदिर को जमीन दी थी । उसमें आज गायत्री शक्तिपीठ बना है और कॉलोनी का नाम गायत्री नगर कराया गया था । एक दिन गुरुदेव ने कहा-बेटा हमको अब तेरी आवश्यकता है । तू अब इस भौतिकवाद को छोड़ और हमको बचन दे । हमने कहा-हमारे ऊपर जिम्मेदारी है, जब हमारा स्तीफा स्वीकृत होगा, कार्य समाप्त कर देंगे, तब आपके पास आ जाएँगे । मिलों के कार्य से जब हमारा स्तीफा स्वीकार कर लिया तब हमने कंपू में एक मकान रहने के लिए ले लिया, वहाँ पर ही अखंड दीपक को ले गए । हमारा बड़ा लड़का राम तब पढ़ता था । उसकी पढ़ाई बंद करके रेडियो टीवी की मरम्मत की दुकान खुलवाई । उसने रेडियो टी. वी. का कोर्स किया था । दौलत गंज में एक दुकान किराए पर लेकर उसको खुलवाई और हमने गुरुदेव को पत्र लिखा कि अब हम मथुरा आ रहे हैं । गुरुदेव का पत्र गया कि तुम मत आना हम तुमको लेने आ रहे हैं । तारीख भी पक्की कर दी थी । जब ग्वालियर की शाखा वालों को मालूम हुआ कि गुरुदेव आ रहे हैं उन्होंने ११ कुंड का यज्ञ रख लिया । इसमें भिन्ड, मुरैना, शिवपुरी आदि शाखाओं को निमंत्रण भेजा । बहुत ही अच्छा कार्यक्रम हुआ । गुरुदेव तीन दिन ग्वालियर हमारे पास रहे । तीनों दिन दीपक के पास ही बैठते थे । तीसरे दिन उन्होंने कहा-अब इस दीपक में घी मत डालना । अब इसकी लौ हमने अखंड दीपक, जो हमारे पास जल रहा है उसमें मिला दी है । गुरुदेव हमको साथ लेकर मथुरा आए । ग्वालियर शाखा ने हमारी धूमधाम से विदाई की थी । बड़े लड़के राम को रेडियो टी. वी. की दुकान खुलवा दी । छोटा लड़का सतीश पढ़ता था । मथुरा आए घीया मंडी मकान पर हम बैठे थे । गुरुदेव मूँज की एक पुरानी खाट थी उस पर लेटे

हुए थे । हमने गुरुदेव से कहा-हम तो पढ़े लिखे भी न के बराबर हैं । बचपन में माता पिता का स्वर्गवास हो गया था । अपने आप थोड़ा पढ़ गए हैं । गुरुदेव ने हँस कर कहा-कबीर कहाँ पढ़ा था । हमने कहा-हमको पहले कुछ तप करना पड़ेगा या क्या करना पड़ेगा ? गुरुदेव ने कहा-तुमको कुछ नहीं करना है । तू तो मेरा काम कर शरीर मन बुद्धि सब हमारे विचारों को फैलाने में लगा दे । जो फंड का पैसा है, हमने गुरुदेव को दे दिया था । गुरुदेव ने वह पैसा वंदनीया माता जी को दे दिया । माता जी ने पैसे को लेकर हमसे कहा-बेटा यह पैसा किसका है ? हमने कहा-माता जी आपका है । माता जी ने कहा-मैं जो चाहूँ इसका उपयोग कर सकती हूँ । हमने कहा-माता जी आप जिसको चाहें दे सकती हैं, परंतु हमारे दोनों लड़कों राम और सतीश को देने से मना कर दिया । इस पर गुरुदेव हँस गए और कहा-अब रख लो । हमने मना कर दिया था कि पैसे की बावत किसी से कहना नहीं है । फिर भी गुरुदेव ने युग निर्माण योजना पत्रिका में लेख लिख दिया कि इसके पास जो कुछ धन है वह हमको दे दिया है और हमको कह दिया कि इसको किसी को बताना मत । हम गायत्री तपोभूमि में रहने लगे । वहाँ पर आकर हम बहुत बीमार हो गए, दस्त उल्टी बुखार था । माता जी आती थीं, हमारे कपड़े साफ करती थीं, चाय बनाती थीं। किसी किसी दिन माता जी को दो बार गायत्री तपोभूमि हमारी देख रेख करने आना पड़ता था । हमको बड़ा दु:ख होता था कि यहाँ पर हम सेवा करने आए हैं और माता जी से अपनी सेवा करा रहे हैं । हमारा वजन भी भारी था । इतनी उल्टी दस्त आती थी कि लगता था हमारे प्राण ही निकल जाएँगे । अधमरे हो गए थे, चला भी नहीं जाता था । गुरुदेव हमारी धुलाई सफाई करते थे । हमने कहा-गुरुदेव हमको ग्वालियर राम के पास भेज दो । हम जब ठीक हो जाएँगे तब आ जाएँगे । एक दिन महेश सक्सैना (स्व० माया वर्मा के पति) ग्वालियर से वहाँ आए थे, उनके साथ हम ग्वालियर चले गए । वहाँ पर

तब तक राम की दुकान ठीक नहीं चलती थी । जब हम गए तब हमारा दवाई का खर्चा बढ़ गया, तब राम ने अखबार में विज्ञापन निकाला कि जिस किसी का रेडियो टी. वी. खराब हो गया हो, उसके घर पर ही आकर ठीक करेंगे । इस प्रकार वह हमारा खर्चा चलाता था । हमारे दामाद खुर्जा में डाक्टर थे । राम ने उनको पत्र लिख दिया कि पिताजी की तबियत बहुत खराब है आप शीघ्र चले आओ । हमारे दामाद तथा लड़की खुर्जा से ग्वालियर आ गए और वहाँ हमको देखकर बहुत नाराज हुए और बोले इनको कोई ठीक नहीं कर सकता । जब इनके पास मिलों पर सारे सुख के साधन थे तो फिर गायत्री तपोभूमि जाने की क्या जरूरत थी, वहाँ कोई साधन भी नहीं हैं । फिर वह दवाई लाए, इंजक्शन लाए, हमारा इलाज किया । १०-१५ दिन हमारे पास रहे, हमारा स्वास्थ ठीक हो गया, भोजन भी करने लगे । उस समय गुरुदेव का पत्र राम के पास पहुँचा कि बेटा तूने बहुत कष्ट उठाया है, अब तुम्हारे पिताजी का स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा चिन्ता नहीं करना । हम धीरे-धीरे ठीक होते गए । ठीक होने पर हम फिर मथुरा आ गए । गुरुदेव ने कहा-बेटा रंगाई के पहले धुलाई की जाती है, तभी कपड़े पर रंग चढ़ता है । अब तुम्हारे शरीर की धुलाई सफाई गायत्री माता ने कर दी है, अब तुमको शरीर हल्का मालूम पड़ता होगा । हमने कहा-हाँ गुरुदेव पहले से अब हमारा शरीर बहुत ठीक है । हल्कापन महसूस कर रहे हैं । बाद में गुरुदेव ने बहुत से प्राकृतिक उपचार सिखाये थे, जिनको हमने अपनाया और स्वस्थ रहने लगे ।

गायत्री तपोभूमि में शिविर प्रारम्भ हुए

गुरुदेव ने वहाँ शिविर लगाने प्रारंभ किए । उनकी देख-रेख हम करते थे । उस समय शिविर में २०-२५ परिजन ही आते थे । हम सुबह उनको ४ बजे उठाकर यमुना स्नान कराने ले जाते थे । एक मशाल बनाकर रखी थी, उसको जलाकर आगे-आगे हम चलते थे, पीछे-पीछे शिविर वाले भाई । यमुना नदी के किनारे पर ही शौच करने जाते और

स्नान करके वापस आते थे । तपोभूमि में मीठा पानी नहीं था, एक खारी कुआ था, पास में चामुंडा का मंदिर है, उसके पास कुएँ से पानी लाते थे । एक-एक पतीला सबको दे दिया था, उसको भर कर लाते थे । वही पानी शाम तक चलता था । जमीन पर ही सारे शिविरार्थी सोते थे । वंदनीया माता जी सुबह ही आ जाती थी, सब शिविरार्थियों से मिलती थी । अगर कोई बीमार होता था, उसको चाय बनवाकर पिलाती थी । खिचड़ी बनाकर ले आती थी । यहाँ तक कि बीमारों के कपड़े तक धोकर सुखा देती थी ।

एक दिन ऐसा हुआ, भिन्ड से हृदयस्थ जी शिविर में आए, उनको एक दिन ऐसा बुखार चढ़ा कि होश ही नहीं रहा । उन्होंने अपने कपड़े भी गंदे कर दिए, माता जी आईं उनको साफ किया और सारे कपड़े धोकर सुखाए । जब हम हृदयस्थजी से मिले तो वह एक दम रो पड़े । हमने कहा-बतलाओ क्या कष्ट है ? हम आपकी सेवा करेंगे, दुःखी क्यों होते हो ? उन्होंने कहा-आज माता जी आई थीं, बुखार इतना चढ़ गया था कि हमने अपने कपड़े भी खराब कर दिए । माता जी ने हमको तथा कपड़ों को साफ किया । हमको बड़ा पाप लग गया । सुबह माता जी आई हमने उनसे कहा-हृदयस्थ जी बहुत दुःखी हैं । कह रहे हैं माता जी ने हमको साफ किया हमको पाप लग गया है । माता जी ने कहा-बेटा माँ अपने बच्चे के कपड़े साफ करती है कि नहीं । उन्होंने कहा-जैसे मेरा बच्चा मृत्युंजय है, वैसे ही तुम सब मेरे ही बच्चे हो । मेरा कर्त्तव्य है, अगर कोई लड़का बीमार पड़े तो उसकी सेवा करूँ। मेरे द्वारा सेवा करने से पाप कैसे लग जाएगा । जैसे एक माँ अपने बच्चे की देख रेख करती है माता जी सभी शिविरार्थियों की देख-रेख करती थीं ।

शिविर जब समाप्त होता था, तब दो दिन की छुट्टी रहती थी । गर्मी के दिन थे, हम तथा सभी शिविरार्थी अखंड ज्योति संस्थान भोजन करने जाते थे । माता जी ही वहाँ भोजन बनाती थी और सबको भोजन कराती

थीं । जैसे माँ अपने बच्चे को खिलाती है । वहाँ सभी पैदल जाते और पैदल आते थे । गर्मी का दिन था, शिविर उस दिन था नहीं, हम गर्मी के कारण भोजन करने अखंड ज्योति नहीं गए । गर्मी की दोपहरी में माता जी हमको तपोभूमि टिफिन में भोजन लाईं । जब माता जो आई तब हमने कहा–माता जी आपको बड़ा कष्ट दिया । हम थोड़ा आलस कर गए उसके कारण आपको आना पड़ा । माता जी ने कहा–बेटा मैं भोजन करने बैठने वाली थी कि तेरी याद आ गई और जब तूने भोजन नहीं किया, तब मैं कैसे भोजन करती । माता जी का इतना स्नेह हम पर था । सभी को ऐसे समझाती थी कि मेरा ही बेटा है और जितने भी भाई यहाँ शिविर में आते थे, समझते थे कि हमने इसी माँ के पेट से जन्म लिया है । ऐसी थीं माता जी, जो विश्व माता बन गई । उन्होंने सबको अपने स्नेह से बाँध रखा था । प्रत्येक माँ की ऐसी ही भावना हो, तब हमारा देश कितना ऊँचा उठ सकता है । आज की माँ जो पेट से बच्चा जन्म लेता है, उसी को अपना बेटा मानती है, दूसरे को नहीं । माता जी ने कर्म के द्वारा सबको शिक्षा दी थी, उनका स्नेह तो सबको मिलता था । आज तक हम ही नहीं सारे मिशन के भाई बहिन उनकी याद करते हैं । ऐसी माँ को पाकर हम अपने को धन्य ही मानते हैं ।

स्वादेन्द्रिय पर नियंत्रण का प्रशिक्षण

गायत्री तपोभूमि में चलने वाले साधना सत्रों में प्रातःकाल पंचगव्य का सेवन कराया जाता था । इसमें गाय का दूध, दही, घृत, गौ मूत्र और गोबर का रस रहता है । कल्प साधना चंद्रायण व्रत इत्यादि साधनाओं द्वारा आत्म शक्ति जगाते थे । पंच गव्य सेवन करने का अभ्यास शिविरार्थियों को नहीं होने से उसे पीने में कतराते थे । परन्तु गुरुदेव का दिव्य प्रसाद भला कौन ग्रहण नहीं करेगा । फिर पूज्य गुरुदेव की आज्ञा का तो पालन होना ही था । शिविरार्थियों से मिलकर एक दिन जीभ का स्वाद बनाने के लिए एक योजना बना डाली जिसकी खबर पूज्य गुरुदेव को नहीं लगने

दी । हमने एक ठंडाई बनाने वाले को बुलाया, उस समय २५ पैसे गिलास ठंडाई मिलती थी । हमने यह काम हर दिन के लिए उसे सौंप दिया । सब लोगों का जीभ का स्वाद बदला, सबने हमारी प्रशंसा की, कुछ दिन यह क्रम चोरी छिपे चलता रहा । एक दिन तो रहस्य खुल ही गया । कहीं से गुरुदेव को पता चल गया कि यहाँ ठंडाई मँगा कर पीते हैं, तो उनको भारी गुस्सा आया और मुझ पर गुस्सा उतारना प्रारंभ कर दिया । वंदनीया माता जी ने उन्हें संभाला अन्यथा उनके पास डंडा होता तो मेरी पिटाई होनी निश्चित ही लग रही थी । वंदनीया माता जी ने कहा–इस बच्चे की क्या गलती है । ठंडाई ही तो पिलाई, कोई जहर तो नहीं पिलाया । परम पूज्य गुरुदेव ने कहा–हमने २४ वर्ष तक जीभ को साधा है केवल जौ की रोटी और छाछ पर इतना लंबा समय बिताया है । साधना कोई हँसी खेल नहीं । इंद्रियों को काबू में लाने के लिए कितनी तितीक्षा की आवश्यकता होती है । यह छोटा सा त्याग तुम लोग नहीं कर पाओगे तो साधना सफल कैसे होगी ? स्वास्थ्य और साधना दोनों को पाने के लिए नमक और चीनी का त्याग करना ही अच्छा है । कई दिनों तक गुरुदेव मुझे इस गलती का अहसास कराते रहे । हमारा अनगढ़ मन गुरुसत्ता के सान्निध्य में सुगढ़ बनता रहा ।

गुरुदेव और माता जी मिलकर कार्य करते

माता जी शिविर में गुरुदेव के प्रवचन से पहले एक संगीत देती थीं और फिर अखंड ज्योति जाकर सभी शिवरार्थियों को भोजन बनाकर अपने हाथ से खिलाती थीं । भोजन खिलाने के बाद बर्तन माता जी गुरुदेव दोनों मिलकर साफ करते थे और इसके बाद माता जी पत्रों को खोलती थीं और पत्रों को पढ़कर गुरुदेव को सुनाती जाती थीं और गुरुदेव उन पत्रों के उत्तर लिखते रहते थे । शाम के समय में सभी डाक जो बाहर जाती थी, उस पर माता जी टिकिट लगाती थी । शाम को फिर भोजन बनाती थीं, इस तरह माता जी कर्त्तव्य को ही धर्म मानती थीं । माता जी

जैसी उदार थीं, आज तक हमने किसी को नहीं देखा है । जिन भाई बहिनों को माता जी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला है, सभी को मालूम है, माता जी से जो भी मिलता था, उससे कितना स्नेह करती थीं । हम अपने को बड़ा ही सौभाग्यशाली मानते हैं । मथुरा तीन वर्ष तक हम उनके सानिध्य में रहे और तीन वर्ष तक उनके हाथ का ही भोजन करते रहे । जब वे हरिद्वार चली गईं, वहाँ पर जब भी हम जाते थे, माता जी के हाथ का ही भोजन करते थे । उनके जीवन चरित्र से प्रत्येक माता को शिक्षा लेनी चाहिए और अपने कर्त्तव्य का पालन करना, धर्म मानना चाहिए । माता जी सारे दिन अपने कर्त्तव्य को पूरा करती थीं ।

युग निर्माण विद्यालय का शुभारंभ

एक बार गुरुदेव ने हमसे कहा-अब हमारा मन है कि एक विद्यालय खोलें, उसमें लड़कों को बुलाया जाय । मनुष्य शरीर-आत्मा दो चीजों से बना है । शरीर के लिए मकान, भोजन, धन चाहिए । इसके लिए उसमें लघु-कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था हो । जो भी लड़का विद्यालय से जाएगा, अपना पेट अच्छी तरह भर सकेगा । आज जो बेरोजगारी फैली है, उस समस्या का हल होगा । आत्मा के लिए नैतिक शिक्षा द्वारा सद्गुणों की वृद्धि कराएँगे । लड़कों को सदाचारी, सेवा भावी, कर्मनिष्ठ बनने की शिक्षा देंगे । प्रत्येक लड़का जो इस विद्यालय से जाएगा, चरित्रवान होगा । गुरुदेव ने कहा-हमारा विद्यालय भारत का एक ही विद्यालय होगा । गुरुदेव ने कहा-जितने विद्यालय देश में हैं, सब में शिक्षा दी जाती है, शिक्षा से आदमी डाक्टर, इंजीनियर आदि बन सकता है, गुणों की वृद्धि नहीं हो सकती । हम विद्यालय में शिक्षा के साथ विद्या का समन्वय करेंगे । हमने कहा-गुरुदेव विद्या किसे कहते हैं ? गुरुदेव ने कहा-सद्गुणों की वृद्धि को ही विद्या कहते हैं । शिक्षा शरीर का पोषण करती है । विद्या आत्मा का पोषण करती है । आज प्रत्येक व्यक्ति शरीर के पोषण में , शरीर को संवारने, शरीर की रक्षा के

ही काम करता रहता है । उसको आत्मा का ध्यान ही नहीं है । विद्या आत्मा को बल देती है । हमने कहा-गुरुदेव ऐसा विद्यालय तो भारत में एक भी नहीं है ।

गुरुदेव ने पत्रिका में विद्यालय के संबंध में एक लेख लिखा था और पहले सत्र में १५-१६ विद्यार्थी ही आए थे । प्रेस, रेडियो, लघु उद्योगों को सिखाने वाले आचार्य रखे थे और नैतिक शिक्षा की कक्षा स्वयं गुरुदेव लेते थे । उस समय भोजनालय की व्यवस्था भी नहीं थी, सभी विद्यार्थी अपना भोजन स्वयं बनाते थे ।

गुरुदेव ने कुत्ते की गंदगी साफ की

एक दिन ऐसा हुआ विद्यालय के नीचे ही कुछ कमरे बने थे, उनमें लड़के रहते थे । वहाँ पर एक कुत्ता गंदगी कर गया, लड़कों ने हमको बुलाया और सब लड़के चिल्लाकर कहने लगे-श्रीमानजी कुत्ता गंदगी कर गया । हम में से किसी ने भी सफाई नहीं की, सोचने लगे कि सफाई वाली को कहीं से बुलाया जाए तब कहीं कुत्ते की गंदगी साफ होगी । अभी हम सब उसकी सफाई की योजना बना ही रहे थे, इतने में गुरुदेव आ गए । जब गुरुदेव को हम सबने देखा तो बच्चे चिल्लाने लगे- गुरुदेव कुत्ता गंदगी कर गया है । हमने गुरुदेव से कहा-इसकी सफाई कराने की व्यवस्था बना रहे हैं । गुरुदेव आगे बढ़े, वहीं पास में निर्माण कार्य चल रहा था, वहाँ पर एक फावड़ा पड़ा था । गुरुदेव ने उस फावड़े को लेकर गंदगी की सफाई कर दी । हम सभी चुपचाप यह तमाशा देख रहे थे, बाद में बड़ी शर्मिंदगी हुई ।

शिविर में केशवानंद जी का आगमन

तपोभूमि में शिविर चल रहे थे । एक शिविर में राजस्थान के स्वामी केशवानंद जी आए वह गुरुदेव से बातें करते तब हम भी गुरुदेव के पास बैठ जाते थे । वैसे जब भी गुरुदेव किसी से भी बात करते थे, तब हम उनके पास बैठकर उनकी बातें अवश्य सुनते थे । स्वामी केशवानंद जी महाराज गुरुदेव से कह रहे थे, हम घर परिवार छोड़कर सन्यास लेकर

हिमालय पर चले गए और हिमालय पर हम दस वर्ष तक साधना करते रहे, परंतु हमको शांति नहीं मिली, बल्कि और अशांति बढ़ती चली गई । हमने सोचा कि हमने बेकार घर परिवार छोड़ा, साधना करने से जो लाभ होना था, वह लाभ हमको नहीं हुआ । स्वामी जी ने गुरुदेव से कहा-हम हिमालय से वापस चले आए । वहाँ पर हमने सोचा, राजस्थान में शिक्षा की बड़ी कमी है । हम घर-घर जाते और प्रत्येक से एक मुट्ठी अनाज माँग कर लाते और जो अनाज इकट्ठा होता उसको बेचकर एक मास्टर को हमने रखा । बिल्डिंग थी नहीं हमने गाँव के लड़कों को बुलाया और एक पेड़ के नीचे उनको पढ़वाना शुरू कर दिया । इसके बाद स्कूल के लिए मकान का भी प्रबंध हो गया । इस प्रकार स्वामी जी ने कहा-हमने राजस्थान में कई विद्यालय खोल दिए । जब बच्चों की शिक्षा प्रारंभ हो गई तब सभी भाई बहिन हमारी मदद करने लगे । स्वामी जी ने कहा कि हमने संगरिया क्षेत्र राजस्थान में आज कई कालेज श्रम करके खुलवा दिए हैं । स्वामी जी ने कहा कि लोक सभा के चुनाव जब हुए तो वहाँ के सभी भाई बहिनों ने कहा कि स्वामी जी आप लोक सभा के चुनाव के लिए खड़े हो जाओ । हमने मना कर दिया कि हम इस झंझट में क्यों पड़ें । वहाँ के सारे क्षेत्रों ने मीटिंग करके तय किया कि स्वामी जी ने हमारी कितनी सेवा की है । हमारे यहाँ शिक्षा का नामोनिशान भी नहीं था । स्वामी जी ने हमारे बच्चों को शिक्षित किया । सबने मीटिंग करके तय किया कि स्वामी जी के खिलाफ कोई भी व्यक्ति खड़ा नहीं होगा । स्वामी जी को निर्विरोध लोक सभा का सदस्य चुना गया । स्वामी जी लोक सभा के १० वर्ष तक निर्विरोध सदस्य रहे । फिर स्वामी जी ने मना कर दिया और शिक्षा क्षेत्र की जो सेवा कर रहे थे, उसी में लग गए । स्वामी जी गुरुदेव को सुना रहे थे, हम सुन रहे थे । जब स्वामी जी हमको अकेले मिले तब हमने स्वामी जी से कहा-आप स्वयं स्वामी जी हो यहाँ शिविर करने आप क्यों आए हैं ? स्वामी जी ने कहा-हम सिर्फ

कर्मयोगी हैं और कर्म के द्वारा हमने राजस्थान में इतना कार्य किया है । हम यहाँ आचार्य जी के पास ज्ञान योग और भक्तियोग सीखने आए हैं । हम सिर्फ कर्मयोगी हैं, लेकिन आचार्य जी कर्मयोगी, ज्ञानयोगी, भक्तियोगी तीनों ही हैं । आचार्य जी ने तीनों योगों को अपने जीवन में पूर्णरूपेण धारण कर रखा है । हम जब से यहाँ आए और हमने इनकी पुस्तकों को पढ़ा है इनसे हमारे ज्ञान में बड़ी वृद्धि हुई है । हमने सन्यास धारण किया है और आचार्य जी गृहस्थ में रहकर भी सन्यासी हैं । पूर्ण त्याग को सन्यास कहते हैं, यह हमने आचार्य जी से सीखा है । हमने सिर्फ कपड़े रंग लिए हैं, उनके तीनों शरीर-स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीनों योगों से पूर्ण हैं । यहाँ आने पर हमारा ज्ञान बहुत बढ़ा है । तुम लोग यहाँ रहते हो लेकिन आचार्य जी को नहीं जानते । हम जानते हैं कि आचार्य जी पूर्ण हैं । हम जहाँ भी रहते हैं इनको नित्य प्रति प्रणाम करते हैं । स्वामी केशवानंद जी की ऐसी बात सुनकर हमारी आँखें खुल गईं । हमने सोचा हम धन्य हैं जो गुरुदेव के साथ रहते हैं ।

शिविरों में कथा प्रशिक्षण

शिविरों में गुरुदेव सत्यनारायण कथा का दर्शन बताया करते थे । रामायण के दर्शन पर प्रकाश डालते थे । उस समय गुरुदेव जो प्रवचन करते थे, हम नोट करते थे । इन कथाओं में गुरुदेव ने बताया है कि सत्यनारायण कथा, गीता कथा, रामायण से हमें क्या शिक्षा मिलती है । इनमें शिक्षण भरा पड़ा है । अगर घरों में इन कथाओं को पढ़ा जाय और बच्चों को कथा सुनाई जाय, तब हमारे बच्चे संस्कारवान बन सकते हैं । हवन पद्धति हमको लिखवाई, संस्कार लिखवाए । उस समय हम नोट करते थे । जैसे गुरुदेव संस्कार कराते थे, उसकी पुस्तक भी हमने लिखी है, उसको संस्कार करवाने वालों को पढ़नी चाहिए ।

भुसावल का गायत्री यज्ञ

एक दिन गुरुदेव तपोभूमि आए और हमसे कहा कि बेटा ! तुमको भुसावल जाना है, वहाँ पर दूसरे पंडित यज्ञ कर रहे हैं । वहाँ पर हमारी शाखा नहीं है । सिर्फ एक आदमी है, सरदार सिंह । उसने उस यज्ञ में कुछ बोलने के लिए समय ले लिया है, तुम चले जाओ । हमने कहा कि गुरुदेव भुसावल कहाँ है ? वहाँ पर हम किसी को जानते भी नहीं हैं । फिर दूसरे लोगों का यज्ञ है । अपने परिवार का भी नहीं है और वहाँ पर सिर्फ एक ही आदमी मिशन का है । ऐसी जगह पर हम जाकर क्या बोलेंगे ? गुरुदेव ने कहा-कि बेटा हमने तुमसे कई बार कहा है कि तू हमारा काम कर । जैसा हम कहें वैसा कर । अपना शरीर मन बुद्धि हमारे काम में लगाता रह, हम तेरे साथ हैं । गुरुदेव की आज्ञा से हम भुसावल जाने को तैयार हो गए । गुरुदेव ने कहा-कि स्टेशन पर गाड़ी ठहरे तब देखना जिसके हाथ में पीला झंडा हो उसी से बात करना । हम भुसावल पहुँच गए । तब पीले झंडे को देखकर हमने बात की । उसने कहा-हमारा नाम ही सरदार सिंह है । वह हमको अपने बंगले पर ले आया। वहाँ पर हमने स्नान किया, भोजन किया, विश्राम किया । दूसरे भाइयों का एक कुंड का यज्ञ था । पंडित लोग यज्ञ करा रहे थे । शाम को सरदार सिंह ने कहा-पंडित जी चलो प्रवचन में चलना है । हम उनके साथ चल दिए । वहाँ जाकर जहाँ जनता बैठी थी, वहीं पीछे हम तथा सरदार सिंह बैठ गए । सभी पंडितों के, विद्वानों के प्रवचन हुए, हम सुन रहे थे । जब सबके प्रवचन हो गए तब मंच पर माइक से एक भाई बोला, गायत्री परिवार के कोई आए हों तो मंच पर आ जाएँ । दस मिनट उनको बोलने को दिए जाते हैं । हम सबसे पीछे बैठे थे । हम तथा सरदार सिंह भी, दोनों मंच पर गए । हमने गुरुदेव को याद किया, गायत्री मंत्र बोला, हमने गुरुदेव का प्रवचन रामायण का सुना था, उसको ही रास्ते में याद करते गए । हम वहाँ पर रामायण पर बोले, जैसे ही दस मिनट हुए, हमने

प्रवचन बंद कर दिया और कहा-हमको जो समय दिया था वो पूरा हो गया । हमने बोलना बंद कर दिया । उस प्रवचन में सभी प्रबुद्ध भाई बहन थे, जनता ने आवाज उठाई इन पंडित जी का प्रवचन बंद नहीं होगा । स्टेज संचालकों ने कहा-कल प्रवचन करा देंगे । सारी जनता ने कहा-प्रवचन अभी होगा पैसा हम लोगों ने दिया है । सारी जनता की आवाज आने लगी । मंच संचालकों ने हमसे कहा-पंडित जी आप प्रवचन चालू रखें । हमने कहा कि इस प्रवचन को पूरा करने में काफी देरी लग सकती है । लोगों ने कहा कि चाहे कितनी भी देर लगे आप अपना प्रवचन पूरा करें । रामायण पर ऐसा प्रवचन हुआ कि सारी जनता ने कहा कि आज तक हमने रामायण पर ऐसा प्रवचन सुना ही नहीं है । रामायण का जो पारिवारिक शिक्षण था, वह सारा प्रवचन में था । जनता ने खूब सराहना की ।

अब सारी जनता हमारे चारों ओर मंच पर आ गई और हमसे कहा कि पंडित जी क्या आप यज्ञ करा सकते हैं ? हमने कहा कि हम तो पंडित हैं यज्ञ कराना तो हमारा धर्म ही है । सारी जनता ने आवाज उठाई कि कल यह पंडित जी ही यज्ञ कराएँगे । पंडितों ने विरोध किया कि अगर मथुरा वाले पंडित जी ने यज्ञ कराया तो हम यज्ञ कुंड में कूदकर अपनी जान दे देंगे, परंतु सारी जनता ने कहा-नहीं आप कौन होते हैं अगर तुम सबने हमारा कहना नहीं माना और यज्ञ का विरोध किया, तब हम यहाँ के सारे पंडितों को किसी कार्य में नहीं बुलाएंगे और इनमें से किसी से भी संबंध नहीं रखेंगे । पंडितों को भी मानना पड़ा और उन्होंने कहा-सुबह गायत्री वाले पंडित जी ही यज्ञ कराएँगे । हमने मंच से कहा कि सभी बहन भाई सुबह स्नान करके यज्ञ करने आएँ । सभी भाई अचम्भे में पड़ गए कि यहाँ तो हमेशा पंडित ही यज्ञ करते हैं और यह गायत्री वाले पंडित जी सबसे यज्ञ करने को कह रहे हैं । सुबह सभी भाई बहिन स्नान करके यज्ञशाला में आ गए । सभी आफिसर थे, धोती किसी ने भी नहीं पहन रखी थी सभी पेन्ट पहने हुए थे । एक बार हमने सोचा

धोती पहनाकर यज्ञ कराएँ परन्तु थोड़ी देर में विचार आया कि इतनी धोतियाँ कहाँ से आएँगी और ये भाई धोती पहनना भी नहीं जानते होंगे । हमने सभी भाइयों को पैन्ट सहित बिठाकर यज्ञ करवाया । सभी बहन भाइयों ने यज्ञ किया । तब सभी बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि यज्ञ इसी प्रकार होना चाहिए । हवन पद्धति को बड़े रोचक ढंग से गुरुदेव ने लिखा है । गायत्री माता की प्रार्थना और यज्ञ भगवान की प्रार्थना जब सब बहन भाई बोल रहे थे, सबकी आँखों में आँसू थे । इसलिए सबने एक-एक हवन पद्धति पुस्तक खरीदी, क्योंकि गुरुदेव ने सरदार सिंह को लिखा था कि साहित्य अवश्य मँगाना और वहाँ पर साहित्य का स्टाल लगाना, अगर प्रवचन नहीं होता है तब भी हर्ज नहीं है, हमारे विचार तो फैलेंगे । दूसरे दिन जितना साहित्य था, सब बिक गया । रात को हमारा प्रवचन होने वाला था, परन्तु वहाँ की यज्ञ कमेटी ने रामायण पर बोलने वाली एक लड़की बुलाई थी, उसको मंच पर बिठा दिया । उसका प्रवचन होने वाला था , परन्तु जनता ने हल्ला मचाया कि गायत्री वाले पंडित जी का ही प्रवचन होगा । हमने गायत्री मंत्र बोलकर गुरुदेव को याद किया । दूसरे दिन का प्रवचन गीता पर था । गुरुदेव ने जो प्रवचन तपोभूमि में गीता पर दिया था, उसको ही हमने कई बार पढ़ा था । गीता के प्रवचन से वहाँ के लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा कि लोग कहने लगे, ऐसा विद्वान हमने आज तक नहीं देखा । ऐसा प्रवचन भी नहीं सुना और आज तक ऐसा यज्ञ कराने वाले कोई पंडित जी भी नहीं आए, ज़िन्होंने सब बहन भाइयों को यज्ञ कराया हो । प्रवचन समाप्त होते ही मंच पर इतनी भीड़ हमारे दर्शनों को इकट्ठी हो गई कि मुश्किल से लोग हमको उस भीड़ से निकाल कर ले गए । एक दिन पंडित यज्ञ करा चुके थे दूसरे दिन हमने कराया और फिर तीसरे दिन पूर्णाहुति में इतनी भीड़ थी कि वहाँ उस भीड़ को संभालना मुश्किल हो गया । सबसे एक-एक बुराई छुड़वाई, बीड़ी, सिगरेट, शराब, माँसाहार, व्यभिचार बहुत लोगों ने छोड़ा

और एक-एक अच्छाई ग्रहण कराई । इसका प्रभाव वहाँ की जनता पर अच्छा पड़ा । पूर्णाहुति हो गई तब हमने पंडितों से कहा कि अब पूर्णाहुति हो गई, अब जो चाहे यज्ञ कुंड में कूद सकता है । सब पंडित शर्मिंदा हो गए । आदित्य कुमार सिंह जो आजकल भुसावल की शक्तिपीठ संभालते हैं और मिशन के कार्य में रात दिन लगे रहते हैं, उसी कार्यक्रम के बाद से मिशन में आए । उसी समय वहाँ शाखा का गठन हुआ । हमको वापस मथुरा आना पड़ा । सारे बहन भाई हमको विदा करने स्टेशन पर आए और इतना बड़ा स्वागत हमारा हुआ कि जिस डिब्बे में हम बैठे थे, उसको भी फूलों से सजाया गया । सभी रेलवे के अधिकारी थे, एक डिब्बे में छोटा सा कम्पार्टमेन्ट होता है, उसमें बिठाया गया और उस डिब्बे में कोई भी व्यक्ति नहीं बिठाया गया । गार्ड और ड्राइवर से कहा कि इन पंडित जी के लिए चाय नाश्ता भोजन की सारी व्यवस्था आपको करते जाना है । हम जिस स्टेशन पर जाते वहाँ के रेलवे अधिकारी आते हमारा स्वागत करते । जब गार्ड और ड्राइवर बदलते तब दूसरे गार्ड और ड्राइवर से कह देते कि इनका पूरा-पूरा ध्यान रखना है । मथुरा तक हमारी देख रेख करते आए और मथुरा स्टेशन पर हमारा सामान लेकर जहाँ पर रिक्शा खड़े थे, वहाँ पहुँचाकर हमको रिक्शे में बिठा कर गए ।

हम रास्ते भर यही विचार करते आए कि संत ज्ञानेश्वर ने भैंसा से वेद मंत्र कैसे बुलवा दिए थे । यह बात हमारी समझ में नहीं आती थी, परंतु अब समझ में आ गई कि जब हम जैसे कम बुद्धि वाले को गुरुदेव ने अपनी शक्ति से ऐसा महान बना दिया तो अवश्य ही भैंसा से वेद मंत्र बुलवा दिए होंगे । भुसावल की सारी जनता ने हमारा स्वागत विद्वान पंडित के रूप में किया । अब हमारी समझ में आ गया कि गुरुदेव के अन्दर वह शक्ति है कि वे लघु को महान बना सकते हैं । हमने सोचा कि हमको ऐसा गुरु मिला जिन्होंने हमारा अज्ञान दूर कर दिया, हम बड़े ही

भाग्यशाली हैं । हमको गुरुदेव ने जब हम उनके पास पहुँचे तब एक ही बात बतलाई थी, कि बेटा तू मेरा काम कर बाकी सब मैं देख लूँगा और तुमको ऐसा लगेगा कि हम और वंदनीया माता जी हमेशा तेरे साथ हैं । जो जरा भी तेरी तरफ गलत दृष्टि से देखेगा, हम उसकी आँख निकाल लेंगे । आज तक हमको ऐसा नहीं लगता है कि हम अकेले हैं। हमारे आगे पीछे हमारे गुरुदेव रहते हैं । हमारा मालिक हमारी हर प्रकार से रक्षा करता है । इससे हमारा भय मिट गया । जिसके साथ कोतवाल हो उसको चोरों का भय क्यों रहेगा ? अब हमको ऐसा ही लगता है कि हम अकेले नहीं हैं, हमारे साथ हमारे गुरुदेव वंदनीया माता जी हमेशा रहते हैं । तभी इतने बड़े कार्य कर लेते हैं । प्रत्येक बहन भाई के लिए यह रास्ता खुला है । प्रत्येक बहन भाई विद्वान बन सकता है । गुरुदेव व्यक्ति नहीं शक्ति थे । कम से कम दो घन्टे का समय उनके विचारों को फैलाने में लगाएँ । गायत्री माने ऊँचे विचार और यज्ञ माने ऊँचे कर्म, ये अपने जीवन में धारण करने चाहिए । गुरुदेव के यही गायत्री और यज्ञ है । अकेले यज्ञ करने से काम नहीं चलेगा । यज्ञीय जीवन जीना चाहिए । यज्ञ तो प्रतीक हैं । इस कार्यक्रम से हमारी हिम्मत बढ़ गई ।

सारंगी का पंच कुंडीय यज्ञ

एक बार गुरुदेव ने हमसे कहा कि बेटा पेटलाद की तरफ कुछ कार्यकर्ता हैं उन्होंने सारंगी में एक पाँच कुंड का यज्ञ रखा है, तू चला जा । हमने कहा–गुरुदेव सारंगी कहाँ है ? कैसे जाएँगे ? उन्होंने तपोभूमि में जो भी कार्यकर्ता थे, उनको बुलाकर पूछा तब हमको बतलाया कि यहाँ से तुमको रतलाम जाना है । वहाँ से आगे बामनियाँ स्टेशन आएगा उस पर उतर जाना । बामनिया स्टेशन पर गाड़ी नौ बजे पहुँचती है वहाँ पर बस खड़ी मिलेगी, वह तुमको सारंगी पहुँचा देगी वहाँ से तीन चार घंटे का बस का रास्ता है । हम टिकिट लेकर ट्रेन से रवाना हो गए । सुबह करीब आठ बजे बामनिया स्टेशन पर पहुँचे वहाँ उतर गए ।

बामनियाँ स्टेशन जंगल में था, वहाँ पर पानी भी नहीं था । गर्मी के दिन थे, स्टेशन से उतर कर हम बाहर गए । हमने पूछा कि यहाँ से बस सारंगी को जाती है क्या ? वहाँ के एक भाई ने बतलाया कि सुबह को कोई बस नहीं जाती है, शाम को एक बस जाती है । तब तक कोई सवारी सारंगी नहीं जाती है । तुमको शाम के चार बजे तक बामनिया स्टेशन पर ही ठहरना पड़ेगा । हम स्टेशन पर आकर बैठ गए, हमने सोचा, आज हम फँस गए, यहाँ पानी भी पीने को नहीं है । गर्मी के दिन हैं, हमारे पास कोई पानी का बर्तन भी नहीं है । हम बड़े परेशान थे । करीब ग्यारह बजे स्टेशन मास्टर अपने क्वार्टर पर गए, हम भी उनके पीछे-पीछे चल दिए, जब स्टेशन मास्टर क्वार्टर पर पहुँचे, हम भी वहाँ पर पहुँच गए । हमने कहा-बाबूजी हमको प्यास लगी है, थोड़ा पानी पिला दें, आपकी बड़ी कृपा होगी । उन्होंने हमारी तरफ देखा और भीतर से ही एक लोटा पानी लाकर पिला दिया और हमसे पूछा, भोजन कर लिया होगा । हमने कहा-यहाँ पानी भी नहीं मिलता, तब भोजन भी कहाँ मिलेगा । यहाँ पर कोई दुकान भी नहीं है । भोजन कहाँ से करें । हमको सारंगी जाना है, परन्तु बस शाम को मिलती है । तब तक स्टेशन पर ठहरेंगे । अगर आप एक बाल्टी पानी की व्यवस्था हमको करा दें तब आपकी बड़ी कृपा होगी । उनको हम पर दया आ गई और उन्होंने कहा-आओ भीतर क्वार्टर में आ जाओ, हमारे साथ भोजन करो और हमारे क्वार्टर में ही विश्राम करना । पानी क्या जिस भी चीज की आवश्यकता हो हम व्यवस्था बना देंगे, तुम चिंता नहीं करो । उन्होंने हमको भोजन कराया, पानी पिलाया और अपने क्वार्टर में एक चारपाई पर विश्राम करने को कहा । बस चार बजे आएगी तब उससे सारंगी चले जाना । हमने मन ही मन गुरुदेव को धन्यवाद दिया कि गुरुदेव ! आपने इस घोर जंगल में हमारी सारी व्यवस्था बना दी, इससे हमारा आत्मबल बढ़ा । हमने समझा इस यज्ञ में भी हमारी परीक्षा है । शाम को चार बजे बस आई । हम स्टेशन मास्टर के पास गए

और उनको प्रणाम किया उनकी पत्नी को प्रणाम किया और उनसे कहा कि आपकी हमारे ऊपर बड़ी कृपा रही कि हमें आपने अपने घर में आश्रय दिया । कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ा । स्टेशन मास्टर ने कहा कि यह तो हमारा कर्त्तव्य है । इसमें हमने तुम्हारे साथ क्या एहसान किया है ? उसने कहा-आप जब सारंगी से लौटकर आएँ तब हमसे मिलकर जाना । किसी बात का कष्ट मत पाना । हमने सोचा ऐसा व्यक्ति मानव नहीं देवता है । बस रात के करीब साढ़े सात बजे सारंगी पहुँची हमारे साथ बिस्तर था, एक टीन का बक्सा था । हम उसको लेकर बस में से उतर गए । हमने वहाँ पर एक भाई से पूछा, यज्ञशाला किधर है जहाँ पर गायत्री यज्ञ हो रहा है । उसने कहा-आप कहाँ से आए हो ? हमने कहा-मथुरा से यज्ञ में आए हैं । उसने कहा-तुम यहाँ पर यज्ञ की बात किसी से मत करना । हमसे करली सो ठीक है । हमने कहा-क्या बात है ? हम यज्ञ की बात क्यों नहीं करें ? उसने कहा-यहाँ पर इक्यावन पंडित रतलाम से आए हैं और उन्होंने पेटलाद की शाखा और आस पास के जो भाई यज्ञ कराने आए थे उनको पीट-पीट कर भगा दिया है और यज्ञ रुकवा दिया है । इंक्यावन पंडित ही यज्ञ करा रहे हैं । दिन में यज्ञ और रात को रामलीला होती है । तुम यहाँ से किसी बस से वापस चले जाओ, इसी में तुम्हारी भलाई है तुम नए हो, इसीलिए हमने सारी बात तुमको बतला दी है और यह कह कर वह चला गया । हमने सोचा रात किसके यहाँ निकालें । हम अकेले खड़े थे, इतने में एक सज्जन आए, वह बोले, आप किसके यहाँ आए हैं, बोली से भले आदमी लगते हो । हमने कहा-हम आपके ही यहाँ आए हैं । उसने कहा-हम आपको जानते भी नहीं हैं । हमारे यहाँ कैसे आए हो । हमने कहा-हम आपके ही यहाँ आए हैं । वह यह सुनकर चलने लगे । बिस्तर बक्सा लेकर हम भी उसके पीछे-पीछे चल दिए । थोड़ी दूर चलने पर फिर उसने पूछा आप सच बताइए कहाँ जा रहे हैं ? हमने कहा कि हम आपको सच-सच बतलाते

हैं । आपके साथ ही चल रहे हैं । वह थोड़ी देर ठहरा और हमसे कहा-जब आप हमारे यहाँ ही चल रहे हैं, तब बक्सा हमको दे दो । हमने बक्सा उनको दे दिया और बिस्तर लेकर उसके पीछे-पीछे चल दिए, उसके घर पहुँचे । वह गरीब व्यक्ति था, मकान के आगे एक फूस का छप्पर था, उसमें एक खाट थी । उस पर हमको बिठा दिया । उसका कच्चा मकान था । वह भीतर मकान में गया, पानी लाया । हमने पानी पिया । भोजन बन गया तब उसने कहा-चलो भोजन कर लो । हम भोजन करने उसके साथ गए, मक्का की रोटी और जंगली सब्जी बनाई थी । भोजन कर रहे थे, इतने में उसने कहा-महाराज गाय का दूध है, आप कहें तो थोड़ा ले आएँ । हमने कहा-दूध तो ले आओ । वह एक कटोरा गाय का दूध ले आया और कहा कि हमारे पास गुड़ है आप चाहें तो दूध में थोड़ा गुड़ डाल दें । हमने कहा-गुड़ तो स्वास्थ्य के लिए अच्छा है थोड़ा गुड़ ले आओ । वह गुड़ लाया, हमने गुड़ को दूध में मिलाया और उसमें मक्का की रोटी मसल कर डाली । दूध और मक्का की रोटी हमने खाई । ऐसा स्वाद आया जो छत्तीस व्यंजनों में भी नहीं आता है । भोजन करके हम बाहर छप्पर में खाट पर लेट गए, वह भी भोजन करके आया, उसने हमसे कहा-महाराज हमारे यहाँ यज्ञ हो रहा है जिसमें ५१ पंडित रतलाम के हैं । वह यज्ञ करते हैं । गायत्री परिवार वालों का यज्ञ था, परंतु उन पंडितों ने कब्जा कर लिया है । वह पंडित ही यज्ञ करते हैं, वही मंत्र बोलकर आहुति देते हैं । मन ही मन मंत्र बोलते हैं । इसी बात पर झगड़ा था कि गायत्री मंत्र मन ही मन में बोलना चाहिए । उसने हमसे कहा-चलो रात को रामलीला होती है । रामलीला देखने तुम हमारे साथ चलो । हमने कहा-हम अवश्य चलेंगे । रास्ते में बातें करते जाते थे । उसने कहा-आप तो मथुरा के पंडित जी हो । प्रवचन करना भी जानते होंगे । हमने कहा-हाँ हम प्रवचन करते ही हैं । बातें करते चले गए जहाँ रामलीला हो रही थी वहाँ पर पहुँचे, राम लीला जब तक

आरंभ नहीं हुई थी । रामलीला के प्रबंधक से उस व्यक्ति ने बात की और हमारे बारे में बताया तथा हमारे प्रवचन के लिए थोड़ा समय उनसे ले लिया । रामलीला आरंभ हुई थोड़ी देर बाद हमको मंच पर बुलाया गया, जहाँ पर राम लक्ष्मण सीता माता बैठे थे । हमने जाकर उनको साष्टांग प्रणाम किया । पास में ही हमारे बैठने के लिए कुर्सी डाली गई थी, उस पर हमको बैठना था । हमने कहा-हम मंच पर नीचे बैठकर प्रवचन देंगे । भगवान राम के सामने कुर्सी पर हम नहीं बैठेंगे । जब हमने यह कहा-तब भगवान राम ने कहा कि नहीं आप कुर्सी पर बैठकर ही प्रवचन करें । हमने कहा-जब भगवान राम ही कहते हैं तब हमको कुर्सी पर बैठना ही चाहिए और कुर्सी पर बैठकर हमने गायत्री मंत्र बोला और गुरुदेव को याद करके रामायण पर ही प्रवचन देना शुरू कर दिया । हमने प्रवचन में यही कहा-भगवान राम के जीवन चरित्र से हमको शिक्षा लेनी चाहिए और जो रामलीला देखते हैं उसके शिक्षण को अपने जीवन में उतारना चाहिए तभी रामलीला देखने का लाभ मिलेगा । हमने रामायण के शिक्षण पर जो गुरुदेव से सीखा था, उसी को बोलते रहे । आधा घंटा हमारा पूरा हो गया । हमने अपना प्रवचन वहीं बन्द कर दिया । हमने कहा-हमको आधा घंटा का समय दिया गया है वह पूरा हो गया । इस पर वहाँ की जनता चिल्लाई-नहीं पंडित जी का प्रवचन आज होगा । हमने कहा-अभी इस प्रवचन में एक घंटा और लगेगा । तब भी जनता ने कहा-एक घंटा क्या दो घंटे भी लगें तब भी हमें कोई हर्ज नहीं है । हमने प्रवचन पुनः प्रारंभ किया । माता पिता का क्या कर्त्तव्य है, भाई-भाई का क्या कर्त्तव्य है । सास बहू का , समाज का क्या कर्त्तव्य है । जो अपने कर्त्तव्यों को पूरा करता है, वही धार्मिक है । भजन-पूजन रामायण देखने वालों को आज कर्त्तव्य नहीं दीखता । जो रामायण के शिक्षण को अपने जीवन में धारण करता है वही अध्यात्म का लाभ उठाता है । भगवान राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न चारों भाइयों के समयानुसार सारे संस्कार

संपन्न हुए थे । आप भाइयों को भी बच्चों के संस्कार कराने चाहिए । बच्चे तभी संस्कारवान बनेंगे । रामायण का पूरा शिक्षण बतलाया और कहा-भगवान राम के जीवन चरित्र को अपने जीवन चरित्र में धारण करना चाहिए तभी रामलीला देखना सार्थक होगा । वहाँ की जनता रामायण के उद्देश्य को समझकर बहुत प्रसन्न हुई ।

अब हमने पंडितों के बारे में कहना प्रारंभ किया कि आप भाई बहन नहीं जानते । हम पंडित हैं और पंडितों की सारी बातों को जानते हैं । हम पंडित गायत्री मंत्र जोर-जोर से इसलिए नहीं बोलते कि जितने पंडित यज्ञ में बैठते हैं वे गायत्री मंत्र जानते ही नहीं हैं । आप ही बताएँ १०-११ पंडित यज्ञ में बैठते हैं, सब मन ही मन मंत्र बोलते हैं, एक साथ सभी का मंत्र कैसे समाप्त हो जाता है ? आप सब भाई बहन मन ही मन गायत्री मंत्र बोलकर देखें किसी का पीछे किसी का आगे रहेगा । फिर एक साथ स्वाहा की आवाज कैसे बोलते हैं ? यह गलत है और इसका एक कारण यह है कि सारे पंडित गायत्री मंत्र बोलना नहीं जानते हैं । अपने नातेदार रिश्तेदारों को परिवार वालों को ले आते हैं, उन्हीं को यहाँ बैठाते हैं और उन्हीं से वेद पाठ कराते हैं । आप देखते हैं उनके सामने वेद की पुस्तक खुली रहती है और जो भी आता है उससे कहते हैं आज नाश्ता ठीक बनवाना । आज हलुवा बनना चाहिए । भोजन पर ही उनका ध्यान रहता है । आप चाहें तो अभी जितने पंडित यज्ञ तथा वेद पाठ कराते हैं हमारे सामने उनसे गायत्री मंत्र बुलवाएँ, सारे पंडित नहीं बोल सकते हैं । वेद पाठ करने वाला कोई भी पंडित वेद पाठी नहीं है । भोजन करने वाले, दान दक्षिणा लेने वाले पंडित हैं, अपना उल्लू सीधा करने के लिए भोली जनता को वह बहकाते हैं । आप अभी हमारे सामने जो ५१ पंडित रतलाम से आए हैं उनको बुलाएँ और हमारी बात सही नहीं हो तो हमको जो सजा चाहें दे सकते हैं । लड़कों को यह बात बहुत पसंद आई । आज के लड़के गप्प सुनना ही नहीं चाहते हैं । भगवान राम

ने यह किया, कृष्ण ने यह किया, वह चाहता है कि हमको क्या करना है ? हमने जब पंडितों को बुलाने को कहा-तब सबको समझ में आ गया और सबने एक स्वर में कहा-पंडितों को बुलाओ और उनसे गायत्री मंत्र सबके सामने बुलवाएँगे । जब पंडितों ने सुना, तब बात सच्ची थी उनमें से आधे पंडित ही गायत्री मंत्र जानते थे । जब पंडितों ने सुना तब वह वहाँ से रात में ही भाग लिए । लड़कों ने पंडितों को तलाश किया मगर पंडित नहीं मिले । अब लड़कों ने वहाँ आकर कहा-पंडित तो नहीं हैं । वह यह सुनकर कि गायत्री मंत्र बोलना पड़ेगा भाग गए । अब वहाँ की जनता ने हमसे कहा-पंडित जी पंडित तो हमारे भाग गए । आप का प्रवचन सुनकर हम पर बड़ा ही प्रभाव पड़ा है । क्या आप यज्ञ करा सकते हैं ? हमने कहा-क्यों नहीं हम पंडित हैं और यज्ञ कराना तो पंडितों का कर्त्तव्य है । सारी जनता ने हमसे कहा-कल सुबह यज्ञ कराना है । हमने कहा-कल सुबह आप गाँव वाले सभी भाई बहिन स्नान करके, कपड़े बदल कर आएँ । आप सभी भाइयों से यज्ञ कराया जाएगा । सारी जनता ने कहा-पंडित जी क्या हम यज्ञ कर सकते हैं ? हमने कहा-क्यों नहीं कर सकते हैं । यज्ञ करने का सबको अधिकार है । सुबह सारी जनता स्नान करके आई । हमने यज्ञ कराया सबको यज्ञ पर बिठलाया । जब हमारी यज्ञ पद्धति लोगों ने सुनी तो भारी प्रसन्नता हुई । सबने कहा-यज्ञ हो तो ऐसा होना चाहिए । पंडित लोग हमको भ्रम में रखते हैं । लड़कों ने यज्ञ किया तो उनको भी भारी प्रसन्नता हुई । लड़कों ने इकट्ठा होकर कहा-उन पंडितों को तलाश करो और उनसे यह मंत्र बुलवाएँ अगर वे मंत्र नहीं बोल सकेंगे तब उनको मार लगानी चाहिए । गाँव में एक-एक घर लड़कों ने देखा, लेकिन पंडित लोग नहीं मिले । अब वहाँ के भाइयों ने हमारी बड़ी ही अच्छी आवभगत की, बहुत अच्छी जगह हमको ठहराया । हमारे भोजन आदि का सारा प्रबन्ध बहुत अच्छा किया और अब हमारे आगे-पीछे गाँव के लोग घूमने लगे ।

शाम को तीन बजे हमने सभी लोगों की, बच्चों की तथा लड़कों की भी गोष्ठी ली । वहाँ पर शाखा संगठित की । गाँव वाले बड़े प्रसन्न हुए और कहा-आज समाज को ऐसे पंडितों की आवश्यकता है । शाम को प्रवचन हुआ । उसका वहाँ की जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा, इधर पंडित भूखे प्यासे जंगल में घूम रहे थे । रात को हमको अकेला देख कर एक पंडित आया । उसने कहा-हम लोगों के पास पैसा भी नहीं है, कम से कम हमको किराया दिलवा दो तो आपकी बड़ी कृपा होगी । हम अपने घर पहुँच जाएँगे । हमने कहा-भविष्य में कहीं भी गायत्री यज्ञ हो तो ऐसा व्यवहार मत करना जैसा आपने सारंगी में गायत्री परिवार वालों से किया है । उन्होंने माफी माँगी, हमने वहाँ के लड़कों को बुलाया । उनसे कहा-भाई ये पंडित हैं, इनसे भूल हो गई है माफी माँग रहे हैं आपके सामने भी माफी माँग लेंगे । अब इनको माफ करो । इनको रतलाम तक का किराया दे दो । पंडितों को किराया दिलवाया । तब रतलाम वापस पहुँचे । उन पंडितों को अच्छा सबक मिल गया । हमने कहा-सुबह पूर्णाहुति में सभी बहन भाइयों को आना है और सबको दक्षिणा देनी है । दक्षिणा में हमको पैसा धन नहीं चाहिए । आप बहन भाइयों को एक-एक बुराई छोड़नी है और एक-एक अच्छाई ग्रहण करनी है । जितनी बुराइयाँ आप छोड़ेंगे हम अपने गुरु को बतलाएँगे कि सारंगी वालों ने इतनी बुराइयाँ छोड़ीं, इतनी दक्षिणा दी तब वह बहुत प्रसन्न होंगे । आप सब सोच कर आएँ । सुबह पूर्णाहुति हुई सभी गाँव वालों ने बताये अनुसार दक्षिणा दी । गुरुदेव हमको बतलाते रहते थे कि बेटा यज्ञ में दक्षिणा बुराइयों की लेनी चाहिए, धन की नहीं । इसीलिए हमने बुराइयों को छुड़वाया । सारे दिन सारे गाँव वालों से मिला, गाँव में कोई बीमार था, उसके घर गए उसको देखा । सबसे उनके परिवार वालों के विषय में पूछा । सबने कहा-हमको ऐसा लगता है पंडित जी कि हम लोगों का आपसे कितने जन्मों का संबंध है । हमारा बिदाई का समय आया । सारे गाँव के भाई, बहन,

लड़के इकट्ठे हो गए और हमको फूल मालाओं से लाद दिया । मना करने पर भी ग्यारह सौ रुपए विदाई दी। जब हम विदा हो रहे थे, सारा गाँव रो रहा था । जो लड़के राम, लक्ष्मण, भरत आदि बने थे वह भी थे । ऐसा लग रहा था जैसे भगवान राम अयोध्या से वनवास जा रहे हों । हमारी भी आँखों से आँसू आ गए । जब हमने वहाँ की जनता से प्रेम किया तब वहाँ की जनता ने भी हमसे प्रेम किया । वापस स्टेशन पर आना था । हमारे साथ दो बस भर कर आईं जिसमें भाई बहन वामनियाँ स्टेशन तक हमको पहुँचाने आए । जब हम वामनियाँ स्टेशन पर आए, तब हम स्टेशन मास्टर से मिले और साथ आए सभी भाई बहिनों को बतलाया कि यह स्टेशन मास्टर नहीं हैं यह तो संत हैं, ऋषि हैं । इनकी हमारे ऊपर बड़ी कृपा रही वरना हम तो जंगल में भूखे प्यासे ही मर जाते । सब भाइयों ने स्टेशन मास्टर के चरण छुए और मालायें पहनाईं । स्टेशन मास्टर ने कहा–यह क्या हो रहा है ? हमने कहा–यह आपकी सज्जनता का फल है । आपने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। आपसे हमारी कोई जान पहचान नहीं थी । आपने हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया जैसे हम आप दोनों ने एक ही माँ के पेट से जन्म लिया हो । हमको गाड़ी में बिठा दिया गया। रास्ते में विचार करते आए कि हमको गुरुदेव ने क्या बना दिया ? हमने गुरुदेव का सहारा पकड़ा तो अपना जैसा बना दिया । भगवान राम को कृष्ण को बनाने वाले उनके गुरु थे । हमको भी बनाने वाले हमारे गुरु थे । गुरुदेव के सहारे से हम क्या बन गए ? गुरु की शक्ति की सभी धर्मशास्त्रों में महिमा गाई गई है। गुरु चाहे तो चींटी से हाथी और राई से पहाड़ बना सकता है । गुरु के कार्य में अपना मन शरीर बुद्धि जो कुछ है सब लगाएँ और गुरु की सारी शक्ति के अधिकारी बनें । गिव एन्ड टेक–दो और लो का सिद्धाँत चलता है। कोरे यज्ञ और फूल माला से काम नहीं चलेगा । गुरु का सहारा पकड़ कर कोई भी व्यक्ति हमारे जैसा ऊँचा उठ सकता है । बेल जब पेड़ का सहारा लेती है तो कितनी ऊँची

उठ जाती है ? कठपुतली जब हाथ का सहारा लेती तब कैसा तमाशा दिखाती है । पतंग उँगली का सहारा लेकर आसमान में उड़ती है । गुरु का सहारा लेकर गुरु जैसा बना जा सकता है, लेकिन उसकी एक ही शर्त है और वह है सच्चा समर्पण। अपना शरीर, बुद्धि, मन, धन जो कुछ भी अपने पास है सब गुरु के कार्य में लगाना पड़ता है ।

हम जब तपोभूमि आए, तब गुरुदेव को तथा माता जी को सारी बातें बतलाईं । गुरुदेव ने कहा-निर्भय होकर हमारा काम कर, मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा । तुम्हारी वाणी से ही बोलूंगा । हम हमेशा यही सोचते हैं कि गुरुदेव हमारे साथ हैं । हम अकेले नहीं हैं, गुरुदेव तथा वंदनीया माता जी हमारे साथ हैं । हमेशा हम उनका ही स्मरण करते रहते हैं। चिन्तन से चरित्र और चरित्र से व्यवहार बदलता है । हमारा चिन्तन हमेशा गुरुदेव माता जी के चरण कमलों में ही रहता है । गुरुदेव हमसे हमेशा एक ही बात कहते थे कि ऊँचे विचार जब भी आवें समझना चाहिए कि हम गायत्री मंत्र का जाप कर रहे हैं और जब ऊँचे कर्म करें तब समझना चाहिए कि हम यज्ञ कर रहे हैं । ऊँचे विचार और ऊँचे कर्म ही गायत्री और यज्ञ हैं । स्थूल गायत्री और यज्ञ तो प्रतीक मात्र हैं । मुख्य उद्देश्य तो हमारा विचारों को बदलने का है । जब तक विचार नहीं बदलेंगे तब तक समस्याओं का हल नहीं हो सकता है ।

सेठ जी का मानसिक उपचार सद्विचारों से

एक दिन हम गायत्री तपोभूमि में थे । गुरुदेव सुबह ही अखण्ड ज्योति से आ गए। थोड़ी देर बाद एक सेठ को लेकर उसके परिवार के लोग गुरुदेव के पास आए । सेठ जी की आँखें लाल थी और उनकी शक्ल पागलों जैसी थी । वे आगरा के रहने वाले थे । परिवार वालों ने कहा-गुरुदेव हमने सुना है कि आप गायत्री के भक्त हैं और आप जिसको भी आशीर्वाद दे देते हैं उसको फलित होता है । ये सेठ जी हमारे पिताजी हैं । इनको एक हफ्ते से नींद नहीं आई है और भोजन पानी सब छोड़

रखा है। पागलों जैसे हो गए हैं । आप आशीर्वाद दे दें ताकि ये ठीक हो जाएँ । गुरुदेव सेठ जी को वहाँ एक कमरा था उसमें ले गए । हम भी उनके साथ चले गए । वहाँ आकर गुरुदेव बैठ गए और पास में सेठ जी को बिठाया । वहाँ हम भी पास में जाकर खड़े हो गए । गुरुदेव ने सेठ जी से कहा–बेटा! तुमको क्या तकलीफ है ? बतला मैं तेरा दुःख दूर कर दूँगा, परन्तु सेठ जी बोले ही नहीं । चुप बैठे रहे । गुरुदेव उसको बार-बार पुचकारते रहे । बेटा ! मुझे बता मैं तेरा सारा कष्ट दूर कर दूँगा, परन्तु सेठजी बोले ही नहीं । करीब आधे घंटे गुरुदेव उसको पुचकारते रहे और यही कहते रहे बतला बेटा तुझे क्या कष्ट है ? मुसीबत में मैं कुछ उपाय बताऊँगा । आधा घन्टे बाद सेठ जी ने कहा–गुरुदेव मैं बड़ी मुसीबत में फँस गया हूँ । गुरुदेव ने कहा– मुझे बतला बेटा क्या मुसीबत है ? मैं उसका उपाय बतला दूँगा । सेठ जी ने कहा–गुरुदेव हमारे यहाँ एक मुनीम था, उसको हमने निकाल दिया । उस मुनीम ने पुलिस में हमारे खिलाफ शिकायत की है और पुलिस हमारे सारे बही खाते ले गई है । सेठ जी ने कहा–गुरुदेव हमें दस लाख रुपये जुर्माना हो सकता है । गुरुदेव ने कहा–बेटा यह सुनकर तेरा क्या मेरा भी दिमाग चक्कर खा रहा है । इससे तो तुम्हारा दिमाग खराब होना ही चाहिए था । गुरुदेव ने कहा–चल बेटा अखन्ड ज्योति संस्थान चलें और सेठजी को गुरुदेव अपने साथ ले गए । उसके परिवार के लोग हमारे पास तपोभूमि में ही थे । शाम को भी गुरुदेव तपोभूमि आते थे । शाम को करीब चार पाँच बजे गुरुदेव तपोभूमि आए, परन्तु उनके साथ सेठ जी नहीं थे । उनके घर वालों ने हमसे पूछा–गुरुदेव हमारे पिताजी को साथ नहीं लाए हैं कहाँ छोड़कर आ गए । बेचारे बड़ी चिन्ता में थे । हमसे कई बार जब उन्होंने कहा तब हमने गुरुदेव से पूछा गुरुदेव सेठ जी कहाँ हैं ? उनके घर वाले पूछ रहे हैं । बड़े परेशान हैं । गुरुदेव ने कहा–बेटा वह एक हफ्ते से सोए नहीं थे । वे सो रहे हैं उनको सोता छोड़कर आए हैं । हमने

उनके घरवालों को बतला दिया । गुरुदेव शाम को अखण्डज्योति चले गए । उनके परिवार वाले हमारे पास तपोभूमि में ही ठहरे रहे । सुबह गुरुदेव तथा सेठ जी अखण्ड ज्योति से वापस आए । तपोभूमि में घुसते ही सेठ जी व गुरुदेव बड़े जोर से हँस रहे थे । हम तथा उनके परिवार वाले देख रहे थे । हम सोच रहे थे कि कल तक जिस व्यक्ति को नींद, हँसी कुछ भी नहीं आ रही थी वह आज कितना प्रसन्न है । गुरुदेव ने इसे किस प्रकार ठीक कर दिया ? थोड़ी देर यहाँ पर ठहरने के बाद सेठ जी अपने परिवार वालों के साथ आगरा चले गए । हम जब गुरुदेव अकेले बैठे थे उनके पास बैठ गए और कहा-गुरुदेव आपने सेठजी को आशीर्वाद देकर दस लाख का फायदा करा दिया है तभी सेठ जी इतने प्रसन्न थे । हमको उस समय तपोभूमि में पैसे की जरूरत थी । हमने गुरुदेव से कहा-गुरुदेव हमको भी आशीर्वाद दें क्योंकि तपोभूमि में बहुत से कार्य धन के अभाव में अधूरे पड़े हैं । गुरुदेव हँस गए और कहा-बेटा हमने उसको कुछ भी नहीं दिया है । इसके दिमाग का स्क्रू ढीला हो गया था, हमने उसको ठीक कर दिया है । हमने कहा-गुरुदेव हमारे दिमाग का स्क्रू भी ढीला है । उसको भी आप ठीक कर दें जैसे आपने सेठ का ठीक कर दिया है । गुरुदेव ने कहा-बेटा तू हमारे पास कमरे में बैठा था । वहाँ तूने सारी बातें सुनी ही हैं । हमने कहा-हां गुरुदेव दस लाख रुपया तक बात हमने सुनी है । गुरुदेव ने कहा-हम उसको अपने साथ अखन्ड ज्योति ले गए, वहाँ पर हमने उसको अपने पास बिठा लिया । हमने एक कागज और पैंन अपने हाथ में ले लिया । हमने उससे पूछा आपके कितने बच्चे हैं कितनी बहुएँ हैं कितने नाती नातिन हैं । क्या-क्या काम करते हैं । सेठ जी हमको बतलाते रहे । हमारे चार लड़के हैं । सब अपनी-अपनी दुकानें संभालते हैं सबका व्यापार अच्छा चलता है । परिवार में सभी सुखी हैं । हमने कहा-मकान कितने हैं दुकान कितनी हैं ? उनकी कीमत क्या है । जेबर कितना है, बैंक बैलैन्स कितना है, उनकी

कीमत क्या है ? सारी बातें पूछते गए । सेठ जी सबका उत्तर देते गए । जब हमने उसके मकान की कीमत जो उसने बतलाई दुकानों का धन, नकद बैलेन्स, जेवर जितने बतलाए थे उसका टोटल लगाया तो वह ९० लाख रुपये का बैठा । सेठजी ने कहा गुरुदेव इतना तो है । हमने कहा-बेटा इसमें से मान लो दस लाख रुपया जुर्माना हो भी गया तब अस्सी लाख रुपया बचता है । गुरुदेव ने कहा-बेटा अस्सी लाख से तो सारा काम बन जाएगा । सेठ ने कहा-हाँ गुरुदेव । फिर आपने अपना दिमाग खराब क्यों किया जिससे हमारा दिमाग भी खराब हो गया । हमने कहा-हम गायत्री माता से प्रार्थना करेंगे । इस पर सेठ जी विचार करने और मुस्कराने लगे । हमने उनसे कहा-बेटा बात कितनी छोटी सी थी । चल दोनों भोजन करें । दोनों ने साथ-साथ भोजन किया और उसको विश्राम करने को कहा वह सोने लगा और हम तपोभूमि चले आए । बस हमने उसका विचार करने का तरीका बदल दिया और उसका सारा कष्ट दूर हो गया और यहाँ से प्रसन्न होकर आगरा चला गया । बेटा हमने विचार करने का तरीका उसका बदला है और कुछ नहीं किया है ।

कुछ समय बाद सेठ जी मथुरा तपोभूमि आए उस समय गुरुदेव तपोभूमि में ही थे और सेठजी बहुत ही प्रसन्न थे । गुरुदेव के चरण स्पर्श किए । गुरुदेव ने कहा-बता बेटा तेरे मुकदमे का क्या हुआ । सेठ जी ने कहा-गुरुदेव यहाँ से हमारे विचार आपने सही कर दिए थे । हम आगरा पहुँचे वहाँ पर पुलिस वालों से मिले और गुरुदेव पुलिस वालों को कुछ पैसा देना भी पड़ा । हमारा सारा काम हो गया । दो नम्बर के कागजात भी हमारे वापस कर दिए और मुकदमा खारिज हो गया । फिर हमने अपना व्यापार करना शुरू कर दिया और गुरुदेव इस वर्ष हमको दो लाख रुपये का नफा हुआ है । हम गायत्री माता को कुछ जेबर तथा मंदिर के ऊपर सोने का कलश चढ़ाएँगे । कलश मंदिर पर लगाया, गायत्री माता को जो सामान था वह पहनवाया । यह देखकर हमने सोचा विचारों के

अन्दर बड़ी शक्ति होती है। विचार आदमी को गिरा सकते हैं और विचार ही आदमी को उठा सकते हैं। आदमी कुछ नहीं है विचारों का बना हुआ है। गुरुदेव ने कहा-बेटा विचारों से आदमी-देवता-ऋषि महात्मा ही नहीं परमात्मा बन जाता है और विचारों से ही आदमी डाकू लुटेरा बन जाता है। तभी हमने विचार क्रांति अभियान चलाया। छोटी-छोटी बातों को लोग इतनी बड़ी कर देते हैं कि वह समस्या हो जाती है। देखो सेठ की बात छोटी सी थी और गलत विचार करके अपने को पागल बना लिया। अगर हम उसको विचार नहीं देते तो वह मर जाता और उसका सारा व्यापार ही नष्ट हो जाता। विचारों की सफाई के लिए ही हमने सारा साहित्य लिखा है। जो भी साहित्य हमने लिखा है इससे प्रत्येक व्यक्ति की समस्याओं का हल हो सकता है। जो व्यक्ति हमारे विचारों को पढ़ेगा उसके घर में स्वर्ग बना रहेगा। आदमी को व्यस्त रहना चाहिए और मस्त रहना चाहिए। बेटा हम विचारों से एक नया संसार बनाना चाहते हैं। बस तुझे एक ही काम करना है मेरे विचारों को घर-घर पहुँचाना ही मेरी सच्ची सेवा है। तुझे देखना नहीं पढ़ना है। जो दिखावे में पड़ता है उसमें समझदारी नहीं है। वह अपने अहंकार की पूर्ति मात्र करता है।

उसी दिन से हमने निश्चय किया, कितनी ही मुसीबत आएँ। चाहे हमारा पाँच ही व्यक्ति साथ दें हमको गुरुदेव के विचारों को ही घर-घर पहुँचाना है। तभी से हम गुरुदेव के विचारों को फैलाने में लगे हुए हैं। दिन-रात उनके विचारों को फैलाने में ही हमारा चिन्तन लगा रहता है। गुरुदेव ने कहा-अगर समस्याओं को हल करना है तो हमारे विचारों से ही समस्याओं का हल होगा। चाहे आज करलो चाहे सौ वर्ष के बाद। गायत्री माने ऊँचे विचार, यज्ञ माने परोपकार। जब तक व्यक्ति निकृष्ट विचार वाला और स्वार्थी रहेगा तब तक समस्याओं का हल हो ही नहीं सकता है। शंकराचार्य अगर अपनी माँ का कहना मानते तो एक पंडित या प्रतिष्ठित कथा वाचक ही बनकर रह जाते, वे शंकराचार्य नहीं बन

सकते थे । उनके विचारों ने उनको शंकराचार्य ही नहीं शिव का अवतार बना दिया । विवेकानंद नौकरी करते तो वे केवल बड़े बाबू बन सकते थे, वे धर्म गुरु नहीं बन सकते थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति का प्रचार विदेशों में जाकर किया । गुरु नानकदेव अगर व्यापार करते तो दो चार दुकानों के मालिक बन सकते थे, महान नहीं बन सकते थे, सिक्खों के गुरु नहीं बन सकते थे । गाँधी वकालत करते तब दो चार लाख रुपया ही कमा सकते थे, परन्तु महात्मा गाँधी नहीं बन सकते थे । बेटा विचारों के अन्दर बड़ी शक्ति है । जो भी मेरे विचारों को पढ़ेगा उसको लाभ अवश्य होगा । जो कोरा पूजा पाठ, भोग, फूल माला, यज्ञ आदि तक ही सीमित रह जाता है वह हमेशा खाली हाथ ही रहेगा । मैं चाहता हूँ मेरे बच्चे यज्ञ तक ही सीमित न रहें वे यज्ञीय जीवन जीएँ। जो थोड़ा भी समय मेरे विचारों को फैलाने में लगाएगा उसको मेरा आशीर्वाद अवश्य मिलेगा । मैं तथा वंदनीया माता जी हमेशा तेरे साथ रहेंगे । तू निर्भय होकर मेरे कार्य में लगा रह । जैसे सेठ जी का दु:ख दूर हो गया और देख उसको कितना लाभ मिला, इसी प्रकार सबको मिलेगा ।

कटैना हर्षा का पंच कुंडीय यज्ञ

एक दिन गुरुदेव सुबह तपोभूमि में आए, वंदनीया माता जी साथ थीं, गुरुदेव ने कहा-बेटा इधर शिविरों का कार्य तो माता जी देखती रहेंगीं तुमको कटैना हर्षा जाना है, वहाँ पर बेटी श्रीदेवी अकेली है, परंतु मिशन के कार्य में बड़ी रुचि रखती है । उसने पाच कुंड का यज्ञ रखा है तू चला जा । हमने कहा-गुरुदेव कटैना हर्षा कहाँ है और श्रीदेवी को हम जानते भी नहीं हैं । गुरुदेव ने कहा-यहाँ से बस में शिकोहाबाद चला जा बस वहाँ से करीब दस बारह मील दूर है । तुझे जाना ही है । हमने कहा-गुरुदेव चले जाएँगे, हमको अब चिन्ता नहीं है । आप हमेशा हमारे साथ हैं । हम शिकोहाबाद के लिए बस में बैठ गए वहाँ पहुँचे तब हमने वहाँ लोगों से पूछा कटैना हर्षा कहाँ है क्या आप हमको वहाँ पहुँचा दोगे ?

उन्होंने कहा–हम पहुँचा देंगे । बीस रुपए देने पड़ेंगे । हमने कहा–बीस रुपए तो बहुत ज्यादा हैं । उस समय बीस रुपए की बड़ी कीमत थी । हमने कहा–हम इतने पैसे नहीं दे सकते । एक आदमी और वहाँ खड़ा था । उससे पूछा कटैना हर्षा कहाँ है । उसने कहा–नहर जो जा रही है उसके किनारे–किनारे पहुँच जाओ । हमने बगल में बिस्तर दबाया और एक टीन की पेटी थी उसे हाथ में लेकर चल दिए । रिक्शे वाला पहले १० रुपए बाद में ५ रुपए माँगने लगा । हमने कहा–अब पैदल ही चलना है और बिस्तर कंधा पर रखकर पेटी हाथ में लेकर नहर के किनारे चलते–चलते पहुँच गए । वहाँ हमने गाँववालों से पूछा–श्रीदेवी का मकान कहाँ है ? उन्होंने बताया गाँव से बाहर उनकी जमीन है वहाँ एक मंदिर बनवा रखा है वहीं पर मकान भी बना लिया है । इशारे से बतलाया वहाँ चले जाओ । हम बिस्तर बगल में लिए हुए हाथ में पेटी लेकर श्रीदेवी के पास पहुँचे । हमने गुरुदेव का पत्र श्रीदेवी को दिया । श्रीदेवी ने हमारा बिस्तर व बक्सा जो बैठक थी उसमें रखवा दिया । हमें खाट थी उस पर बिठा दिया । वह हमारे पास जमीन पर बैठ गई और कहने लगी भाई साहब यह ठाकुरों का गाँव है । हमने यहाँ यज्ञ करने का निश्चय किया, परंतु यहाँ पर सभी यज्ञ का विरोध करने लगे और हमसे मना कर दिया कि तुम लड़की हो यज्ञ का काम तो पंडितों का है । सारा गाँव विरोध कर रहा है । इसलिए अब हम यहाँ यज्ञ कैसे करेंगे ? हमने कहा–बहन जी पहले हमको स्नान करना है इसकी व्यवस्था करो । उसने हमको एक बाल्टी–लोटा दिया और पास ही कुआँ था, बोली–जाकर स्नान कर आओ । हमने कहा–बहन जी भोजन भी बनाओ, हम अभी स्नान करके आते हैं । हम स्नान करने चले गए । श्रीदेवी ने दाल रोटी बनाई । उस भोजन में हमको बड़ा आनन्द आया । हमने भरपेट भोजन किया और बैठक में चारपाई थी उस पर सो गए । जब सोकर उठे तब हमने श्रीदेवी से कहा–बहन जी यज्ञ तो हमको करना ही है । श्री देवि ने

कहा–हमारे साथ गाँव का एक भी आदमी नहीं है भाई साहब कैसे यज्ञ करेंगे । हमने कहा–बहन जी हम तुम दोनों बहन–भाई मिलकर यज्ञ करेंगे । इतना सुनकर श्रीदेवी चुप पड़ गई और कहा–भाई साहब यहाँ कोई व्यवस्था नहीं है । यज्ञ को पंडाल भी नहीं है कहाँ यज्ञ करेंगे । हमने देखा श्रीदेवि के मकान के सामने एक बड़ा वृक्ष था । हमने कहा–इस वृक्ष के नीचे पाँच कुंड बनाएँगे । तुम ईंटों की व्यवस्था करो । श्रीदेवी ने कहा–भाई साहब ईंट तो हमारे पास हैं । उसने मकान के पीछे ईंटों का ढेर दिखलाया । हमने कहा–बहन जी आपको भी हमारे पास ईंटें पहुँचाने में सहायता करनी पड़ेगी । हम दोनों मिलकर यज्ञ कुंड बनाएँगे । हम दोनों बहन–भाईयों ने ईंटें ढोकर वृक्ष के नीचे ढेर लगा दिया । शाम हो गई । शाम को भोजन किया । सुबह उठकर कुँए पर गए । वहाँ चारों तरफ जंगल और खेत थे । नित्य कर्म से निवृत्त होकर वहाँ पर ही संध्या वंदन की वहाँ से चले आए । हम जब बैठक में बैठे ही थे तभी श्रीदेवी एक गिलास में दूध लेकर आई । हमने कहा–बहनजी दूध क्यों लाईं । उसने कहा–भाई साहब हम कोई मोल का थोड़े ही लाए हैं घर की गाय का दूध है । हमने दूध पिया शरीर में ताजगी आ गई । श्री देवि के पिताजी भी थे, वह हमारे पास आए, हमने उनको प्रणाम किया पिताजी ने हमको आशीर्वाद दिया और कहा–हमारे एक ही लड़की है यह भी विधवा हो गई है, ये रात दिन गायत्री के जप में लगी रहती है । गाँव में भी जाती है, परंतु उसकी कोई सुनता ही नहीं है । अब यज्ञ की कह रही है, परंतु गाँव वाले साथ ही नहीं देते हैं । हमने कहा–पिताजी, नेहरू जी के भी एक ही बेटी थी । उसने कितना नाम ऊँचा किया । आपकी बेटी आपका नाम ऊँचा करेगी और हम आपके बेटे ही तो हैं । हम दोनों बहन भाई मिलकर यज्ञ अवश्य करेंगे । पिताजी बोले–ठाकुरों का गाँव है लोग झगड़ा करेंगे । तुम दो ही हो हम बूढें हैं तुम्हारी मदद भी नहीं कर सकेंगे । हमने कहा–पिताजी आपका आशीर्वाद ही

काफी है आप चिन्ता नहीं करें । हमने श्रीदेवी से कहा-बहन जी तुम हमको ईंट देती जाओ हम अभी हवन कुन्ड तैयार करते हैं । हमने वृक्ष के नीचे पाँच कुन्ड बना दिए उनकी मेखला भी बना दी । काला, लाल, सफेद रंग से मेखला रंग दी । पाँच कुंड बनकर तैयार हो गए । भोजन किया विश्राम करके फिर हम दोनों बहन भाईयों ने गोबर लेकर जमीन को लीपा । लीपने का हमारा अभ्यास नहीं था । श्रीदेवी बोली-भाई साहब हम घर में प्रतिदिन गोबर से लीपते हैं हमको अभ्यास है हम ठीक प्रकार यह कार्य कर सकेंगे । हम उसकी मदद करते रहे । उसने सुन्दर तरीके से जमीन को लीपा, यज्ञशाला तैयार हो गई । गाँव वालों ने सुना तो सब देखने आए देख कर चले जाते थे । वहाँ के पंडित जी विरोध करने लगे । देखो अब औरत भी यज्ञ करने लगी है घोर कलियुग है । गाँव वालों ने भी विरोध किया । हमने श्री देवि से कहा-बहन चिन्ता मत करना । हमारे साथ हमारे गुरुदेव हैं उन पर हमें पूर्ण विश्वास है । यज्ञ बहुत ही शानदार होगा । हमने श्रीदेवी से कहा-एक तखत लाओ । वह एक तखत उठवाकर ले आई । हमने वट वृक्ष के नीचे तखत को रखवा दिया । हमने कहा-बहन जी माइक की व्यवस्था हो सकती है । उसने कहा-हमारा मंदिर है हम शाम को प्रति दिन कीर्तन करते हैं । मंदिर में माइक है, माइक की भी व्यवस्था हो गई । हमने कहा-बहन जी पाँच कुंड का यज्ञ हैं पाँच आदमियों के बैठने की व्यवस्था करनी पड़ेगी । कम से कम एक कुंड पर एक आदमी तो होना ही चाहिए । श्री देवि ने कहा-भाई साहब मैं और मेरे पिताजी तथा एक नौकर तीन तो हम हैं, दो आदमियों की कमी रहेगी । हमने कहा-दो आदमियों की व्यवस्था करनी ही पड़ेगी । उसने कहा-हमारी दो सहेली हैं उनको तैयार कर लूंगी । हमने कहा-ठीक है । सुबह होते ही हमने श्रीदेवी से कहा-पाँच लोगों की व्यवस्था हो गई । उसने कहा-हाँ हम पाँच लोग आ गए हैं । पाँच कुंडों पर आसन बिछा कर बैठाया । सब व्यवस्था कर ली गई ।

हमने कहा–तख्त पर चादर बिछवाओ और बहन जी रोली चावल तथा एक माला तैयार रखो । अब हमने कहा–बहन जी अब हम तख्त पर बैठते हैं । तुम पिताजी से कहो–वह आशीर्वाद दें हमको तिलक लगावें और माला भी हमको पहनावें । तभी यज्ञ शुरू होगा । श्रीदेवी ने पिताजी से कहा और उन्होंने हमारे तिलक किया, माला पहनाई, पाँच व्यक्ति पाँच कुंडों पर बैठ गए । गाँव के भाई बहिन देखने आए सब खड़े थे । हमने यज्ञ प्रारंभ किया । सारे भाई बहन जो आए थे, यज्ञ के कार्यक्रम को देखते रहे । यज्ञ पद्धति तो ऐसी रोचक है ही, जो देखने आए सब पर प्रभाव पड़ा । गायत्री माता की आरती यज्ञ भगवान की प्रार्थना सब सुनते रहे गाँव में उन भाइयों ने सबसे कहा–यज्ञ बहुत ही अच्छा हो रहा है । दूसरे दिन सारा गाँव यज्ञ देखने आया । दूसरे दिन भी यज्ञ के कार्यक्रम का सब भाई बहिनों पर बड़ा असर पड़ा और आस पास के गाँवों में यज्ञ का एक हल्ला सा मच गया । तीसरे दिन भारी भीड़ थी और यज्ञ पर बैठने को सभी तैयार थे । यज्ञ चलता रहा शाम के चार बजे तक यज्ञ चला । चौथे दिन भी पूरे दिन यज्ञ चलता रहा । आस–पास के गाँव के सभी भाईयों ने भाग लिया । पूर्णाहुति के दिन तो दो सौ ढाई सौ व्यक्तियों ने भाग लिया हमने जब दक्षिणा पर बोला कि जिन भाइयों ने यज्ञ किया है उनको दक्षिणा देना चाहिए । हमारे गुरु पैसे की दक्षिणा ग्रहण नहीं करते हैं, उनको एक बुराई दक्षिणा में देनी है और एक अच्छाई ग्रहण करनी है । जितने भी बहन भाई आए सबने एक बुराई छोड़ी और एक अच्छाई ग्रहण की जो यज्ञ का विरोध कर रहे थे वे सब यज्ञ का समर्थन करने लगे और कहने लगे श्रीदेवी ने तो गाँव में कमाल ही कर दिया है । श्रीदेवी की सभी प्रशंसा कर रहे थे । जब हमारा विदा होने का समय आया तब सारे गाँव के भाई बहिन तथा आसपास के गाँवों के लोग भी इकट्ठे हो गए । विदाई का वह दृश्य देखने लायक था । सारे गाँव में जुलूस निकला । प्रत्येक घर में हमें माला पहनाई गई । इक्कीस सौ रुपये की विदाई दी । हमको शिकोहाबाद

तक पहुँचाने आए । सवारी की व्यवस्था की गई तो हमने मना कर दिया । आप बहन भाइयों के साथ पैदल ही चलेंगे । हम मन ही मन गुरुदेव तथा वंदनीया माता जी को प्रणाम कर रहे थे कि हमारे गुरु ने हमको क्या बना दिया । ऐसे गुरु को पाकर हम तो धन्य हो गए । जैसे हम निर्भय होकर चलते हैं गुरु ने हमको निर्भय बना दिया है । वैसे ही आप भी पल्ला पकड़ कर निर्भय बन सकते हैं । गुरु आपके साथ रहेगा । हम मथुरा आए, गुरुदेव को वहाँ का सारा हाल बतलाया गुरुदेव ने कहा-बेटा तू हमारे पास आ गया है अब मिशन का कार्य बढ़ेगा । श्रीदेवी बहन अभी शांति कुंज में स्थाई रूप से रह रही हैं और मिशन के कार्य में सहयोग कर रही हैं ।

नरखेड़ा का पंच कुंडीय यज्ञ

एक बार गुरुदेव ने कहा-बेटा तू नरखेड़ चला जा वहाँ हमारी बेटी सावित्री है । वह वहाँ पर महिलाओं को हमारा साहित्य पढ़वाती है । उसने महिलाओं का संगठन बना रखा है । हमने कहा-गुरुदेव नरखेड़ कहाँ है ? गुरुदेव ने कहा-नागपुर से पहले है वह संतरा की सबसे बड़ी मंडी है । इस समय संतरा की फसल भी चल रही है । वहाँ जाकर महिलाओं की शाखा बना कर आ । गुरुदेव ने हमारा कार्यक्रम नरखेड़ा का बना दिया और सावित्री को पत्र लिख दिया । हम नरखेड़ा पहुँचे । सावित्री का लड़का रमेश हमें रास्ते में ही मिल गया । हमने जब सावित्री का मकान पूछा तब रमेश ने कहा-हम उन्हीं के लड़के हैं आप हमारे साथ चलें । हम उसके साथ चले गए घर पहुँचे । हमने गुरुदेव का पत्र सावित्री बहन को दिया । उसने हमारे स्नान भोजन आदि की व्यवस्था की । विश्राम के बाद हमने कहा-बहन जी अब आप सब बहिनों से हमको मिलवाओ । सावित्री बहन हमको बहिनों के घर ले गई । सब बहिनों से भेंट हुई । जहाँ भी जिधर भी जाते वहाँ पर हमको संतरे खाने को मिलते थे । रमेश के साथ हम सावित्री के खेतों को देखने गए ।

उनकी जमीन में भी संतरे का बगीचा था । हम जब घर आए तो सावित्री ने कहा-भाई साहब भोजन कर लो । हमने कहा-बहन जी यहाँ तो सारे दिन संतरा का ही भोजन किया है । यहाँ जब तक रहेंगे संतरा खाते रहेंगे । ऐसे संतरे हमारी तरफ मिलते ही नहीं हैं । सुबह हमने कहा-बहन जी सब बहिनों को बुला लो गोष्ठी कर लेंगे । सब बहिनें बुलाई गईं, पाँच कुन्ड का यज्ञ भी रख लिया । सावित्री का घर बड़े घरों में से था, उसके कई मकान थे । एक मकान के चौक में यज्ञ रखा और यज्ञ के बाद गोष्ठी हुई । सभी बहिनों ने व्रत लिया कि अब हम महिला जागृति का कार्य करेंगे और इस क्षेत्र में दौरा भी करेंगे । नरखेड़ा में महिला शाखा बनाई । सबसे पहले नरखेड़ा में ही महिला शाखा बनाई गई थी । वहाँ की बहिनों का जो स्नेह हमको मिला वह आज तक हमको याद आता है । चार दिन हम नरखेड़ा में रहे । हमको ऐसा प्रतीत होने लगा कि इन बहिनों ने और हमने एक ही माँ के पेट से जन्म लिया है । सावित्री बहन तथा अन्य बहनों का जो स्नेह मिला वह आज तक हमको याद आता है । तब महिलाओं को पर्दे में रहना पड़ता था । अब सावित्री बहिन शांति कुंज आ गई हैं । जब भी हम शांति कुंज जाते हैं दोनों बहनें श्रीदेवी और सावित्री प्रसन्न होती हैं । आज उन दोनों का हमारे प्रति इतना स्नेह है कि वह हमको अपना बड़ा भाई मानती हैं । हम भी उनको छोटी बहिन की तरह मानते हैं । अगर बहनें महिलाओं का स्तर ऊँचा उठाने के लिए गुरुदेव का साहित्य घर-घर पढ़ाएँ और सभी व्यक्ति घर-घर संस्कार मनाएँ, तभी संस्कारवान सन्तानें उत्पन्न होंगीं । नारी जाति की जो हालत आज हो रही है उससे गुरुदेव बड़े दुःखी थे । महिलाओं के गंदे चित्र जो दुकानों पर लगते हैं संगठन बनाकर जाएँ और उनकी जगह महापुरुषों के चित्र लगाएँ । अब समय आ गया है कि महिलाओं को यह कदम उठाना ही पड़ेगा । गुरुदेव कहते थे कि अब महिलाओं का युग आने ही वाला है ।

बहिनों का सहयोग सराहनीय रहा

एक बार गुरुदेव ने हमें पाँच कुण्डीय यज्ञ में ग्राम रमली भेजा। वहाँ की पल्लवाच्छादित यज्ञशाला हमको आज तक याद आती है। पेड़ों के खंभे थे और उनके पत्तों से यज्ञशाला ढकी हुई थी। बड़ा ही शानदार यज्ञ हुआ। आसपास के गाँवों की बड़ी भारी भीड़ इकट्ठी हो गई। यज्ञ प्रवचन में शाम हो गई। अंधेरा हो गया। बाहर की जनता भी वहीं ठहर गई। वहाँ के यज्ञ के प्रबंधकों ने शाम के भोजन की व्यवस्था नहीं की थी क्योंकि कार्यक्रम दोपहर को ही समाप्त होना था, परन्तु आस पास के गाँवों से अधिक लोग आ गए थे जिससे कार्यक्रम शाम तक चलाना पड़ा और उन बाहर से आए हुए लोगों को रात्रि विश्राम के लिए रमली में ही रुकना पड़ा। अचानक रुकी इस भीड़ को देखकर वहाँ के कार्यकर्ता भयभीत हुए कि इनके भोजन का इन्तजाम यकायक कैसे करेंगे, कौन इतना भोजन थोड़े समय में बनाएगा। समस्या हमारे पास रखी गई। हमने कहा–सारे गाँव की बहनें अपने अपने घरों से भोजन बनाने के बर्तन तथा भोजन सामग्री लेकर आएँ। जो भी सब्जी हो उसे लेकर आएँ और आटा भी साथ लाएँ तथा खेतों के पत्थरों से चूल्हा बनाकर भोजन तैयार करें। बाहर के जो लोग आए हैं उनको भोजन कराएँ। जिसके घर में जो भी आटा दाल सब्जी थी लेकर आए और भोजन बनाना आरंभ किया कुछ बहनें घरों में चक्की से आटा पीसने लगीं। थोड़ी ही देर में भोजन बनकर तैयार हो गया, वहाँ के भाई बहिनों का उत्साह देखकर हम भी नतमस्तक हो गए। ऐसा यज्ञ हमने आज तक नहीं देखा था। दो दिन तक ऐसा ही क्रम चला। कहीं मक्का की रोटी बन रही थी, कहीं गेहूं की, बाजरे की, कहीं तिनाजे की रोटी बन रही थी। जिसके घर में दलिया था, वो दलिया बनाकर खिला रहे थे। उस यज्ञ में चंदा इकट्ठा नहीं हुआ था सारे गाँव के श्रम और सहयोग से यज्ञ सफल हुआ। वापस लौटकर जब हमने गुरुदेव से कहा तो गुरुदेव बोले हम ऐसे ही यज्ञ चाहते हैं। गुरुदेव

का मन कम खर्च वाले यज्ञ करने का रहता था । गुरुदेव यज्ञों में अधिक खर्च करना पसंद नहीं करते थे । यदि कोई यज्ञों में अधिक खर्च करता था तो गुरुदेव उससे बहुत नाराज होते थे । गुरुदेव कहते थे यज्ञ से हम शिक्षण देते हैं कि हमें जीवन कैसे जीना चाहिए । जो कुछ अपने पास है उसमें से समाज को भी कुछ देना चाहिए । जैसे यज्ञाग्नि में जो कुछ डालते हैं वह अपने पास नहीं रखती है, वायुभूत बनाकर सारे संसार में वितरण कर देती है । जो व्यक्ति यज्ञ करता है कर्मकांड को ही महत्व देता है, परन्तु उसके शिक्षण को ग्रहण नहीं करता चाहे तो वह कितना ही अधिक खर्च करे और कितना ही बड़ा यज्ञ करे उससे समाज को कोई लाभ नहीं होगा । धर्माचार्यों ने यज्ञ को कितना खर्चीला बना रखा है कि यज्ञ में अनाप-शनाप रुपया खर्च कराते हैं । वह उचित नहीं है । हम कम से कम खर्च में यज्ञ कराना चाहते हैं । यज्ञ के साथ ज्ञान-यज्ञ अनिवार्य है । जो यज्ञ के साथ ज्ञान-यज्ञ नहीं करता वह समाज को भ्रमित करता है और अपने अहंकार की पूर्ति करता है । यज्ञ कम से कम खर्च में होने चाहिए । गुरुदेव ने आगे कहा कि रमली वालों ने यज्ञ के महत्व को समझा उनको हमारा पूर्ण आशीर्वाद है । बेटा ऐसे ही यज्ञ कराना । खर्चीले यज्ञों का विरोध करना ।

लड़की को वैधव्य से मुक्त कराया

हम एक दिन तपोभूमि में थे गुरुदेव सुबह आए हमसे कहा-बेटा तुमको ग्वालियर जाना है । वहाँ पर प्यारे मोहन की लड़की की शादी है उसकी शादी में तुमको जाना ही है । हमने कहा-गुरुदेव जैसी आज्ञा, हम चले जाएँगे । माता जी के पास गए तो माता जी ने भी कहा-बेटा तुमको ग्वालियर जाना है और शादी में जल्दी पहुँचना है अभी भोजन में देरी है । तुम आगरा में कुछ नाश्ता कर लेना । शीघ्र चले जाओ । जबकि हम कहीं भी अगर सुबह चार बजे भी जाते थे तब माता जी हमको चार बजे ही नाश्ता करा देतीं और एक समय का भोजन बनाकर रख देती थीं । उस

दिन माता जी ने भी कहा-बेटा जल्दी चले जाओ । हमने उनकी आज्ञा का पालन किया और हम ग्वालियर ठीक समय पर पहुँच गए । लड़की वाले हमारे पहले से ही परिचित थे । ग्वालियर शाखा के भाई भी थे । सबसे मिले और कहा-गुरुदेव ने हमको भेजा है । जिस लड़की की शादी थी वह भी मिली । इधर लड़के वाले भी समय से आ गए थे । बारात लड़की वाले के घर गाजे-बाजे के साथ जाने की तैयारी कर रही थी । सभी ने कपड़े बदले । लड़की वाले भी सज-धज कर तैयार थे, हम भी दरवाजे पर तैयारी में लगे थे । बारात आने में देरी हो गई हम जहाँ बारात ठहरी थी वहाँ पर गए कि क्यों देरी हो रही है ? जहाँ बारात ठहरी थी वहाँ बाजे बज रहे थे । बाराती सब तैयार खड़े थे, बग्घी फूलों से सजी खड़ी थी, परंतु लड़का तथा लड़के के परिवार वाले वहाँ नहीं आए थे । हम भीतर उनको बुलाने गए । वहाँ पर लड़का जिसकी शादी हो रही थी जब चलने को तैयार हुआ तब बेहोश हो गया था । हम पहुँचे और भी परिवार के भाई पहुँच गए । ग्वालियर का जो सबसे बड़ा डाक्टर था उसको बुलवाया । वह आया, उसने लड़के को देखा और कहा-इसको वापिस घर ले जाओ । इसकी हालत बहुत खराब है । हम सब यह सुनकर अधिक हैरान हो गए । लड़के वाले लड़के को वापस घर ले गए । जब बारातियों ने यह सुना वह भी वापस चल दिए । इधर जब लड़की वालों ने सुना कि लड़का बेहोश हो गया और उसको वापस अपने घर ले गए हैं तो वहाँ बड़ा हाहाकार मच गया । लड़की हाथ में माला लेकर खड़ी थी शृंगार किए हुए । सुहाग की सारी चीजें पहन रखी थी हम भी पहुँच गए । हम सबको समझा ही रहे थे इतने में लड़की हमारे पास आकर हमको पकड़कर बोली-भाई साहब आपको गुरुदेव ने भेजा है आप हमको अपने साथ लेकर चलो और हमको जमुना जी में बहा दो, या यहाँ पर किसी कुएँ में हमको फेंक दो । अब हमारी बोलती बंद थी । हमने मन ही मन कहा-गुरुदेव आपने हमको बुरी तरह फँसा

दिया । बेचारी लड़की रो रही थी और सब लोग भी रो रहे थे । हमें भी बहुत बुरा लगा । हमने लड़की से कहा-बेटी एक बात बतला गुरुदेव पर तुझे विश्वास है या नहीं । उसने कहा-गुरुदेव पर मुझे पूर्ण विश्वास है । तब हमने कहा-हम इसी समय मथुरा जाते हैं और सुबह हम आ जाएँगे । जब तू कहेगी तुझे तब कुए में फेंक देंगे और हम भी उसी में कूद पड़ेंगे, परन्तु हमको गुरुदेव से बात करके आने दे । लड़की ने कहा ठीक है । गुरुदेव के पास चले जाओ हम रात को ही बस से मथुरा चल दिए । सुबह मथुरा आ गए । गुरुदेव एक छोटी सी कोठरी में बैठे थे । गुरुदेव ने माता जी से हमारा नाम लेकर कहा वह ग्वालियर से आ रहा है । बहुत नाराज है । तुम उसको चाय पिलाना । अपनी कोठरी के किवाड़ बंद कर लिए । हम अखंड ज्योति संस्थान पहुँचे । मैंने माता जी से कहा-गुरुदेव कहाँ हैं ? माता जी ने कहा-पहले चाय पी लो तुम थके हुए हो फिर गुरुदेव से बात करना । हमने कहा-हम चाय नहीं पिएँगे, हमको गुरुदेव से मिलना है । हम उठकर कोठरी के पास आए और जोर-जोर से किवाड़ों को धक्का लगाया, हमारी हालत उस समय पागलों जैसी थी । माता जी भी आ गईं, गुरुदेव ने किवाड़ खोल दिए और हमसे कहा-बैठ बेटा तू तो बहुत नाराज है । हमने कहा-अगर वहाँ पर ऐसी परिस्थिति होने वाली थी तब आपने हमको उस शादी में क्यों भेजा । उस दिन हम गुरुदेव तथा माता जी से बड़े जोर-जोर से बोल रहे थे और उनकी बात को सुन ही नहीं रहे थे और जोर-जोर से रो भी रहे थे । माता जी ने हमारे सिर पर हाथ फेरा । हमको एक गिलास पानी पिलाया और बोली बेटा तू शांति से हमारी बात तो सुन । माता जी हमको बार-बार पुचकार रही थीं सिर पर हाथ फेर रही थीं । उन्होंने कहा-बेटा तुमसे ज्यादा हमको दुःख है । हम करते भी क्या, परंतु इससे कम में कोई बात बननी ही नहीं थी । हमने कहा-क्या बात है हमको बतलाओ । हमको जाकर उस लड़की को बतलाना है । शायद उस लड़की का नाम

अन्नो था । हमको उसको जाकर बतलाना है । आप बतलाओ उससे जाकर हम क्या कहें । माता जी ने कहा-बेटा चाय नाश्ता तो कर ले । हमने कहा-नहीं माता जी चाय नाश्ता कुछ भी नहीं करेंगे । हम तो मरेंगे । उस लड़की का क्या हाल है ? तब गुरुदेव ने कहा-बेटा वह लड़की हमारी अनन्य भक्त है और मुझ पर उसे पूर्ण विश्वास है और मिशन के कार्यों में ही लगी रहती है । हमसे जब भी वह मिलती थी तो उसको देखकर हमको बड़ा दुःख होता था । उस लड़की की शादी के चार पाँच माह बाद ही वैधव्य योग है । इसी कारण हमने ऐसा किया है कि उसके भाग्य को ही बदल दिया है । शादी भी नहीं हुई है और सुहाग का सारा सामान पहन भी लिया है इसकी चिन्ता मत कर उसका भाग्य बदला है तभी हमको ऐसा करना पड़ा है । जब गुरुदेव ने हमसे यह बात कही तब हमारी आँखें खुल गई कि भगवान को भक्त के लिए क्या-क्या करना पड़ता है । अगर सच्चा भक्त हो तो भगवान को उसके भाग्य को ही बदलना पड़ता है । इसी बात को सुनकर हम चुप हो गए । हमने कहा-माता जी हम अब ग्वालियर जाते हैं । माता जी ने चाय नाश्ता के लिए कहा, हमने मना कर दिया । हम उस लड़की के साथ ही चाय नाश्ता लेंगे । जब वह भोजन करेगी उसी के साथ हम भोजन करेंगे । हम वापस ग्वालियर चले गए । वहाँ शादी का माहौल भी बदला हुआ था । लड़की एक कमरे में पलंग पर पड़ी थी उसके माता-पिता एक कमरे में पड़े थे । हमने जाकर लड़की को सारी बातें बतलाई और कहा-गुरुदेव ने तुम्हारा भाग्य बदला है । लड़की ने सुना और हमसे कहा-हमको गुरुदेव पर पूर्ण विश्वास है । हमने कहा-बेटी उठो, लड़की ने उठकर जेबर आदि जो शादी के कपड़े आदि पहने थे उन्हें बदला और उनको कमरे में स्थित गायत्री माता के चित्र के सामने रख दिया । हम दोंनों ने भोजन किया । लड़की ने अपने माता-पिता को समझाया । सारी बातें माता-पिता से कहीं और बोली-मुझे गुरुदेव पर पूर्ण विश्वास है । जो

कुछ किया है सही किया है, तुम चिन्ता मत करो । हम दो दिन उधर ही ठहरे । जब सब ठीक हो गया तो हमने कहा–अब हम जाएँगे । लड़की ने कहा–आप मिशन के कार्य का नुकसान क्यों करते हो मथुरा चले जाओ । गुरुदेव तथा माता जी से हमारा प्रणाम कहना । हमारे विचार अब सही हैं, अब हमको कोई दुःख नहीं है । हम मथुरा आ गए । गुरुदेव माता जी को सारी बातें बतलाईं । गुरुदेव ने कहा–लड़की की हमारे प्रति पूर्ण श्रद्धा है । उसकी श्रद्धा ने ही तो हमसे इतना कार्य कराया है । हमने सोचा लड़की की श्रद्धा ने गुरुदेव को अपना भाग्य बदलने को मजबूर कर दिया । मीरा ने अपनी श्रद्धा से पत्थर के टुकड़े में भगवान कैसे पैदा कर लिए थे यह बात हमको समझ आई । गुरुदेव के प्रति हमारी श्रद्धा हजार गुनी बढ़ गई ।

अब हम गुरुदेव के साथ क्षेत्रों में जहाँ कहीं भी पाँच कुंडीय यज्ञ होता था जाते थे । गुरुदेव जब यज्ञ नहीं होते तब संगठन के लिए भी जाते थे, तब हम उनके साथ ही जाते थे । इसी सिलसिले में ग्वालियर में शाखा बनाने के लिए एक पाँच कुंडीय यज्ञ रखा । इसमें राजमाता सिंधिया ने भी भाग लिया । शायद उस समय श्यामाचरण शुक्ल मुख्य मंत्री थे वह भी यज्ञ में आए थे । हम गुरुदेव के साथ ग्वालियर यज्ञ में गए । पाँच कुंडीय यज्ञशाला बहुत सुन्दर बनी थी । जब गुरुदेव यज्ञशाला के दरबाजे पर गए वहाँ पर वह लड़की जिसकी शादी में हम गए थे यज्ञशाला के दरवाजे पर मिली । साड़ी पहन कर सिर पर कलश लेकर खड़ी थी । जब हमने लड़की को देखा तब हमारी आँखों में आँसू आ गए और लड़की की श्रद्धा को सराहने लगे । गुरुदेव का स्वागत हुआ । गुरुदेव वहाँ के कार्यकर्ताओं से वार्तालाप कर रहे थे तभी हमने उस लड़की को अपने पास बुलाया और उससे कहा–अब तू शादी कर ले । अब तो मिशन का काफी विस्तार हो गया है । तेरे मन पसंद का लड़का देखकर शादी कर देंगे । लड़की बोली–मेरी शादी तो हो चुकी अब मैं

शादी नहीं करूँगी । हम चार बहिनें हैं सब एम. ए., बी. ए. पास कर चुकी हैं, अब उनकी शादी करनी है । लड़की ने हमसे साफ मना कर दिया, परन्तु हम उसको समझाते रहे और वह बार-बार मना करती रही । जब हमने अधिक कहा तो उस लड़की ने कहा-अगर शादी करनी है तो उसी लड़के से करूँगी जो शादी के समय बेहोश हो गया था उससे ही शादी करा दें । वह लड़का घर पर जाकर ठीक हो गया था । गुरुदेव ने इधर लड़की का सौभाग्य भी बचा लिया और लड़के की आयु भी बढ़ा दी हम चुप हो गए । लड़की चली गई । हमको किसी सरदार के मकान में ठहराया था । हम तथा गुरुदेव दोनों एक साथ ठहरते थे । रात भर हमको नींद नहीं आई । हम सोचते रहे कि आज गुरुदेव से इस लड़की की शादी की बात तय करनी है । चाहे गुरुदेव से झगड़ा ही हो । सुबह हम प्रतिदिन की भाँति उठे । सुबह उठकर गुरुदेव के नहाने की व्यवस्था नहीं की और उनके पास जाकर बैठ गए । गुरुदेव ने कहा-आज स्नान की व्यवस्था नहीं करनी है । हमने कहा-नहीं गुरुदेव आज हम स्नान भोजन चाय कुछ भी नहीं करने देंगे और हम भी स्नान, भोजन नहीं करेंगे । हम गुस्से में गुरुदेव के पास बैठ गए । गुरुदेव ने कहा-आज बेटा इतना नाराज क्यों है ? कारण हमको बतला । हमने कहा-लड़की ने हमारे सामने शर्त रखी है कि हम उसी लड़के से शादी करेंगे और हमारे पिता का एक पैसा भी खर्च नहीं होगा । हमने गुरुदेव से कहा-गुरुदेव अन्नो की शादी होगी या नहीं । गुरुदेव बोले-बेटा तू कहेगा तभी हम किसी लड़के से उसकी शादी करा देंगे । इस पर इतना नाराज क्यों है । हमने कहा-गुरुदेव अन्नो की शादी उसी लड़के से होगी । जो शादी के समय बीमार और बेहोश हो गया था । शादी में एक पैसा भी खर्च नहीं होगा । गुरुदेव ने कहा-ठीक है बेटा उसी लड़के से शादी होगी और एक पैसा भी खर्च नहीं होगा । जब गुरुदेव ने हमसे कह दिया और हमको पूर्ण विश्वास था कि जो गुरुदेव कहते हैं सही होता है । हमने यज्ञ

की सारी व्यवस्था कर दी । यज्ञ बहुत अच्छा रहा । इसके बाद हम मथुरा उनके साथ चले आए और भी यज्ञ थे उनमें गुरुदेव के साथ जाते रहे । चार पाँच महीने हो गए तब हमको फिर याद आई कि अन्नो की शादी अभी गुरुदेव ने कराई ही नहीं है । हम यज्ञों से मथुरा आ गए । घिया मंडी मकान पर बैठे थे । गुरुदेव एक मूंज की चारपाई पर बैठे थे । माता जी भी वहीं पर बैठी हुई थीं । हमने गुरुदेव से कहा-गुरुदेव अब तक अन्नो की शादी नहीं हुई है । गुरुदेव ने माता जी से कहा-चेला तो बड़ा जिद्दी है । जिस बात पर अड़ जाता है उसे भूलता ही नहीं, कहकर माता जी गुरुदेव दोनों हँस पड़े । हँसते हुए हमसे कहा-तू पहले ग्वालियर जा और वहाँ से आने के बाद हमसे बात करना । हमने कहा-हम आज ही ग्वालियर जा रहे हैं । हम ग्वालियर चले गए । वहाँ जब हम प्यारे मोहन के घर पहुँचे तब हमको पता चला कि अन्नों की शादी उसी लड़के से हो गई और एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ । यह सुनकर हमको बड़ा आश्चर्य हुआ । हमने पूछताछ की कैसी शादी हो गई । वहाँ घरवालों ने हमको सुनाया कि लड़के का पिता लड़के की शादी के लिए दूसरी कोई लड़की तलाश कर रहा था । एक लड़की देखी भी थी । लड़की वाले के परिवार वालों से तय भी हो गया था । लड़के ने सोचा कि एक लड़की को हम माला हाथ में लेकर बीमार होने के कारण छोड़कर चले आए और हमारे पिताजी अब दूसरी लड़की से शादी तय कर रहे हैं । उसको यह बात उचित नहीं लगी । लड़के वाला भी पैसे वाला था । लड़का पंडित जी के पास गया पंडित जी से पूछा कि पंडित जी अगर हम शादी करें तो कौन सा दिन ठीक होगा । सुबह का समय था पंडित जी ने पत्रा देखकर बतलाया कि बेटा जिस दिन सबसे अच्छा मुहूर्त है उस दिन तुम्हारी शादी हो ही नहीं सकती है । लड़के ने कहा-क्यों नहीं हो सकती है ? पंडित जी ने कहा-बेटा सबसे अच्छा तेरी शादी का मुहूर्त आज के दिन का है । अगर आज शादी शाम तक हो जाय तो इससे अच्छा मुहूर्त

और कोई है ही नहीं । आज के दिन तेरी शादी होना संभव ही नहीं है । लड़का उठकर चला आया । घर आकर नौकर बुलाया । उससे ड्राइवर को बुलाकर कहा-हमको बाहर जाना है । ड्राइवर बुलाने को नौकर गया तब लड़के ने अपनी माँ से कहा-माँ हमको आज ही शादी करनी है । हमारे साथ चलो । माँ ने कहा-बेटा तू पागल हो गया है तेरे पिता कहीं बाहर गए हैं । शादी कौन सी लड़की कर लेगी । वह बात करता रहा, ड्राइवर आ गया, लड़का बाहर आया और कहा माँ मैं ग्वालियर जा रहा हूँ और वहीं उसी लड़की से शादी करके लानी है । माँ समझाने लगी, वह नहीं माना माँ उसको समझाने के लिए गाड़ी में बैठ गई, पास उसकी बहन खड़ी थी वह भी माँ के साथ गाड़ी में बैठ गई । बहुत समझाया परन्तु लड़का माना ही नहीं । शाम को चार बजे ग्वालियर पहुँच गए । जब मकान पर पहुँचे तब दरबाजे पर उस लड़की की माँ खड़ी थी । लड़के ने कार से उतर कर कहा माता जी आप हमको पहिचानती हो ? लड़के को देखकर उसने कहा बेटा तेरी शक्ल ऐसे लगती है जैसे हमने अन्नो को लड़का देखा था, लेकिन वह बेहोश हो गया था और वापस चला गया था । लड़के ने कहा हाँ माता जी मैं वही लड़का हूँ और मुझे आज ही शादी करनी है । इतने में लड़की की छोटी बहन आ गई लड़के को बैठक में बिठाया । लड़की के पिताजी घर पर नहीं थे । दुकान की उस दिन छुट्टी थी कहीं चले गए थे । लड़कियों ने गायत्री परिवार के भाइयों को टेलिफोन किया और सारी बातें बतलाई । गायत्री परिवार वालों में खुशी की लहर दौड़ गई । एक दूसरे ने आपस में फोन किए और थोड़े समय में ही गायत्री परिवार के स्त्री पुरुष घर पर आ गए । सभी काम में लग गए किसी ने मंडप बनाया । किसी ने बाजे वालों को बुलाया । सब अपने-अपने कामों में लगे रहे । थोड़ी देर में शादी की तैयारी हो गई । लड़की की शादी का वह सामान जो हमने पहले उतरवाया था वह रखा ही था । उसी को पहनवा दिया गया । लड़का

उसकी माँ उसकी बहन उसके साथ थी । लड़का लड़की को मंडप में बिठलाया गया । जो बहिनें गायत्री परिवार की आई थीं गाना गाने लगी । बाजा बजने लगा था । माइक लग गया था । एक भाई रोशनी की व्यवस्था कर आया, रोशनी भी लग गई । जब लड़की के पीले हाथ करने का समय आया तब लड़की की माँ ने कहा इसका पिता तो इस समय यहाँ है नहीं । अकेली मैं कैसे पीले हाथ करूँ ? वहाँ परिवार वाले अपनी पत्नियों समेत आए थे वह बैठ गए । बोले-हमारी ही तो लड़की है । हम पीले हाथ करेंगे । सुचारु रूप से कार्य चला और शादी सम्पन्न हो गई । जो उसकी छोटी बहन थी उन्होंने लड़के की माँ बहन के लिए पूड़ियाँ बनालीं और परिवार वाले बाजार से मिठाई ले आए । उस शादी में सबसे बड़ी बात यह रही कि जो भाई जो भी सामान लाया उसका पेमेन्ट उसी ने किया । जो बाजा लाया उसने बाजे वालों को, जो माइक लाया उसने माइक वालों का, रोशनी वाले ने रोशनी का, मिठाई वाले का जो भी सामान आया उसी ने पेमेन्ट किया । सबके हिस्से में थोड़ा-थोड़ा आया और उसका पेमेन्ट उसी ने किया । लड़की वाले के यहाँ सिर्फ आठ दस लोगों का भोजन बना था, वही खर्च हुआ । सभी परिवार वालों ने लड़के लड़की को आशीर्वाद दिया और लड़के-लड़की को वहीं पर बिठा दिया । जो सामान जिसको लड़की को देना था दे रहे थे । मकान पर बाजा बज रहा था । सभी परिवार वाले बहुत खुश थे । जब लड़के का पिता घर पर आया उसको मालूम पड़ा कि लड़का ग्वालियर शादी करने गया है और उसकी माँ बहन भी साथ गई है । वह भी गाड़ी लेकर ग्वालियर चल दिया । उधर लड़की का पिता गायत्री मंदिर चला गया था । परेशान था ही गायत्री माता से प्रार्थना करने गया था । वह भी घर वापस आया । जब वह दरवाजे पर आया वहाँ भाइयों ने कहा तुम कहाँ थे तुम्हारी बड़ी तलाश हो रही थी । जब लड़की का पिता घर पर आया तो बाजा बज रहा था रोशनी हो रही थी । वह एक दम बड़े

आश्चर्य में पड़ गया ये मकान हमारा है या भूतों का मकान । वह दरवाजे पर आश्चर्य से देख रहा था, इतने में लड़के का पिता गाड़ी लेकर आ गया । लड़की का पिता भी दरवाजे पर था ही और लड़के का पिता भी । दोनों ने सुना कि लड़के लड़की की शादी हुई है । दोनों ने माला मँगवा कर लड़के लड़की को माला पहना कर आशीर्वाद दिया और लड़की विदा होकर चली गई ।

गुरुदेव ने जब मुझे ग्वालियर भेजा जा तू ग्वालियर होकर आ । मैं ग्वालियर गया । तब वहाँ के परिवार वालों ने उपरोक्त बातें बतलाईं। हमने सोचा गुरुदेव ने जो कहा था वह सच हो गया । उसी लड़के से शादी हो गई और लड़की वाले का खर्च भी नहीं हुआ । हमने गुरुदेव को मन ही मन नमस्कार किया और सोचा हम धन्य हैं कि हमको इस जीवन में ऐसा गुरु मिल गया और हमको विश्वास हो गया कि यह व्यक्ति नहीं शक्ति है । एक हमने मोहन दलाल के लड़के का और दूसरा प्यारे मोहन की लड़की का चमत्कार देखा । हमको गुरुदेव पर करोड़ों गुना विश्वास हो गया और हमारी श्रद्धा दिनों दिन बढ़ने लगी । हम वापस मथुरा आए । हमने गुरुदेव को साष्टांग प्रणाम किया । गुरुदेव ने कहा–बतला बेटा क्या देख कर आया है ? हमने कहा–गुरुदेव जो आपने कहा था सब सच निकला । गुरुदेव ने कहा–बेटा हमने कुछ नहीं किया है । जो कुछ भी हुआ है गुरुदेव और गायत्री माता के आशीर्वाद से हुआ है । हमको उन पर पूर्ण विश्वास है । वह हम जो कुछ कहते हैं हमारा कार्य पूरा करते हैं । अगर हम बहन भाई अपने गुरु पर श्रद्धा विश्वास करने लगें तो अवश्य ही हमारे गुरुदेव हमारे सारे कार्य पूरे करेंगे । कमी सिर्फ श्रद्धा विश्वास की है । जितना गुरुदेव के प्रति श्रद्धा विश्वास बढ़ता जायगा, उतना ही गुरुदेव का आशीर्वाद मिलता चला जायगा । श्रद्धा विश्वास के अन्दर बड़ी शक्ति है । हम भजन करते हैं, फूल चढ़ाते हैं, गायत्री मंत्र का जप करते हैं, प्रति दिन यज्ञ करते हैं, परन्तु हमारे श्रद्धा–विश्वास में कमी

है, तभी हमारा यज्ञ भजन चमत्कार नहीं दिखाता । जब गुरुदेव को गायत्री और यज्ञ चमत्कार दिखाते थे तब हमको क्यों नहीं दिखाते ? क्योंकि हमारी श्रद्धा विश्वास में कमी है । हमको हमारे गुरुदेव के प्रति, माता जी के प्रति, गायत्री माता, यज्ञ भगवान के प्रति श्रद्धा विश्वास दृढ़ करना चाहिए । इस प्रसंग से हमने जो सीखा वही लिख दिया है । आदर्श सिद्धांतों के प्रति जितना श्रद्धा विश्वास होगा, उतना ही मंत्र फलीभूत होता जायगा । जितना श्रद्धा विश्वास गुरुदेव के प्रति बढ़ता गया, उसी प्रकार हमको गायत्री मंत्र फूलने-फलने लगा और गुरुदेव माता जी का आशीर्वाद मिलता चला गया ।

गुजरात का दौरा

एक बार गुजरात में गुरुदेव के साथ दौरे पर गए । तब गुजरात में कम शाखाएँ थीं । अहमदाबाद गए तब वहाँ सिर्फ एक मिश्रीलाल जी कार्यकर्ता थे । वह अकेले थे । पत्नी बच्चे भी उनके नहीं थे । उनके पास जाकर हम गुरुदेव के साथ ठहरे । उनका एक छोटा सा कमरा था । उसी में हमने अपना बिस्तर पेटी रक्खे । रात को हम मिश्रीलाल जी तथा गुरुदेव तीनों जमीन पर बिस्तर बिछाकर लेटे । कमरा इतना छोटा था कि उसमें तीन बिस्तर कठिनाई से ही बिछा पाए । सुबह गुरुदेव तीन बजे उठ जाते थे । हमने मिश्रीलाल जी से कहा-लैट्रीन, गुसलखाना कहाँ है ? उसने कहा -हमारे पास इस कमरे के अलावा और कुछ भी नहीं है । उसमें सामूहिक लैट्रीन थी उसको बतलाया और कमरे के सामने एक पत्थर पड़ा था उसने कहा-हम इसी पर नहाते हैं । बाहर सामूहिक नल है उसमें से पानी लाते हैं । गुरुदेव की नहाने की व्यवस्था की । बाहर पत्थर पर एक बाल्टी पानी भर दिया । गुरुदेव सामूहिक लैट्रीन में ही गए, पत्थर पर ही नहाए । हम भी उसी लैट्रीन में गए पत्थर पर स्नान किया । पानी लाकर कपड़े धोकर सुखा दिए । गुरुदेव मिश्रीलाल जी से बातें करते रहे । मिश्रीलाल जी ने कहा-गुरुदेव एक व्यक्ति के मकान

का मुहूर्त है हमने उसमें यज्ञ तय कर दिया है । आपको ही मकान का मुहूर्त कराना है । गुरुदेव ने हाँ कर दी । हम गुरुदेव व मिश्रीलाल जी उन सज्जन के घर पहुँचे । मकान बहुत ही बढ़िया बना था । सब भाइयों ने मिलकर एक छोटी सी कालौनी बना रखी थी । जब हम वहाँ गए तब एक सज्जन पेन्ट पहने निकले । उनसे बातचीत हुई और पाँच कुंड का यज्ञ उसी कालौनी में दूसरे दिन का तय हो गया । कालौनी का उद्‌घाटन था उनके परिवार वाले वहाँ थे ही, कुछ और पड़ौसी आदि आ गए थे । दूसरे दिन यज्ञ का कार्यक्रम हुआ । हमारा परिचय मिश्रीलाल जी ने उन सज्जन से कराया और बतलाया इनका नाम बलवंत भाई है । इन्होंने ही कालौनी बनाई है । सब भाई साथ - साथ रहते हैं । यज्ञ समाप्त हुआ । गुरुदेव का प्रवचन हुआ । मिश्रीलाल जी ने कहा आज जिस मकान का उद्‌घाटन किया है आज रात उसी में ठहरना है । हमने हाँ कर दी । वहीं पर भोजन की व्यवस्था थी । रात को वहीं ठहरना था । बलवंत भाई ने हमको उनके ऊपर का कमरा जो उस मकान में सबसे बड़ा तथा सजा हुआ था बतलाया । उसमें गुरुदेव को ठहराने के लिए ले गए । पास में एक छोटा कमरा था हमको ठहरने को बतला दिया । गुरुदेव कमरे में गए, हम उनको कमरे में छोड़ कर आए । उसी कमरे में आजकल जैसी नये डिजायन की कुर्सियां थीं । हमने भी वह पहली बार ही देखी थीं । गुरुदेव ने कमरा देखा कमरा बहुत शानदार सजा हुआ था । गुरुदेव ने कमरे में कमोड वाली लैट्रीन देखकर हमको बुलवाया और हमसे कहा-मैं इस कमरे में नहीं रह सकता हूँ । बोले-मैं लैट्रीन कहाँ जाऊँगा ? वे बहुत गरम हुए । हमने नीचे आकर बलवंत भाई को बताया तब उन्होंने नीचे सादा लैट्रीन थी उसको बतलाया तथा एक सादा कमरा ठहरने को बतलाया । उस समय बलवंत भाई का पहनावा रहन सहन मिनिस्टरों जैसा था । गुरुदेव हमेशा सादा

जीवन उच्च विचारों को ही पसंद करते थे । आडम्बर उन्हें पसंद नहीं था । गुरुदेव के संपर्क में आने से बलवंत भाई के विचार बदले तो वे आज सम्पन्न होते हुए भी सादा रहन-सहन से रहते हैं । गुरुदेव ने उनके विचारों को बदल दिया ।

अपना काम स्वयं करने की शिक्षा मिली

अहमदाबाद का हमारा पहला दौरा गुरुदेव के साथ था। वहाँ से थर्ड क्लास में बैठकर हम मथुरा आए और जब स्टेशन पर उतरे तब हम कुली-कुली चिल्ला रहे थे । हम कुली की तलाश में गए । इतनी देर में गुरुदेव अपना बिस्तर और हमारा बिस्तर तथा पेटी उठाकर चलने लगे । जब हमने गुरुदेव को सामान ले जाते देखा तब हमने उनसे सामान माँगा और कहा बिस्तर हमको दे दो, परन्तु गुरुदेव ने हमको कुछ सामान नहीं दिया और हमसे कहते आए तुम तो बहुत बड़े आदमी हो । तुम्हारा सामान कुली लेकर ही चलेगा, और जहाँ रिक्शा वाले थे वहाँ तक सामान लेकर आए ।

इस दौरे से हमको ये शिक्षण मिला कि ठाठ-बाट का जीवन जीने वाला व्यक्ति आध्यात्मवादी नहीं हो सकता है । हमेशा सादा जीवन जीना चाहिए और उच्च विचार रखने चाहिए और दूसरा शिक्षण यह दिया कि अपना काम अपने हाथ से करना चाहिए । अपने पास उतना ही सामान रखना चाहिए जिसे स्वयं ले जा सकें । गुरुदेव ने हमसे ये भी कहा-बेटा विदेशों में कुली हैं ही नहीं । वहाँ अपना सामान खुद ही ले जाना पड़ता है । उस दिन से हम अपना कार्य स्वयं ही करने लगे । जो व्यक्ति ठाट बाट का जीवन जीता है और बड़ा आदमी बनता है उसे देखकर हमको ऐसा प्रतीत होता है इसको ज्ञान नहीं है । अज्ञान के कारण ही ऐसा जीवन जी रहा है । गुरुदेव से दो शिक्षण हमने पहले दौरे में ही सीखे । इन शिक्षणों को प्रत्येक भाई बहिन को अपने जीवन में धारण करना चाहिए ।

छत्तीसगढ़ का दौरा

एक बार हम गुरुदेव के साथ छत्तीसगढ़ की दौरे पर गए । पाँच कुंडीय यज्ञ हो रहे थे । हमको पहले रायपुर जाना पड़ा । वहाँ पर पाँचकुंड का यज्ञ था । तीन दिन कार्यक्रम चलते थे । अन्तिम दिन दक्षिणा में एक-एक बुराई छुड़ाई जाती थी और एक अच्छाई ग्रहण कराई जाती थी । गुरुदेव के जितने भी प्रवचन होते थे उनमें वह यज्ञ के साथ ज्ञान यज्ञ की बात कहते थे । वे हमेशा यह कहते थे कि मनुष्य, शरीर और आत्मा से मिलकर बना है । शरीर को भोजन, रहने को मकान चाहिए । आत्मा को भी भोजन कराना चाहिए । आत्मा का भोजन ज्ञान है , इसलिए ज्ञान यज्ञ आवश्यक है । यज्ञ के द्वारा पर्यावरण का शोधन होता है । बीमारियों का इलाज पहले यज्ञ से ही होता था । जब यज्ञ होते थे तब इतनी बीमारियाँ नहीं होती थीं । शरीर के लिए यज्ञ आवश्यक है परंतु आत्मा को नहीं भूलना चाहिए । ज्ञान यज्ञ आवश्यक है । जितनी भी परेशानी हैं सब अज्ञान के कारण ही हैं । दोनों का जोड़ है । जैसे निगेटिव पॉजिटिव दो तार मिलने से बिजली आती है एक तार होता है तब बिजली नहीं आती है ।

रायपुर यज्ञ की पूर्णाहुति शाम को चार बजे हो गई, उसी दिन गुरुदेव को रायपुर से रायगढ़ जाना था । शाम को भोजन रायपुर वालों ने ही करा दिया था । हमने गुरुदेव के साथ भोजन कर लिया और गाड़ी से रायगढ़ के लिए रवाना हो गए । विलासपुर जब हमारी गाड़ी पहुँची तो स्टेशन पर कार्यकर्ता भाई बहिनों की भीड़ थी । लगभग सभी के हाथों में भोजन के टिफिन और मालाएँ थीं । स्टेशन पर गुरुदेव का स्वागत हुआ और जिन भाइयों के हाथ में टिफिन थे वह गाड़ी में हमारे साथ बैठ गए । गाड़ी थोड़ी दूर चली गई तब गुरुदेव ने जो भाई भोजन लाए थे उनसे कहा-लाओ क्या लाए हो ? सबके टिफिन खुलवा लिए और थोड़ा थोड़ा सबके भोजन में से ले लिया । हम रायपुर से भोजन करके आए थे वहाँ से विलासपुर का डेढ़ घंटे का रास्ता था, हमने मना किया । गुरुदेव

ने हमारी तरफ इशारा किया, हमने भी थोड़ा सा भोजन कर लिया । अगले स्टेशन पर गुरुदेव ने उनसे कहा अब तुम गाड़ी से उतर कर चले जाओ, वे सब उतर गए । जब रायगढ़ स्टेशन आया वहाँ स्वागत के लिए बहुत से बहन-भाई स्टेशन पर खड़े थे और हमें जहाँ ठहरना था वहाँ ले गए । उन भाइयों ने भी भोजन की व्यवस्था कर रखी थी । गुरुदेव से कहा-गुरुदेव भोजन करने चलो । गुरुदेव शीघ्र ही तैयार हो गए । हम मना करने वाले थे गुरुदेव ने हमको इशारा किया, हम भी उनके साथ भोजन करने चले गए । थोड़ा भोजन वहाँ भी करना पड़ा । वापस जहाँ ठहरना था आए । सोते समय एक गिलास दूध आया गुरुदेव ने थोड़ा सा दूध भी पिया । हमने सोचा अगर दूध पी लिया तो हमको उल्टी हो जाएगी । हमने उन भाइयों से कहा-भाई हम दवाई ले रहे हैं दूध का परहेज है आज तकलीफ है सुबह दूध पी लेंगे । वहाँ पर दिन में कई घरों में जाना पड़ा वहाँ भी गुरुदेव ने थोड़ा-थोड़ा सा खाया । पूर्णाहुति होने के बाद हम वापस मथुरा के लिए रवाना हुए । रास्ते में मैंने गुरुदेव से कहा कि बार-बार भोजन करने से तो बीमार हो जाएँगे । हमारा तो इस दौरे में पेट ही खराब हो गया । आप के कहने से भोजन लेना पड़ा । आप इशारा नहीं करते तो हम उनको साफ इंकार कर देते गुरुदेव बोले-बेटा भावनाओं का प्रश्न है, ये लोग घर से भोजन बनवा कर लाए अगर हम उनसे मना करते तो वे दुःखी होते । कितनी श्रद्धा-भावना से भोजन बनवा कर लाए थे, इसलिए हमने विलासपुर में भी भोजन किया और रायगढ़ में भी । भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए । भावनाओं पर ध्यान देना ही अध्यात्म है । कभी भी किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए । हमने कहा-गुरुदेव हमारा तो पेट खराब हो गया हम वापस लौट जाएँगे । गुरुदेव ने समझाया-बेटा तुम जब भी हमारे साथ दौरे पर चला करो तब यह बात ध्यान रखा करो कि भोजन के समय पेट के चार हिस्से कर लिया करो । हमेशा एक हिस्सा भोजन करना चाहिए । तीन

हिस्सा हमेशा खाली रखना चाहिए । क्योंकि जहाँ भी जाना पड़ता है वहाँ कुछ न कुछ खाना ही पड़ता है । गुरुदेव का बतलाया गया ये शिक्षण हमने ग्रहण कर लिया। उस दिन से हम अपना पेट खाली ही रखते हैं जिससे हमारा स्वास्थ ठीक रहता है और जहाँ भी जाते है किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाते हैं । जहाँ भी जाते हैं कहते हैं भाई भूख लगी है पर थोड़ा ही खाते हैं और जो भी वह लाता है उसकी प्रशंसा करते रहते हैं । इससे हर भाई प्रसन्न होकर जाता है । इस प्रसंग से सबको शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि पेट में ठूँस-ठूँस कर खाने से बीमारी होती है । एक हिस्सा भोजन, एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा के लिए खाली रखना चाहिए, तभी व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है । जब भोजन स्वादिष्ट होता है तब इतना भोजन कर लेते हैं कि साँस लेना भारी पड़ता है । पेट परेशान रहता है, चिल्लाता रहता है, नींद नहीं आती है ।

आसाम की यात्रा

एक बार गुरुदेव ने कहा-बेटा आसाम चलना है । उधर मिशन का विस्तार बिलकुल नहीं है । उस समय आसाम के लिए मथुरा से बरौनी स्टेशन जाना पड़ता था । मथुरा से बरौनी पहुँचने के लिए एक दिन तथा एक रात लगती है । यह पटना से आगे है । वहाँ से आसाम के लिए दो दिन दो रात लगते हैं । आसाम जाने के लिए उस समय मथुरा से तीन दिन तीन रात का समय लगता था । हमने कहा-जहाँ भी जाने की आज्ञा होगी, चले जाएँगे । माता जी ने रास्ते में खाने के लिए चना मुरमुरा रख दिए थे । रास्ते में जब भोजन का समय हुआ तब गुरुदेव ने चना मुरमुरा खोलकर हमको दिए, हमने चना मुरमुरा खा लिए परन्तु, हमारा पेट नहीं भरा । हमने समझा कहीं अन्य जगह जहाँ अच्छा भोजन मिलेगा गुरुदेव वहीं पर भोजन कराएँगे, परन्तु गुरुदेव ने रास्ते में कहीं भी भोजन नहीं कराया । शाम को भोजन का समय हुआ तब गुरुदेव ने फिर चना मुरमुरा हमको दिए और स्वयं ने भी ले लिए । हमने चना मुरमुरा खाये गुरुदेव से

कुछ नहीं कह सके, परन्तु हमको रात भर नींद नहीं आई भूख लग रही थी । हमने सोचा अगर आसाम तक चना मुरमुरा ही गुरुदेव खिलाते रहे तब तो हमारे प्राण ही निकल जाएँगे । दूसरे दिन जब भोजन का समय हुआ तब गुरुदेव ने चना मुरमुरा फिर हमको दे दिए । हमने गुरुदेव को मना कर दिया और कहा गुरुदेव हमको रात भर भूख के मारे नींद नहीं आई । भोजन बगैर हम नहीं रह सकते । गुरुदेव ने कहा-बेटा अगला स्टेशन आएगा वहीं से पूड़ी ले लेना । अगला स्टेशन आया तब गुरुदेव ने कहा-जा बेटा पूड़ी ले आ । हम पूड़ी लेकर आए सब्जी भी साथ में थी उसमें प्याज भी पड़ी हुई थी जब हम भोजन करने लगे तब उस सब्जी में प्याज थी । हमने कहा-गुरुदेव इस सब्जी में तो प्याज डाली है रूखी पूड़ी खाना कठिन है । गुरुदेव ने कहा-बेटा चाय वाला डिब्बे में चाय बेच रहा है, उससे चाय ले लो, पूड़ी खाने में आसानी रहेगी । हमने चाय ली और उसके सहारे से पूड़ी खाईं । हमने सोचा तीन दिन तीन रात में तो हमारे प्राण ही निकल जाएँगे । गुरुदेव के साथ बड़े बुरे फँस गए । हमने कहा-गुरुदेव जितने भी गुरु महात्मा हैं मिठाई फल दूध रबड़ी रस मलाई खाते हैं और चेलों को भी खिलाते हैं परन्तु आप चना मुरमुरा खा रहे हैं और हमको भी खिला रहे हैं इसका क्या रहस्य है ? गुरुदेव ने कहा-बेटा जिसकी जीभ पर काबू नहीं जो मीठा, पूड़ी-कचौड़ी, पकौड़ी, फल दिन भर खाते हैं वे अध्यात्मवादी हैं ही नहीं । अध्यात्मवादी को सबसे पहले जीभ को ठीक करना पड़ता है । यह जीभ ही ताड़का है पूतना है । इससे मंत्र का जाप करते हैं । जब जीभ ही ठीक नहीं है तब जो मंत्र जप करेंगे वह कैसे सफल होगा । जब बन्दूक सही नहीं है तब कारतूस क्या करेगा । जीवन बंदूक है मंत्र-जप कारतूस है । शेर को मारने के लिए बढ़िया बन्दूक चाहिए । ऋद्धि-सिद्धि पाने के लिए जीवन को ठीक करना पड़ता है । जो भी मंत्र जप करते हैं वे मरी हुई जीभ से जप करते हैं । इससे उनका मंत्र जप करना अनुष्ठान करना सफल नहीं

होता है । मिर्च मसाले मीठा कचौड़ी पकौड़ी खाने से पेट भी खराब रहता है और आदमी बीमार रहता है । सबसे पहले जीभ को ठीक करना पड़ता है । सबसे पहला संयम जीभ का संयम है । प्रत्येक व्यक्ति जप तो करता है, परन्तु उनकी जीभ काबू में नहीं होती, इसीलिए उनको मंत्र की सिद्धि नहीं होती । हमने यह शिक्षण जीवन में ग्रहण किया । इसी कारण हमारा स्वास्थ बिल्कुल ठीक है । ८७ वर्ष में पहुँचकर भी हम अपने आपको जवान और स्वस्थ महसूस करते हैं । अगर किसी को अपना स्वास्थ ठीक रखना है और सौ वर्ष जीना है तो सबसे पहले जीभ को काबू में करना पड़ेगा । जिसकी जीभ काबू में नहीं होती उसका मंत्र कभी सफल नहीं होगा । चाहे रात दिन जप करता रहे । मंत्र के चमत्कार देखने हैं तो जीभ को ठीक करना पड़ेगा । गुरुदेव ने चौबीस वर्ष तक गाय को जौ खिलाकर उसके गोबर से जो जौ निकले उनकी रोटी छाछ में मिलाकर खाते रहे तब उनका गायत्री मंत्र सिद्ध हुआ । गुरुदेव ने मंत्र सिद्धि का रहस्य हमको बतलाया । जो गायत्री मंत्र की सिद्धि चाहते हैं उनको जीभ को काबू में रखना पड़ेगा । आसाम के दौरे में गुरुदेव से जीव पर काबू रखने की बात ही होती रही । गुरुदेव ने कहा-अगर कोई व्यक्ति स्वादेन्द्रिय पर काबू कर ले तो उसका सारी इंद्रियों पर काबू हो जाता है । गुरुदेव ने कहा-जो इंद्रिय सबसे अधिक परेशान करती है वह स्वाद इंद्रिय है और दूसरी कामेन्द्रिय । दोनों पर काबू करने पर गुरुदेव ने कहा-सारी इंद्रियों पर काबू हो जाता है । अब आसाम का स्टेशन तिनसुकिया आने लगा तब गुरुदेव ने कहा-सामान संभालो स्टेशन आ रहा है । हमने सारा सामान इकट्ठा कर लिया स्टेशन पर उतर गए । उस समय आसाम में कोई शाखा नहीं थी । एक धर्मशाला में ठहरे या किसी भाई के घर ठहरे थे ठीक याद नहीं है । रात भर हमको मच्छर काटते रहे । रात भर नींद नहीं आई । सुबह गुरुदेव ने स्नान कर लिया । तब हमने गुरुदेव से कहा-गुरुदेव युग निर्माण होगा या नहीं होगा यह हमको मालूम नहीं, परन्तु

हमारा तो युग निर्माण हो गया । गुरुदेव ने कहा–क्या बात है बेटा बतला । हमने कहा रात भर मच्छरों ने सोने ही नहीं दिया है । अगर हम यहाँ तीन चार दिन रहे तो बीमार पड़ जाएँगे । । गुरुदेव ने कहा–बेटा इसका इलाज हम तुमको रात को सोते समय बतला देंगे । गुरुदेव ने हमसे कहा बेटा बाहर जा और एक दो आदमी ला उनसे कार्यक्रम के संबंध में कुछ बात करेंगे उन्हें अपना उद्देश्य बताएँगे । आठ दस भाइयों को लेकर हम आए । गुरुदेव उनसे बात करते रहे । पहले स्वास्थ्य के विषय में बच्चों परिवार, दुकान नौकरी सबके बारे में उनसे पूछते रहे फिर मिशन की बातें उनसे करने लगे । दिन भर वहाँ जिनको हम लाते थे उनसे बातें करते रहे । रात को सोने का समय आया तब हमने गुरुदेव से कहा–गुरुदेव मच्छरों ने तो अभी से हम पर वार करना शुरू कर दिया है इनका इलाज बताएँ । गुरुदेव ने कहा–बेटा तेरे पास चादर है इससे चारों तरफ बदन को ढक कर सो जा, सिर्फ थोड़ी सी आँखें ही खुली रहें । हमने कहा–अगर हम गुरुदेव के साथ एक माह दौरे पर रहे तब हम बीमार हो जाएँगे । हमने गुरुदेव से कहा–गुरुदेव हम जब अध्यात्मवादियों को, कथावाचक, महात्माओं, प्रवचनकर्त्ताओं को देखते हैं तो उनके खाने की अलग व्यवस्था होती है । प्रवचन जो करते हैं उनको गरम हलुआ खिलाते हैं जिससे गला ठीक रहे । भोजन में पूड़ी, मिठाई, सब्जी आदि चीजें होती हैं और ठहरने को अलग मकान । जो सबसे बड़ा पूंजीपति होता है जिसके मकान में सब साधन होते हैं उनके यहाँ सबको ठहराया जाता है । सोने का अलग तथा मिलने वालों का अलग कमरा होता है और चरण छूने वालों की लाइन लगी रहती है । दो तीन घंटे सुबह चरण छूने का ही कार्यक्रम चलता है । हम तो समझते थे कि हम भी ऐसे अध्यात्मादी बनेंगे पर आपने तो हमारा कचूमर ही निकाल दिया । गुरुदेव ने कहा–बेटा जो शारीरिक सुख सुविधाओं को देखते हैं उसको केवल शरीर ही दीखता रहता है । वह उसकी पूर्ति में ही लगा रहता

है । ऐसे धर्माचार्य जो होते हैं वो अध्यात्मवादी नहीं होते । वे सब शरीर को ही भोजन कराते हैं उसी का ही ध्यान रखते हैं । जो इसका मालिक आत्मा है उसकी तरफ ध्यान ही नहीं देते, क्योंकि इस समय यह परम्परा सी बन गई है कि गुरु के बाद जो उसका चेला होता है उसको गद्दी पर बिठा देते हैं । उसने कभी त्याग बलिदान किया या नहीं, वह अध्यात्म को जानता है या नहीं । जो व्यक्ति अध्यात्म से कोसों दूर है उनको अध्यात्म का पता नहीं है वे गद्दी पा जाते हैं । अध्यात्मवादी शरीर का ध्यान नहीं आत्मा का ध्यान रखता है उसको भोजन कराता है । आत्मा का भोजन स्वाध्याय है । तुझे मालूम है कि रेल में सारे रास्ते हम पुस्तक पढ़ते आते हैं । व्यक्ति की आत्मा मर गई है । तभी तो अध्यात्म की ऐसी हालत हो गई है । कुछ प्रवचन कुछ मंत्र याद कर लिए हैं उनको ही कहते रहते हैं और अपने अहम् की पूर्ति करते रहते हैं । बेटा अध्यात्मवादी उसको कहते हैं जो अपने लिए कम से कम खर्च करता है और दूसरों की उदारता पूर्वक सहायता करता रहता है । अपने शरीर का नहीं आत्मा का ध्यान रखता है । गुरुदेव के आसाम के दौरे से हमको जो शिक्षण मिला जहाँ तक हो सका अपने जीवन में धारण किया । यही कारण है कि हमको अध्यात्म का पूरा-पूरा लाभ मिला । कोई भी व्यक्ति उनके शिक्षण को अपना कर अध्यात्म का पूरा-पूरा लाभ उठा सकता है ।

जब गुरुदेव ने बच्चे की गंदगी साफ की

हम गुरुदेव के साथ राजस्थान के दौरे पर गए । उस समय में मिशन बहुत ज्यादा नहीं फैला था । एक भाई के पास हम गुरुदेव के साथ गए । उस समय जो मिशन का कार्य करते थे गुरुदेव उनके घरों पर जाते थे । वहाँ पर वह भाई तो नहीं मिले बहिन मिलीं । गुरुदेव को देखकर बहन भारी प्रसन्न हुई । एक कमरे में हम और गुरुदेव बैठ गए । बहन की गोदी में छोटा बच्चा था, उसको वह पलंग पर लिटाकर जाने लगी, तब गुरुदेव ने उससे कहा-बेटी बच्चे को हमको दे दो । गुरुदेव ने बच्चा

गोदी में ले लिया । बहन चाय बनाने चली गई । बच्चे ने गुरुदेव की गोदी में टट्टी कर दी । हमने देखा तो हम उस बहन को पुकारने वाले थे, परन्तु गुरुदेव ने हमारी तरफ इशारा करके मना कर दिया और गुरुदेव ने वह बच्चा हमें दे दिया । गुरुदेव ने पास के ही कमरे में नल था उसमें अपने कपड़े साफ किए और हमसे कहा ला बच्चे को दे । हम बच्चे को साफ कर दें । हमने गुरुदेव से मना कर दिया और कहा हम ही इसको साफ कर देते हैं । हमने नल पर जाकर बच्चे को जो टट्टी लगी थी उसको साफ किया और अपने हाथों को अच्छी तरह साबुन लगाकर धोया । बच्चा गुरुदेव को दे दिया । हमको उस बहन पर बड़ा गुस्सा आ रहा था । बच्चे को देते समय उसने नीचे कपड़ा लगा कर क्यों नहीं दिया । कपड़ा लगाकर देती तो गुरुदेव के कपड़े खराब नहीं होते । हम भयंकर नाराज थे । गुरुदेव हमारी तरफ देखते रहे, वह लड़की चाय लाई गुरुदेव उससे उसके परिवार की घर की कठिनाइयों के बारे पूछते रहे जैसे एक पिता अपनी लड़की से सारी बात पूछता है । हमको गुस्सा आ रहा था, उसके घर से हम चले तब हम बार-बार हाथों को सूँघते थे कभी कपड़ों को सूँघते थे । गुरुदेव देख रहे थे । भोजन करने गए तब हम सब्जी रोटी को भी सूँघने लगे । गुरुदेव ने कहा-क्या पागल हो गया है ? सुबह हम प्रति दिन गुरुदेव के पास बैठते थे, जैसे ही हम गुरुदेव के पास पहुँचे, गुरुदेव ने कहा-कल तू उस लड़की पर गुस्सा क्यों हो रहा था ? हमने कहा-गुरुदेव लड़की यदि बच्चे को कपड़ा नीचे लगा देती तो आपके कपड़े खराब नहीं होते । फिर कहा-तू हाथों को दिन भर क्यों सूँघता था ? भोजन को भी, कपड़ों को भी सूँघता रहा । हमने कहा-गुरुदेव हमको हाथों और कपड़ों में बदबू आती थी, क्योंकि हमने उस बच्चे की टट्टी साफ की थी । गुरुदेव ने कहा-जब तुम अपनी टट्टी रोजाना साफ करते हो तब बदबू क्यों नहीं आती है । फिर कहा-तेरी लड़की जब आती है उसके बच्चों ने तुम्हारे कपड़ों पर टट्टी की है या नहीं । हमने कहा-

गुरुदेव बीसियों बार की है । तब तू उससे नाराज क्यों नहीं हुआ ? क्योंकि वह तेरी अपनी लड़की थी और यह लड़की दूसरे की थी । बेटा समाज की बेटी अपनी बेटी है । जब हमको अपनी बेटी पर गुस्सा नहीं आता तब दूसरे की बेटी पर क्यों गुस्सा आता है ? हम समझ गए गुरुदेव का दृष्टिकोण कितना ऊँचा है । सभी में अपना ही कुटुम्ब देखते हैं । सारे बच्चे लड़के, लड़कियाँ सब हमारे ही है । हमने वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना गुरुदेव में देखी । अगर यह भावना हम सब बहन भाइयों में आ जाय तब सारे समाज की समस्याएँ हल हो सकती हैं । गुरुदेव जब किसी दु:खी को देखते थे तब उनको बड़ी पीड़ा होती थी । वह हमेशा ही अपने सुखों को बाँटते और दूसरे के दु:खों को बँटाते थे, ऐसे थे हमारे गुरुदेव । उनके साथ रहकर हम अपने को बड़ा ही भाग्यशाली मानते हैं । हमने इस प्रसंग से शिक्षा ली कि सब में भगवान को देखना चाहिए । सारा विश्व ही अपना कुटुम्ब है, परिवार है । सारा समाज अपना ही है । उस दिन से हममें सबके प्रति अपनेपन की भावना आ गई । सभी बहन भाइयों को इस प्रसंग से शिक्षा लेना चाहिए कि सारा विश्व ही अपना परिवार है । हम सब भगवान के पुत्र सब बहन भाई हैं । गुल्देव कार्यों के द्वारा शिक्षण देते थे । जो वे कहते वही करते थे । हम लोग कहते तो हैं पर करते नहीं । हमारी करनी और कथनी एक होनी चाहिए ।

गुरुदेव ने नमक मिला दूध पिया

एक बार हम गुरुदेव के साथ दौरे पर थे । एक बहन के घर गए, बहन गुरुदेव को देखकर भारी प्रसन्न हुई । गुरुदेव को और हमको बिठाकर रसोई में चली गई । वहाँ से दूध गर्म करके लाई । वह इतनी प्रसन्न थी कि दूध में जब शक्कर डालने लगी तो शक्कर और नमक का डिब्बा पास-पास ही रखा था, शक्कर की बजाय नमक डालकर दूध में ले आई । पहले गुरुदेव को एक गिलास दूध दिया, गुरुदेव ने प्रेम से दूध पी

लिया । फिर हमारे लिए गिलास में दूध लाई । जैसे ही हमने दूध पिया उसमें नमक मिला था, एक घूट पीकर ही हमको फुरफुरी आ गई । गुरुदेव ने हमको इशारा किया पी ले । हमने कहा–गुरुदेव नमक का दूध है हम नहीं पी सकते । जब बहन ने सुना कि दूध में नमक मिला कर दिया है तो उसका आधा खून सूख गया और उसको भारी दुःख हुआ । गुरुदेव ने हँसकर कहा–बेटी हमारे दूध में तो शक्कर थी । इसी के दूध में नमक होगा । इस पर लड़की बोली–गुरुदेव एक ही डिब्बे से मुट्ठी भरकर आधी आपके दूध में और आधी पंडित जी के दूध में डाली है । बेचारी लड़की बड़ी दुःखी हुई । गुरुदेव ने बाद में मुझसे कहा–यदि तू दूध पी लेता तो क्या हो जाता ? बेटा नमक का दूध पी लेता तो तेरा पेट साफ हो जाता । नमक कोई जहर थोड़े ही है बेचारी को कितना कष्ट हुआ कि हमने गुरुदेव को नमक का दूध पिला दिया । गुरुदेव हमेशा दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखते थे । गुरुदेव ने कहा–बेटा किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना पाप है । भविष्य में ध्यान रखना ऐसी गलती कभी मत करना । नमक और शक्कर तो थोड़ी सी देर का जीभ का स्वाद है । अगर ऐसी गलती तुमसे हो जाती, हमको चाय पिलाते और उसमें भूलवश नमक डाल देते और तुमको बाद में पता चलता तो तुमको कितना दुःख होता । बेटा हमेशा अपने सुखों को बाँटना और दूसरों के दुःखों को बँटाना ही अध्यात्म है । इससे हम सबको शिक्षण लेना चाहिए कि किसी की भावनाओं को कभी ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए ।

रात्रि के एक बजे खीर खाई

एक बार हम गुरुदेव के साथ विलासपुर यज्ञ में गए । वहाँ पर उमाशंकर चतुर्वेदी और विश्वकर्मा जी ने यज्ञ का कार्यक्रम रखा था । उस समय विलासपुर में दो ही कार्यकर्ता मुख्य थे । उमाशंकर चतुर्वेदी बहुत ही भावनाशील थे । उन्होंने आस–पास की शाखाओं में भी गुरुदेव के प्रवचनों का कार्यक्रम बना दिया था । शाम को प्रवचन एवं भोजन

नैला शाखा (विलासपुर का गाँव) में रखा था । वहीं पर विश्राम का कार्यक्रम था, परन्तु चतुर्वेदी जी ने इतने प्रवचन के कार्यक्रम शाखाओं में रख दिए कि हमको नैला शाम को छः सात बजे पहुँचना था, परन्तु कार्यक्रम इतने व्यस्त थे कि हम रात्रि के ग्यारह बजे नैला पहुँचे । जनता उस समय भी बैठी थी । गुरुदेव का प्रवचन हुआ रात का एक बज गया । गुरुदेव के ठहरने सोने की व्यवस्था मोती लाल कपड़े वाले के घर पर थी । रात में देरी होने से चतुर्वेदी जी ने रास्ते में ही एक शाखा में भोजन करा दिया था । रात को नैला में गुरुदेव को सिर्फ अब सोना ही था और हम मोतीलाल जी की पत्नी से बात करने लगे । उस समय शादी होकर एक दो बार ही ससुराल आई थी । लड़की ही थी । हमने कहा-बेटी ठीक है कोई कष्ट तो नहीं है । लड़की की आँखों में आँसू आ गए । पंडित जी मुझे घर में कहीं कोई कष्ट नहीं परन्तु इस समय मैं बहुत दुःखी हूँ । हमने कहा-बता क्या दुःख है तुझे । उसने कहा-आज हमारे यहाँ गुरुदेव का भोजन था, हमने तो खीर बनाई है, उसमें मेवा डाली है । बड़ी ही भावना से खीर बनाई थी कि गुरुदेव को खीर खिलाएँगे, परन्तु गुरुदेव रात को एक बजे हमारे घर पर आए । इसका मुझको भारी दुःख है । हमने उसकी बात सुनी और गुरुदेव के पास गए । हमने कहा-गुरुदेव मोतीलाल की पत्नी ने खीर बनाई है । वह कह रही है कि गुरुदेव की खीर केवल मेवा डालकर ही नहीं भावना से खीर बनाई है, परन्तु गुरुदेव ने खीर खाई नहीं क्योंकि गुरुदेव तो रात को एक बजे हमारे घर पर आए, इसका हमें भारी दुःख है । गुरुदेव ने मुझसे कहा-जा शीघ्र उस लड़की को बुलाकर मेरे पास ला । मैं बुलाकर उस लड़की को गुरुदेव के पास ले गया । गुरुदेव ने लड़की से कहा-बेटी तू मुझे एक बात बतला कि तुझे कैसे मालूम पड़ गया कि एक महीने से मेरे मन में खीर खाने की इच्छा है, परन्तु मुझे कहीं खीर नहीं मिली । जा बेटी जल्दी जा और तू मेरे लिए खीर लेकर आ । लड़की एक दम प्रसन्न हो गई और दौड़कर चौके

से खीर का कटोरा लेकर आ गई । गुरुदेव ने सिर्फ एक दो चम्मच ही खीर खाई । वह खीर की प्रशंसा ही अधिक करते रहे । उसका दु:ख एक दम प्रसन्नता में बदल गया । हमारे साथ और दस पन्द्रह भाई थे । फिर क्या था सब खीर खाने लगे और थोड़ी-थोड़ी खीर सबने खाई । लड़की भारी प्रसन्न हुई । गुरुदेव हमेशा दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखते थे । इससे हम सबको शिक्षण लेना चाहिए कि कभी किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाएँ । ऐसे थे गुरुदेव उन्होंने इतना बड़ा मिशन खड़ा कर दिया । अगर हम उनके शिक्षण को ग्रहण करें तो मिशन का कार्य हजार गुना बढ़ सकता है ।

गुरुदेव ने प्रथम श्रेणी में यात्रा स्वीकार नहीं की

दूसरे दिन हम गुरुदेव के साथ विलासपुर आए । वहाँ से हमको मथुरा आना था । हमने उमाशंकर चतुर्वेदी को पत्र लिख दिया था कि हम दोनों का रिजर्वेशन तृतीय श्रेणी में कराना, क्योंकि गुरुदेव तृतीय श्रेणी में ही चलते थे । चतुर्वेदी का पत्र भी हमारे पास मथुरा आ गया था कि हमने तुम्हारा तथा गुरुदेव का रिजर्वेशन करा दिया है । जब विलासपुर स्टेशन पर हमने उनसे टिकट माँगा तो उन्होंने हमें जो टिकट दिया वह प्रथम श्रेणी का था । हमने उनसे कहा-भाई तुमने प्रथम श्रेणी में रिजर्वेशन क्यों कराया गुरुदेव नाराज होंगे । चतुर्वेदी बहुत ही भावना शील थे उन्होंने हँस कर कहा-हमको तृतीय श्रेणी का टिकिट मिला नहीं, हमने प्रथम श्रेणी का करा दिया है, हम गुरुदेव से कह देंगे, जब गाड़ी आयी तब गुरुदेव से प्रथम श्रेणी में बैठने को कहा-गुरुदेव ने मना कर दिया और तृतीय श्रेणी में भीड़ में घुस गए । सामान प्रथम श्रेणी के डिब्बे में रखा था । हम सामान के पास प्रथम श्रेणी में बैठे । गुरुदेव के साथ तृतीय श्रेणी में ही विलासपुर के अन्य भाई साथ बैठे । इसके बाद हमेशा जब भी मिलते कहते कि अब हम प्रथम श्रेणी में चलते हैं । उनके पास जब भी जो भी आता उससे कहते अब हम प्रथम श्रेणी में चलते हैं, हम बड़े

आदमी हो गए हैं । करीब चार पाँच माह तक जो भी उनके पास आता और उस समय यदि हम उनके पास होते तो कहते कि अब हम फर्स्ट क्लास में चलते हैं । काफी समय हो गया तब माता जी ने कहा-गलती चतुर्वेदी जी ने की है और तुम इस लड़के के पीछे पड़ गए हो । क्या इस लड़के की जान ही निकाल लोगे ? इसमें इस लड़के का क्या दोष है ? तब उन्होंने कहना बंद किया । वह अपने लिए कम से कम खर्च करते थे ।

बड़ौदा का पंच कुंडीय यज्ञ

हम गुरुदेव के साथ बड़ौदा गए । वहाँ पर पाँच कुण्ड का यज्ञ रखा था । जिस भाई ने यज्ञ कराया था, डभोई का मूल निवासी था । उसका मकान भी डभोई में ही था । गुरुदेव को ऐसे मकान में ठहराया जहाँ कमरा बंद था । हवा के लिए कोई रोशनदान तक भी नहीं था । हमने गुरुदेव का सामान उसमें रख दिया और गुरुदेव के साथ वहाँ दिन में ठहरे, पर उस मकान में बड़ी घुटन थी । हमारी जान पहिचान वहाँ पर किसी से नहीं थी । यज्ञ में ही भाई रसिकलाल और मनु भाई से हो गई थी । यह दोनों ही श्रेयस विद्यालय में शिक्षक थे । हमने इनसे बातें की और कहा-भाई कोई ऐसा मकान बतलाओ जिसमें कम से कम हवा तो आती हो । इन दोनों ने कहा पास में ही श्रेयस विद्यालय है, उसी में हम कार्य करते हैं, वहाँ के प्राचार्य से मिलवा देंगे । उसमें सभी कमरे हवा दार हैं और यज्ञशाला के पास भी हैं । आप उनसे बात कर लेना । दोनों भाई हमको श्रेयस विद्यालय के प्राचार्य के पास ले गए, उनसे बातें की । उन्होंने एक कमरा हमको बतला दिया और कहा-आप यहाँ पर ठहर सकते हैं । हमने रसिक भाई मनु भाई से पूछा-इनका नाम क्या है ? उन्होंने कहा-रजनीकांत जानी साहब है । हम गुरुदेव और सामान को साथ लेकर श्रेयस विद्यालय में आ गए । कमरा साफ और हवादार था । हमने प्राचार्य महोदय से कहा अगर एक बाल्टी गर्म पानी की सुबह

आप व्यवस्था कर दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी । हमारे गुरुदेव गर्म पानी से ही नहाते हैं । उन्होंने रसोई में जो भाई काम करता था, उससे कह दिया । सुबह हमको गर्म पानी मिल गया, परन्तु सुबह चाय नहीं मिली । दूसरे दिन हमने जानी साहब से कहा-अगर सुबह आप चाय की व्यवस्था कर दें तो बड़ी कृपा होगी । उन्होंने चाय की भी व्यवस्था करा दी । हम तीन चार बार उनके पास गए । उनसे हमारी काफी जान-पहिचान हो गई और जिस भी चीज की आवश्यकता होती, उसके लिए निःसंकोच कह देते और वे उसकी व्यवस्था भी कर देते थे । इस प्रकार तीन दिन हम श्रेयस विद्यालय में ठहरे । वहाँ पर हमारी सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं से काफी जान पहिचान हो गई । हमने कहा-हम जब भी बड़ौदा आएँगे तब श्रेयस विद्यालय में ठहरा करेंगे । गुरुदेव से भी उन सबकी बातें होती थीं । गुरुदेव का वहाँ के भाई बहिनों पर बड़ा असर पड़ा जब आने लगे तब उन्होंने गुरुदेव का अभिनन्दन भी किया । इस यज्ञ के कार्यक्रम से हमारी बड़ौदा में काफी बहन भाइयों से मुलाकात हो गई । उस समय मिशन इतना फैला नहीं था । कार्यक्रमों में बड़ी परेशानी उठानी पड़ती थी ।

गुरुदेव ने फटा कुर्ता पहिना

हम सन् १९६७ के आखरी दिनों में तपोभूमि आए थे । ६८ से ७० तक गुरुदेव के साथ हम अधिकतर क्षेत्रों में दौरे पर ही रहे । २० दिन का दौरा रहता था । दस दिन ही गायत्री तपोभूमि रहते थे । एक बार हम उनके साथ रायपुर गए । गुरुदेव प्रवचन के बाद वहाँ के बहन भाइयों से मिल रहे थे । अधिकतर वह खड़े-खड़े ही अधिक से अधिक भाई बहिनों से मिलते थे क्योंकि थोड़े समय में बहुत भाइयों से मिलना होता था । परिवार घर शाखा का कार्य कैसा चल रहा है ? यह सब गुरुदेव पूछते थे । एक बार जब वह किसी से मिल रहे थे, हमने देखा उनका कुर्ता फटा हुआ था । हम उनके साथ जहाँ पर ठहरे थे, वहाँ पर गए और

उन्होंने कुर्ता उतार दिया । तब हम उनका बक्सा खोलकर देख रहे थे । गुरुदेव भोजन करके लौटे थे । उन्होंने कहा-क्या खट-पट कर रहा है । हमने कहा-गुरुदेव आपका कुर्ता फटा है । हमने बक्स खोलकर देखा, उंसमें तीन कुर्ता रखे हैं तीनों ही फटे हैं । गुरुदेव ने कहा-फटे हैं तो रहने दो । हमने कहा-नहीं गुरुदेव फटा कुर्ता पहनना ठीक नहीं है । गुरुदेव ने कहा-क्या हमको फटे कपड़े नहीं पहनने चाहिए । उन्होंने कहा-ला मेरे पास कुर्ता । हम उनके पास ले गए । उन्होंने एक कुर्ता फाड़ दिया और कहा-जहाँ पर तीन कुर्ता फटे हैं वहाँ पर इस फटे कुर्ते का कपड़ा लेकर उनको सिलवा ला । हम बाजार गए और तीन कुर्तों को उस कुर्ते से सिलवा लाए । गुरुदेव ने कहा-तीन कुर्तों से मेरा काम चल जायगा । गुरुदेव थेगड़ी लगे कुर्ते को ही पहनते रहे । ऐसे थे हमारे गुरुदेव । गुरुदेव से शिक्षण लेना चाहिए कि उनका जीवन कितना सादा था । कभी भी उन्होंने शरीर का ध्यान नहीं किया, वह आत्मा का ध्यान रखते थे । शरीर को वाहन और आत्मा को उसका मालिक बतलाते थे । आज हम आत्मा को भूल गए । सारे दिन खाने, पहनने, शरीर सुख का ही ध्यान रखते हैं और जो आत्मा हमारी मालिक है उसको भूल गए हैं ।

जब गुरुदेव ने मुर्दे में प्राण डाले

एक बार हम फिर उनके साथ गुजरात के दौरे पर गए । आनंद में पाँच कुण्ड का यज्ञ था । हम गुरुदेव के साथ शांति भाई के निवास स्टेशन रोड पर ठहरे थे । ऊपर के हिस्से में हम और गुरुदेव ठहरे थे, नीचे शांति भाई का परिवार रहता था । उसी में नवसारी के मगन लाल गाँधी भी ठहरे थे । जब गुरुदेव गुजरात जाते थे तब मगनलाल नवसारी भी उनके साथ दौरे पर रहते थे । मिशन का काम करते थे । रात को वह शांति भाई के ही घर पर ठहरे । मगन भाई को दिल का दौरा पड़ा । वहाँ पर डाक्टरों को बतलाया । सुनकर बहुत से व्यक्ति इकट्ठे हो गए । रात का समय था । डाक्टरों ने जबाब दे दिया कि इनमें अब जान नहीं रही । शांति भाई हमारे

पास ऊपर आए, जहाँ हम ठहरे थे । उन्होंने कहा–मगन भाई को दिल का दौरा हुआ और वह शरीर छोड़ गए । हम तो बड़े संकट में फँस गए हैं । हम उनके साथ नीचे मगन भाई के पास गए । उनकी आँखें ठहरी थी, श्वांस चल नहीं रही थी । हमने जब उनको देखा, हमको भारी दुःख हुआ । हम गुरुदेव के पास गए । गुरुदेव को जगाया और कहा–मगन भाई शरीर छोड़ गए । गुरुदेव बोले–मुझे नीचे ले चलो । गुरुदेव हमारे साथ नीचे गए । कमरे से सबको बाहर निकाल दिया, हम उनके साथ थे । मगन गाँधी के शरीर पर तीन बार हाथ फेरा और उनके सिर को हाथ लगाकर कहा–उठ मगन लाल उनके हाथ लगाते ही मगन लाल उठकर बैठ गए । गुरुदेव से बात करने लगे । हमसे गुरुदेव ने कहा–बेकार हल्ला मचा रखा था, जा चाय ले आ । हमने शांति भाई की पत्नी से चाय बनाने को कहा । वह एक कप चाय बनाकर ले आई । मगन लाल गाँधी चाय पीने लगे । हम तो उनसे दूर ही खड़े थे । हम सोच रहे थे कहीं ये भूत तो नहीं है । उनसे दूर ही खड़े थे, क्योंकि उनकी डैड बॉडी को हमने देखा था । गुरुदेव ने कहा–मगन लाल एक कप चाय और पिओगे । उसने कहा–हाँ एक कप और मँगवा दो । हम दूसरा कप चाय बनवा कर लाए । दूसरे कप को भी मगन लाल पी गए और गुरुदेव के साथ खड़े होकर कमरे में टहलने लगे । गुरुदेव ने कहा–अभी मगन लाल तुमको बहुत काम करने हैं । अभी तो बद्रीनाथ की यात्रा भी तुमको करनी है । उसके बाद वह ग्यारह साल और जीवित रहे और बद्रीनाथ भी गए थे । गुरुदेव के पास इतनी शक्ति थी कि वह मरे आदमी को भी जिंदा कर देते थे । उनके पास इतना तपोबल था । ग्यारह वर्ष बाद मगनलाल गाँधी ने शरीर छोड़ा था ।

गुरुदेव के साथ जब हम क्षेत्रों के दौरों पर जाते थे, वे कहते थे कि एक कागज पैन निकाल कर रख देना । गुरुदेव रेल में नीचे की सीट पर सोते थे । रात को दो बजे रेल की बत्ती जला कर लेटे–लेटे लिखते रहते

थे । हम जब उठते तब उनके लेखों को संभाल कर रखते थे । सामाजिक बुराइयों पर उनको बड़ा क्रोध आता था । दिन में रास्ते में पुस्तकें पढ़ते रहते थे । अगर कहीं बस में जाना पड़ता था तो बस में भी लिख लेते थे । समाज के प्रति उनको बड़ी खीझ थी । एक मिनट भी कभी बरबाद नहीं करते थे ।

विधवा का सम्मान बढ़ाया

हम उनके साथ दौरे पर थे । मध्य प्रदेश में यज्ञ था, उसमें उनके साथ गए थे । एक दिन एक हॉल में तीन चार सौ बहिनें बैठी थीं। गुरुदेव से बातें भी कर रही थीं और सभी हँस भी रही थीं, क्योंकि गुरुदेव सबको बहुत हँसाते थे । उनके पास जो भी बैठ जाता था, हँसी के फुब्बारे उठा करते थे । सभी बहिनें गुरुदेव की बातों पर हँस रही थीं । उन सबमें एक लड़की गुम–सुम सी अलग बैठी थी, उसको हँसी नहीं आ रही थी । गुरुदेव हमेशा देखते रहते, इनमें दुःखी कौन है ? उनकी नजर जब उस लड़की पर पड़ी तो लड़की को पास बुलाया और उससे कहा–बेटी तुझे क्या दुःख है । गुरुदेव ने और बहिनों की तरफ देखा, सब हँस भी रही थीं और सब श्रृंगार करके बैठी थीं । बढ़िया साड़ी–जेबर पहन रखे थे और वह लड़की सफेद धोती पहने थी कोई जेबर भी नहीं पहने थी । सादा वेश में थी । गुरुदेव ने उस लड़की से पूछा–बेटी तुझे क्या कष्ट है तू हँस भी नहीं रही है ? लड़की ने कोई उत्तर नहीं दिया । गुरुदेव उस लड़की को अलग ले गए, हम भी उनके साथ चले गए । जहाँ भी जिससे भी गुरुदेव बात करते थे, उनको हम अवश्य सुनते थे । अलग ले जाकर लड़की से कहा–बेटी बता तुझे क्या दुःख है । तेरे सारे दुःख दूर कर दूँगा । लड़की लम्बी साँस लेकर, आँखों में आँसू भरकर बोली गुरुदेव मुझे कोई दुःख नहीं है । गुरुदेव ने कहा–बेटी तू सुस्त क्यों बैठी है, क्या बात है ? उस लड़की को बताना पड़ा । उसने कहा गुरुदेव मेरी बचपन में ही शादी हो गई थी, मेरे पति का स्वर्गवास हो गया । यह मेरे दुर्भाग्य

की बात है, इसका मुझे दुःख नहीं है । मैं कुछ पढ़ी थी और आगे पढ़कर शिक्षक हो गई हूँ । अपना सब कार्य करती हूँ दिन में पढ़ाने जाती हूँ, परन्तु मुझे दुःख इस बात का है कि मैं जो १०० अखंड ज्योति मँगाती हूँ । उस समय शायद अखंड ज्योति १५ हजार ही छपती थी । उसको मँगाकर यदि सुबह किसी के घर देने जाती हूँ तो सभी मुझसे नाराज होते हैं कि तू विधवा है, सुबह आकर अपना मुँह हमको दिखला दिया, न जाने आज का दिन कैसा निकलेगा ? सब गाली भी देते हैं । मैं चुप होकर सुन लेती हूँ और वापस चली आती हूँ । शाम को अखंड ज्योति बाँटने जाती हूँ तब भी यही कहते हैं शाम को आकर मुँह दिखला दिया । कल से हमारे घर मत आया कर । जिधर जाती हूँ सभी मुझ से घृणा करते हैं । कभी-कभी अखंड ज्योति नहीं बाँटती हूँ तो उनके पैसे अपने वेतन में से भरती हूँ । अपना खर्चा कम करती हूँ । मुझे बस इसी बात का दुःख है । कभी-कभी सोचती हूँ आत्म हत्या कर लूँ, परन्तु जब आपके विचार पढ़ती हूँ तब ज्ञान होता है कि बुरे विचार कभी नहीं आने देना चाहिए । जब बुरे विचार आवें तो जैसे चोर घर में घुसता है और उसको डण्डा लेकर घर से भगा देते हैं इसी प्रकार भगा देने चाहिए । मैं आपके विचार पढ़ती हूँ, फिर भी मुझे इस बात का भारी दुःख है । यह कहकर वह लड़की फूट-फूट कर रोने लगी । गुरुदेव भी उसके साथ रोने लगे । हमारी भी आँखों में आँसू आ गए । गुरुदेव ने लड़की से कहा-चल बेटी मेरे साथ चल । उस लड़की को साथ लेकर गुरुदेव जहाँ पर और बहनें बैठी थीं वहाँ आए और उनके पास आकर कहा-बेटी मैं अपनी बात नहीं कहता हूँ वेद की बात कहता हूँ । तू तो पवित्र गंगा जैसा जीवन जीती है, श्रम करती है, लोक मंगल का कार्य करती है, ब्रह्मचर्य से रहती है, तू साक्षात गंगा है । जो तेरे दर्शन करेगा सीधा स्वर्ग को जायगा और जो यह सब बैठी हैं, शृंगार करती हैं, फैशन करती हैं, बच्चे पैदा करती हैं, देश के सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ

पैदा करती हैं, जो भी इनके दर्शन करेगा, सीधा नरक को जाएगा। हमने उसी दिन उनको इतना क्रोधित होते देखा। जिनके भीतर करुणा, दया प्रेम नहीं वह कितना ही भजन करे, बेकार है। किसी के दुःख को बँटाना और अपने सुख को बाँटना ही धर्म है। जो दुःखी है उसकी सहायता करनी चाहिए, आदर करना चाहिए। जो दुःखी है उसको और दुःख देना पाप है। जो भी व्यक्ति यह कहता है कि विधवा के दर्शन करने से पाप लगता है, वह सबसे बड़ा पापी है। बेटी तू तो शुद्ध और पवित्र है। जो भी बहिनें वहाँ बैठी थीं, सब ने गर्दन नीची कर लीं। हम भी चुपचाप खड़े देख रहे थे। थोड़ी देर के बाद जब उनका गुस्सा ठंडा हुआ तब गुरुदेव ने उनसे कहा–कहो बेटियो आपको क्या कहना है ? सब बेचारी चुपचाप बैठी रहीं। शान्त होकर अपने–अपने घरों को जाने लगीं। हम दरवाजे पर खड़े हो गए और बहनों से कहा–बहनों गुरुदेव की बात का बुरा मत मानना, गुस्सा है उन्होंने जो भी आपसे कहा है, विचार करना। उनमें अधिकतर शिक्षित बहनें थीं। उन्होंने कहा भाई साहब गुरुदेव की बात का बुरा क्यों मानेंगे ? उन्होंने सब कुछ सच कहा है। आज गुरुदेव ने हमारी आँखें खोल दी हैं। हमारा जो अज्ञान था उसको दूर कर दिया है। विधवा तो शुद्ध पवित्र जीवन जीती है। स्वयं अपने लिए कमाती है। आज से हम जब भी किसी विधवा का दर्शन करेंगे, उसमें गंगा माता के दर्शन करेंगे और उसको कोई भी कष्ट होगा उसकी मदद करेंगे। उसके दुःख को बँटाएँगे और विधवाओं के दर्शन करने में जो पाप समझते हैं उनको समझाएँगे। गुरुदेव ने हमारी आँखें खोल दी हैं, उन्होंने हमारा विवेक जगा दिया है। ऐसा गुरु हमको मिला है हम अपने को सौभाग्य शाली मानती हैं। अगर देश में ऐसे गुरु हों तो देश में जो अज्ञान फैला है शीघ्र ही दूर हो जाय। लड़की खड़ी थी उसका चेहरा एकदम खिल उठा। जो लड़की दुःखी थी, वह अब एक दम प्रसन्न चित्त थी। इस प्रसंग से सबको शिक्षा लेनी चाहिए और विधवाओं के प्रति जो

धारणा बनी है कि उसके दर्शन करना अशुभ है, उसको दूर करना चाहिए । उनके दर्शन करना शुभ है सोचकर अपना दृष्टिकोण बदल देना चाहिए । विधवाओं की सहायता करनी चाहिए । अगर उसकी कोई भी आवश्यकता हो तो उसको पूरा करना चाहिए । धर्म इसी को कहते हैं । इस पर हमने अलग से एक पुस्तक भी लिखी है उसको मँगा कर पढ़ना चाहिए और दूसरों को भी पढ़ाना चाहिए । गुरुदेव की प्रत्येक बात शिक्षाप्रद होती थी । जब उनके साथ वापस मथुरा आ रहे थे तब हमने कहा-गुरुदेव आपने विधवाओं की बावत सभी बहनों का अज्ञान दूर कर दिया । गुरुदेव ने कहा-बेटा कितना बड़ा अज्ञान है । जो शुद्ध पवित्र जीवन जीता है स्वयं कमाकर खाता है और जो समय मिलता है उसको समाज की सेवा में लगाता है उसके दर्शन करने को लोग अशुभ मानते हैं और वही विधवा किसी से दूसरी शादी कर लेती है, फैशन करती है, बच्चे भी पैदा करती है जिसको अशुभ मानते थे उसी को शुभ मानने लगते हैं । जो पाप करता है उसके दर्शन शुभ मानते हैं और पवित्र जीवन जीता है उसके दर्शन को अशुभ मानते हैं, कितना बड़ा अज्ञान है, इसी से पाप बढ़ रहा है । इस अज्ञान को समाज से दूर करना चाहिए । गुरुदेव ने कहा-बेटा हमारे विचारों को फैलाना ही हमारी सेवा है । जो हमारे विचारों को नहीं मानता है केवल भजन करता है, यज्ञ करता है वह हमसे कोसों दूर है । लोग हमारे विचारों को कम मानते हैं । माला, आरती से ही संतोष कर लेते हैं । हमारे विचारों को घर-घर पहुँचाना चाहिए । तब से हम उनके विचारों को ही घर-घर पहुँचाने में ही लगे हैं ।

जब गुरुदेव को मौसम्मी का रस पिलाया

हम गुरुदेव के साथ आनंद के दौरे पर जा रहे थे । उस दिन गुरुदेव को बुखार था । जाते समय माता जी ने हमसे कहा-बेटा गुरुदेव का ध्यान रखना । हमने कहा-हम पूरा पूरा ध्यान रखेंगे । जब बड़ौदा स्टेशन आने वाला था, गुरुदेव ने कहा-स्टेशन जाकर तू हल्ला मत मचाना कि गुरुदेव को बुखार है । हमको समझा दिया । स्टेशन आया, तब वहाँ पर बड़ौदा और आनंद के बहन भाई स्टेशन पर स्वागत करने आए। स्वागत करने के

बाद आनंद के लिए कार में गुरदेव को बिठाया । आनंद में गुरुदेव का जुलूस निकाला गया । करीब तीन घंटे जुलूस में गुरुदेव को कार में बैठे रहना पड़ा । जहाँ पर यज्ञशाला थी, वहाँ पर जुलूस पहुँच गया । वहाँ पर गुरुदेव का प्रवचन हुआ, इससे बुखार और बढ़ गया । हमको बड़ी चिंता लग रही थी । उस समय आनंद शाखा ही गुजरात में सबसे अच्छी शाखा थी । वहाँ पर हमारा गुरुदेव के साथ पाँच-सात बार जाना हुआ । सभी भाई बहिनों से हमारी जान पहिचान हो गई थी । वहाँ पर डाक्टर आशाराम जी मिशन का बहुत काम करते थे । उस समय आठ-दस भाई ही अच्छा कार्य करते थे । हमने डाक्टर आशाराम से कहा गुरुदेव को बुखार है । तुम हमारा नाम मत लेना । उनके चरणों को स्पर्श करोगे तब तुमको मालूम पड़ जाएगा । हमारे कहने से आशाराम भाई शांति भाई के मकान पर ठहरे थे, वहाँ पर गुरुदेव के चरण स्पर्श किए, चरण बहुत गर्म थे, डाक्टर आशाराम ने गुरुदेव से कहा-गुरुदेव आपको बुखार है अब आपको आराम करना है। गुरुदेव चुप रहे और हमसे डाक्टर आशाराम ने कहा-बाजार से मौसमी का रस लाकर पिला दो । बुखार है कल सुबह चैक करा कर दवाई देंगे । हम बाजार गए वहाँ से थरमस में मौसमी का रस लेकर आए और स्टील के गिलास में मौसमी का रस डालकर गुरुदेव को दे दिया । गुरुदेव ने समझा था कि पानी दे रहा है । जैसे ही एक घूँट रस गुरुदेव ने पिया, पीते ही उन्होंने थूक दिया और मुँह को साफ कर दिया । कुल्ला कर के रस को फेंक दिया। हम पर एक दम टूट पड़े, अगर उनके पास डंडा होता तो मार ही देते । इतना गुस्सा उनको था । हमसे कहा-हमारे बच्चे तपोभूमि में रहते हैं उनको पानी भी नहीं है (तपोभूमि में खारी कुआँ था थोड़ी दूर से पानी लाना पड़ता था) तू मुझको मौसमी का रस पिलाता है । बड़े नाराज हो रहे थे । हमको बड़ा डर लग गया । दूसरे दिन डाक्टर आशाराम जी आए और गुरुदेव को जिद करके जाँच कराने ले गए । जाँच में असामान्य कुछ भी नहीं निकला । गुरुदेव ने वहाँ

के भाइयों से हमारा नाम लेकर कहा–लीलापत को बुलाकर लाओ । हम बाहर खड़े थे । हमसे गुरुदेव ने कहा–जाँच में क्या निकला है ? हमने कहा–चैकिंग की बात डाक्टर आशाराम ने कही थी । गुरुदेव बोले–हम सब जानते हैं, अवश्य ही डाक्टर को तुमने ही बुखार की बात कही है । हमसे कहा–बेटा हमारे कोई बीमारी नहीं है । कभी विजातीय तत्व शरीर में आ जाता है तब बुखार के द्वारा निकल जाता है । हम ठीक हैं तुम चिन्ता मत करो ।

तारा बहन की बीमारी ठीक की

आनंद के बाद अहमदाबाद गए । वहाँ पर चन्दूलाल जोशी के घर पर ठहरे, उनकी पत्नी तारा बहन ने हमको तथा गुरुदेव को चाय बनाकर दी । गुरुदेव ने तारा से कहा–बेटी तू भी अपने लिए एक कप चाय ले आ, हमारे साथ ही चाय पी ले । तारा बहन बोली–गुरुदेव मुझे आठ दस वर्ष हो गए मैं कभी भी चाय नहीं पीती तथा भोजन भी नहीं करती हूँ । कुछ रस डाक्टरों ने बतलाए हैं उनको लेती हूँ । पेट में अल्सर था और कोई बीमारी भी थी, उसके कारण डाक्टरों ने चाय और खाना बंद कर दिया था । गुरुदेव ने कहा–नहीं चाय ला चाय पी कुछ नहीं होगा । तारा बहन से गुरुदेव ने कई बार कहा, तब तारा बहन बोली–गुरुदेव कहीं कोई खराबी न हो जाए । गुरुदेव बोले–बेटी कुछ भी नहीं होगा । तारा बहन ने डरते हुए चाय पी ली । चाय पीने पर उसको कुछ भी नहीं हुआ । जब भोजन को बैठे तब गुरुदेव ने कहा–तू भी अपने लिए थाली ला, मेरे साथ भोजन कर । तारा बहन चुप खड़ी रही, गुरुदेव ने कहा–हमारा विश्वास नहीं है जल्दी थाली ला तुझे कुछ भी नहीं होगा । तारा बहन अपने लिए भोजन की थाली लाई । गुरुदेव ने अपने साथ बिठा कर भोजन कराया । भोजन करने के बाद तारा बहन बिल्कुल स्वस्थ रही । हम तीन दिन अहमदाबाद ठहरे । गुरुदेव तीनों दिन उसको अपने साथ चाय पिलाते रहे और भोजन कराते रहे । तारा बहन बोली–गुरुदेव आपके आशीर्वाद से

हमको कोई नुकसान नहीं हुआ वरना हम कुछ भी खाते पीते थे तो पेट में दर्द हो जाता था , इसीलिए डाक्टरों ने मना कर दिया । आपके आशीर्वाद से हम भोजन कर सके हैं । जिसको गुरुदेव आशीर्वाद देते थे उसको ही फलित हो जाता था ।

उसके बाद पोरबंदर में १००८ कुण्ड का यज्ञ था । वहाँ पर तारा बहन हमारे साथ भोजन करने बैठी । गुजरात की रोटी छोटी-छोटी होती हैं हमने चार रोटी खाईं और तारा बहन दस रोटी खा गई । हमने कहा- पिछले दिनों का कोटा पूरा कर रही है । सभी हँस पड़े ।

मोटा महाराज से मिले

अहमदाबाद के बाद बड़ौदा में श्रेयस विद्यालय में यज्ञ था । सुबह गुरुदेव का प्रवचन था, वह मंच पर पहुँच गए । इसी बीच एक व्यक्ति हमारे पास आया और उसने कहा कि मोटा महाराज गुरुदेव से मिलना चाहते हैं । कब आ जायँ ? मोटा महाराज गुजरात के संत थे । हमने गुरुदेव से जाकर पूछा कि मोटा महाराज का सेवक आया है । मोटा महाराज आपसे मिलना चाहते हैं, कब आपसे मिलने आएँ ? गुरुदेव ने कहा-मोटा महाराज का पता नोट कर ले और उनके आदमी से कह दे कि मोटा महाराज हमारे पास नहीं आएँ, हम मोटा महाराज के पास ही आ रहे हैं । भोजन भी मोटा महाराज के साथ ही करेंगे । मोटा महाराज बड़ौदा के किसी सेठ के यहाँ ठहरे थे । हमने उनके आदमी से कह दिया कि गुरुदेव वहीं मोटा महाराज के पास आएँगे और उनके साथ ही भोजन करेंगे । मोटा महाराज का भोजन सुबह नौ बजे का था । वह प्रतिदिन समय से ही भोजन करते थे । नियम को नहीं तोड़ते थे । मोटा महाराज से जब उस आदमी ने कहा, तब वहाँ पर भोजन की व्यवस्था बना दी गई । उस दिन यज्ञ में देरी हो गई इस कारण गुरुदेव १२ बजे उनके पास पहुँचे । मोटा महाराज ने उस दिन अपना भोजन का नियम तोड़ दिया । १२ बजे तक भोजन नहीं किया । गुरुदेव जब मोटा महाराज के पास

पहुँचे, तब मोटा महाराज और गुरुदेव दोनों गले मिले । ऐसा लग रहा था मानो राम भरत का मिलन हो रहा हो । हमारे साथ और भी दस-बारह भाई थे । उस दिन गुरुदेव ने और मोटा महाराज ने साथ-साथ भोजन किया और भी जो भाई थे, हमने भी उनके साथ भोजन किया । भोजन करने के उपरान्त मोटा महाराज और गुरुदेव एक कमरे में चले गए और भीतर से किवाड़ लगा दिए । दोनों संत एक साथ बैठ गए । हम थे और हमारे साथ दस पंद्रह व्यक्ति थे, वे सब बाहर एक कमरे में बैठे थे । तभी भाइयों ने मुझसे पूछा-पंडित जी मोटा महाराज और गुरुदेव आज किस विषय पर बात कर रहे थे ! हमने कहा-हम आप भाइयों के पास बैठे हैं हमको क्या मालूम किस विषय में बात कर रहे हैं । हम सब भाई वहाँ पर बैठे रहे और आपस में बातें करते रहे । एक घंटे के बाद गुरुदेव और मोटा महाराज कमरे से बाहर निकले । मोटा महाराज गुरुदेव को सड़क तक जहाँ कार खड़ी थी, वहाँ पहुँचाने आए । गुरुदेव जब कार में बैठ गए तब मोटा महाराज वापस गए । हम गुरुदेव के साथ ही कार में चलते थे । हमने गुरुदेव से पूछा-गुरुदेव सब भाई हमसे पूछ रहे थे कि मोटा महाराज और गुरुदेव किस विषय पर बात कर रहे हैं । गुरुदेव ने हमसे कहा-बेटा हमारी और मोटा महाराज की जिस विषय पर बात हुई, उससे तुम लोगों का कोई वास्ता नहीं है । वैसे हम बतलाते हैं कि मोटा महाराज संत हैं । हमने कहा-गुरुदेव संत की क्या पहिचान है । ऐसी क्या बात हैं जिससे वे संत प्रतीत हुए । गुरुदेव ने बताया, मोटा महाराज के कोई बीमारी थी, मोटा महाराज से गुरुदेव ने कहा-और बातें बाद में करेंगे, पहले आपको जो शारीरिक कष्ट है उसको सही कर दें । हमारे पास तप की इतनी पूँजी है हम आपको अभी ठीक कर देंगे । मोटा महाराज ने कहा-नहीं आचार्य जी यह तो मेरी अपात्रता है, जो मेरी व्यथा है उसको मैं प्रसन्नता के साथ सह लेता हूँ । मेरे शारीरिक कष्ट में आप अपना तप खर्च नहीं करें । मोटा महाराज के बारे में गुरुदेव ने

कहा–इतना कष्ट होते हुए भी वे हँसते रहते थे । देश में कितने लोग कष्ट पा रहे हैं । प्रत्येक व्यक्ति हैरान है, परेशान है, परिवारों में कलह है, समाज बुराइयों से कराह रहा है । मोटा महाराज ने कहा है आप अपना तप वहाँ खर्च करें । मेरी अमानत को मेरे पास रहने दें । गुरुदेव ने कहा–समाज के प्रति, व्यक्तियों के प्रति, समाज की कुरीतियों के प्रति मोटा महाराज के हृदय में कितनी व्यथा थी । इससे प्रतीत होता था कि वह संत हैं और संत एक वृत्ति होती है बेटा । वह वृत्ति उनमें है इसलिए मोटा महाराज संत हैं । हम जब कार से उतरे, हमने सभी भाईयों को जो हमारे साथ मोटा महाराज के पास थे सबको गुरुदेव की यह बात बतलाई । हमने मोटा महाराज के तभी दर्शन किए थे । वैसे जब हम गुजरात जाते थे तभी मोटा महाराज की वहाँ के भाई चर्चा किया करते थे । उसके बाद जब गुरुदेव मथुरा से हरिद्वार चले गए और वहाँ से अज्ञातवास चले गए तब हम गुजरात गए । वहाँ हम मोटा महाराज के दर्शन करने गए । मोटा महाराज ने कहा–बेटा आचार्य जी चले गए । हमने कहा–हाँ चले गए । मोटा महाराज ने कहा–बेटा आचार्य जी संत भी हैं और सुधारक भी । उनके कार्य में कमी नहीं आने देना । अगर तुझे रुपए की आवश्यकता पड़े तो तुझे जितना धन चाहिए मैं दिला दूँगा । हमने कहा–महाराज हमें तो आपका आशीर्वाद चाहिए । जब हमको पैसे की आवश्यकता पड़ेगी, तब हम आपके पास आकर कहेंगे । अभी तो काम चल रहा है । मोटा महाराज के हमने चरण स्पर्श किए और कहा–महाराज संतों का आशीर्वाद ही काफी है । जब भी हमको धन की आवश्यकता पड़ेगी आपसे आकर प्रार्थना करेंगे । मोटा महाराज गुजरात के मूर्धन्य संतों में से एक थे ।

डाक्टर राधाकृष्णन जब राष्ट्रपति थे, उनको गुरुदेव ने वेदों का अनुवाद भेंट किया । राष्ट्रपति ने कहा यदि हमको यह साहित्य पहले मिल जाता तो हमारे जीवन की दिशा धारा कुछ और ही होती । हम राजनीति में न जाकर आचार्य श्री के चरणों में अध्यात्म का ज्ञान ले रहे

होते । वेदों का भाष्य जो गुरुदेव ने किया था उसकी डॉ० राधाकृष्णन ने बहुत प्रशंसा की थी ।

गुरुदेव और महात्मा आनंद स्वामी

महात्मा आनंद स्वामी जो आर्य समाज के प्रेसीडेन्ट और गायत्री के सिद्ध साधक थे । वह गुरुदेव के पास आते रहते थे । गुरुदेव से उम्र में बड़े थे, जब वह आते गुरुदेव उनके चरण स्पर्श करते थे । तुरन्त ही वे गुरुदेव को गले लगाकर कहते जितना विस्तार गायत्री और यज्ञ का तुमने किया है उतना पूरा संत समाज भी नहीं कर पाया । तुमने आज गायत्री और यज्ञ को घर-घर पहुँचा दिया है । स्वामी जी जब भी गुरुदेव के पास आते, एक बड़ी फूलों की माला लाते और गुरुदेव को पहनाते थे । एक फलों की टोकरी भी साथ में लाते थे । जब भी स्वामी जी गुरुदेव से मिलते आँखों में आँसू भरकर कहते श्रीराम तुम जो सेवा समाज की कर रहे हो, उससे हमको बड़ा संतोष है । जितना काम तुम अकेले कर रहे हो उतना काम हम सब मिलकर भी नहीं कर पा रहे हैं । स्वामी जी की गुरुदेव के प्रति बड़ी श्रद्धा थी । गुरुदेव स्वामी जी के विषय में कहते थे हम साकार उपासना करते हैं मूर्ति पूजा करते हैं । स्वामी जी की तरफ इशारा करके कहते, आज गायत्री माता हम पर इतनी प्रसन्न है कि स्वयं ही हमको दर्शन देने आयी हैं और जैसे ही चरण छूने लगते तो स्वामी जी गुरुदेव को गले से लगा लेते थे । गुरुदेव स्वामी जी से कहते आप साक्षात गायत्री माता हो और स्वामीजी गुरुदेव से कहते तुम्हारे जैसा गायत्री भक्त हमने नहीं देखा । तुम गायत्री के सबसे बड़े भक्त हो । हम भी गुरुदेव के साथ ही रहते थे । हमको भी स्वामी जी के चरण स्पर्श करने का सौभाग्य मिला । स्वामी जी से हम जब भी बातें करते थे वह हमको बहुत आदर देते थे । वह हर समय हँसती और हँसाती जिन्दगी जीते थे । उनका स्वभाव हँसमुख था । स्वामी जी कहते थे प्रसन्न रहना हँसती हँसाती जिंदगी जीना ही अध्यात्म है । गायत्री का सच्चा उपासक वही है जो सदा हँसता हँसाता रहता है ।

भिखारी न बनने का संदेश

हम जब गुरुदेव के साथ क्षेत्रों में जाते थे, हमारी नजर गुरुदेव के चरणों में जो पैसा चढ़ता था, उस पर रहती थी । जैसे ही गुरुदेव उठते हम पहले जितना पैसा उनके चरणों पर चढ़ता, उसको इकट्ठा करते थे । गुरुदेव हमारी तरफ देखते रहते थे । जहाँ भी गुरुदेव बैठते थे वहीं हम एक बड़ी थाली या परात गुरुदेव के सामने रख देते थे और जो भी भाई गुरुदेव के चरणों पर अधिक पैसा चढ़ाते थे उसको ही हम गुरुदेव का सच्चा भक्त मानते थे और उसके पीछे-पीछे फिरा करते थे । जो भी पैसे वाला आता उसका ही सम्मान करते थे । हमारी नजर में पैसा और पैसे वाला ही सब कुछ था । कोई कार्यकर्ता आता था तो उसकी तरफ ध्यान नहीं देते थे । चाहे वह मिशन का कितना ही कार्य करे । अगर कोई पैसे वाला गायत्री तपोभूमि आता था तो उसको ठहराने चाय नाश्ता सबसे बढ़िया कराते थे और उसका बड़ा सम्मान करते थे । पैसे वाला जो भी आता वह भी हमारे ऊपर नौकर की तरह हुक्म चलाता था । मिशन का कोई कार्यकर्ता जो मिशन के कार्य रात दिन करता और सारा समय मिशन के कार्य में लगाता था, हम उसकी तरफ ध्यान नहीं देते थे और उसको भी हम वहीं पर ठहराते थे जहाँ अन्य लोग सामूहिक रूप से ठहरते थे । अगर वह हमसे कहता कि हमारे साथ बच्चे हैं कोई अच्छा कमरा हमें दे दो तो हम उस पर चिल्ला पड़ते थे । ऐसे कार्यकर्ताओं की कदर हमारी नजर में नहीं थी । हम सब कुछ पैसे वाले को और पैसे को ही समझते थे । एक दिन गुरुदेव ने समझाया बेटे-तूने सब कुछ पैसे को ही समझ रखा है । जो भी पैसे वाला आता है उसके पीछे-पीछे फिरा करता है । सब कुछ पैसा ही नहीं है । श्रद्धा पैदा कर, पैसा अपने आप आ जाएगा । कार्यकर्ता रात दिन मिशन का कार्य करता है । वह हमारा प्राण है, तू उसकी तरफ ध्यान ही नहीं देता है । हमारे कार्यकर्ता ही

हमारे विचारों को घर-घर पहुँचाएँगे । कार्यकर्ता हमारे और माता जी के हृदय हैं । हृदय फेल हो जाता है तब आदमी मृत घोषित कर दिया जाता है । तुझे हृदय का ध्यान नहीं है, तू कार्यकर्ताओं की तरफ ध्यान दिया कर । जब गुरुदेव ने हमको समझाया तब हमारी आँखें खुल गईं और उस दिन से आज तक हमने कभी पैसे की चिन्ता नहीं की और किसी से माँगा भी नहीं । अगर कभी मिशन के कार्य में पैसे की कमी आई तब हमने कर्जा तो ले लिया, वह भी कार्यकर्ताओं से बगैर ब्याज के, परन्तु पैसे वालों के पीछे-पीछे नहीं फिरे । गुरुदेव ने कहा-बेटा हम पैसा इकट्ठा करने वाले नहीं हैं, हमको तो अपने विचार फैलाने हैं । जो रात दिन पैसे पर ही ध्यान देता है उसको मिशन की जानकारी ही नहीं है । हमारा उद्देश्य तो धर्म में जो विकृति आई है उसको ठीक करना है । लोगों के विचारों को ठीक करना ही हमारी और मिशन की सेवा है । जिस परिवार में, समाज में, मिशन, संस्था में पैसा बढ़ता है, उसमें विलासिता बढ़ती है, कार्यकर्ताओं के खर्च बढ़ते हैं । इससे मिशन के कार्यकर्ता मिशन के उद्देश्य को भूल जाते हैं । और उसके कार्यकर्ता आपस में लड़ने झगड़ने में ही सारा समय बर्बाद करते रहते हैं । गुरुदेव ने जब हमको यह बात समझाई तबसे हम जब भी कहीं गुरुदेव के साथ शक्तिपीठ और प्रज्ञापीठों के उद्घाटन में गुरुदेव के साथ जाते तो जो धन उनके चरणों में आता था, उसको हम वहीं की शक्तिपीठ या प्रज्ञापीठ के लिए छोड़ आते थे । हमारा जो अज्ञान था, गुरुदेव ने दूर कर दिया । तब से आज तक हमने पैसे को ही सब कुछ समझना छोड़ दिया । गुरुदेव के विचारों को ही समझाना उचित समझा । उनके विचारों को ही फैलाने में लगे हुए हैं । अगर कभी छपाई के लिए पैसे के लिए आवश्यकता पड़ी तो बैंक से कर्जा लेना उचित समझा, परन्तु माँगना उचित नहीं समझा । गुरुदेव ने कहा-बेटा तू कभी माँगना मत हमारा बेटा मँगता नहीं हो सकता । इस प्रसंग से प्रत्येक भाई बहिन

को ये शिक्षा लेनी चाहिए कि गुरुदेव के शिष्य हैं तो मँगता नहीं बनना चाहिए माँगने वाला भिखारी होता है । चाहे वह किसी बड़े आदमी से माँगे या छोटे से माँगे । मँगतापन बहुत बुरा है । जिस मिशन के लोग हमेशा चंदा माँगा करते हैं, उनकी समाज में इज्जत नहीं होती । प्रत्येक भाई बहिन को शिक्षा लेनी चाहिए कि माँगने नहीं जाएँगे । जब भी किसी के पास जाएँ, दाता बन कर जाएँ । देने के लिए हमारे पास गुरुदेव के विचारों के अलावा कुछ भी नहीं है । गुरुदेव के बेटों को मँगता नहीं दाता बनकर जाना चाहिए । गुरुदेव जब विदेश यात्रा पर गए थे, वहाँ के निवासियों से उन्होंने यही कहा था कि हम तुमसे कुछ लेने नहीं आए हैं देने आए हैं । प्रत्येक भाई बहिन को इससे शिक्षा लेनी चाहिए कि गुरुदेव के विचारों को घर-घर पहुँचाएँ । धन बढ़ा, शिक्षा बढ़ी, खान-पान के रहन-सहन के साधन बढ़े, भौतिक साधनों की कमी नहीं है परन्तु लोगों के विचार करने का तरीका बदल गया है । इससे सभी दुःखी हैं । गुरुदेव के विचारों की सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है ।

खर्चीले यज्ञों का विरोध

हम गुरुदेव के साथ पटना यज्ञ में गए । वहाँ १०१ कुण्ड का यज्ञ था । एक माह पहले से ही रमेशचन्द्र शुक्ला को वहाँ यज्ञशाला आदि निर्माण का कार्य करने भेज दिया था । यज्ञशाला बनवाने में काफी पैसा खर्च हो गया था । गुरुदेव जब यज्ञशाला में गए और उन्होंने जब यज्ञशाला को देखा तो बहुत नाराज हुए, बोले-जनता ने पैसा दिया है, तुम लोग किस तरह इसको बर्बाद कर रहे हो । यज्ञशाला पर तथा अन्य सभी खर्च तुम अनाप-शनाप कर रहे हो । यज्ञ हमारा माध्यम है । इसके द्वारा हम लोगों को अपने विचारों से जोड़ते हैं । यज्ञ हमारा पुरोहित है । हमको दिशा देता है । "अग्निमीले पुरोहितम्" अर्थात् अग्नि हमारा देवता है, उसमें हम जो कुछ भी डालते हैं, वह अपने पास नहीं रखता है । सब को

वायु मंडल में फैलाकर जलचर, थलचर, नभचर सबको स्वाँस के द्वारा भोजन दे देता है । गुरुदेव ने कहा-इसके द्वारा हम शिक्षण देते हैं कि आदमी को परोपकारी जीवन जीना चाहिए । उसके पास जो कुछ भी है श्रम, धन, समय उसको समाज के कार्यों में लगा देना चाहिए । आदमी इतना स्वार्थी हो गया है कि वह अपने स्वार्थ के सामने दूसरे की सोचता ही नहीं है । हम यज्ञ के द्वारा आदमी को स्वार्थ से परमार्थ की ओर ले जाना चाहते हैं । तुम लोगों ने सब कुछ यज्ञ को ही समझ लिया है । यज्ञशाला बनवाने में कितना खर्च किया है । तुम लोग जनता के पैसे को पानी की तरह बहा रहे हो, भविष्य में यज्ञ में कम से कम खर्च करना, जनता का जो पैसा यज्ञ से बचे उसको साहित्य प्रचार में लगाना । तुम्हारा ध्यान विचारों पर नहीं है । यज्ञ में कम से कम खर्च करना चाहिए । विचारों को फैलाने में अधिक पैसा खर्च करना चाहिए । जनता से जो पैसा लिया है उसको भी तो कुछ देना चाहिए । गुरुदेव हमेशा विचारों पर जोर देते थे । वे कहते थे, हमारा काम पैसा इकट्ठा करना नहीं है । कभी भी यज्ञ से पैसा बचे उसको गायत्री तपोभूमि मत ले चलना । यहाँ पर ही साहित्य में लगवा देना । हमने उस दिन से शिक्षण लिया कभी भी यज्ञ की बचत को तपोभूमि नहीं ले जाएँगे । जहाँ जो कुछ भी यज्ञ से बचा, उसको वहीं खर्च किया । गुरुदेव कहा करते थे । पैसा जहाँ भी जाएगा, वहाँ पर विलासिता पैदा करेगा । कार्यकर्ताओं में झगड़े पैदा करेगा । हमारा काम पैसा इकट्ठा करना नहीं है । हमारा काम समाज में जो विकृति आई है उसको ठीक करना है । हमारे विचार बहुत पैने हैं । उनको जन-जन तक पहुँचाना चाहिए । ज्ञानरथ, झोला पुस्तकालय और अधिक पैसा हो तो साहित्य का बड़ा डिपो खोल देना चाहिए । गुरुदेव यही कहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ की बचत के धन का सदुपयोग करना चाहिए ।

अखंड ज्योति पाँच घंटे में लिख दी

एक बार हम क्षेत्र में गुरुदेव के साथ दौरे पर गए तो तपोभूमि के भाइयों ने हमसे कहा कि अखंड ज्योति पत्रिका का मैटर जरा जल्दी भिजवा देना । उस समय अखंड ज्योति गुरुदेव ही लिखा करते थे । दौरे में इतने व्यस्त हो गए कि कहीं भी समय नहीं मिला, जहाँ गुरुदेव से कह कर अखण्ड ज्योति का मैटर लिखवा लें । जब अखण्ड ज्योति का मैटर भेजने का समय आ गया तब हमने गुरुदेव से कहा–कि अखण्ड ज्योति का मैटर लिखने का समय नहीं मिला है । गुरुदेव ने हमसे कहा बेटा तूने हमें क्यों नहीं बतलाया ? रात को कागज पैन हमारे पास रख देना । रात को कागज पैन गुरुदेव के पास रख दिया । रात को ११ बजे गुरुदेव विश्राम करने लगे हम भी शीघ्र विश्राम करने चले गए । सुबह हम चार बजे उठे । गुरुदेव को पानी गर्म करके दिया । गुरुदेव स्नान को गए, हमने कमरे में देखा कि एक माह की पूरी अखण्ड ज्योति का मैटर लिखा रखा है, हमने पेज नम्बर डाले और मथुरा भेज दिया । हमको बड़ा आश्चर्य हुआ कि ११ बजे सोए और ४ बजे स्नान को गए फिर रात को कैसे अखण्ड ज्योत पत्रिका का सारा मैटर लिख दिया । तब विचार आया कि गुरुदेव साक्षात प्रज्ञावतार हैं । इनके अन्दर वह शक्ति है जो भी चाहें कर सकते हैं ।

गुरुदेव ने कपड़े धो दिए

गुरुदेव के साथ हम ४ वर्ष रहे । हम अपने को धन्य मानते हैं । हम जब गुरुदेव के साथ दौरे पर जाते थे, तब सारा काम हम ही किया करते थे । उस समय मिशन इतना नहीं फैला था । हमारी आदत थी कि स्नान करके गुरुदेव के कपड़ों को सर्फ डालकर बाल्टी में भिगो कर रख देते थे । भोजन और विश्राम करने के बाद धोकर सुखाते थे । एक दिन गुरुदेव स्नान गृह में चले गए । वहाँ पर कपड़े बाल्टी में भीगे थे गुरुदेव के कपड़े धोकर सुखा दिए । हमने जब देखा कि कपड़े सूख रहे हैं हमारे

मन में बड़ी ग्लानि हुई कि कपड़े गुरुदेव ने स्वयं धोकर सुखा दिए हैं, परन्तु हमने गुरुदेव से कुछ कहा नहीं, हम समझ गए गुरुदेव ने कपड़े धोकर हमको शिक्षा दी है कि प्रत्येक कार्य समय पर करना चाहिए । प्रमादी स्वभाव नहीं बनाना चाहिए । उस दिन से हमने शिक्षा ग्रहण की तब से स्नान करके शीघ्र ही कपड़े धोकर सुखा कर दूसरा कार्य करते थे । जो भी शिक्षण उन्होंने दिया करके दिखाया । गुरुदेव ने कहा-करनी कथनी एक होनी चाहिए । जो कहते हैं उसको करना चाहिए । इससे सभी भाई बहिनों को शिक्षा लेनी चाहिए कि अपना प्रत्येक कार्य समय पर ही करें । आज का काम कल पर और कल का काम परसों पर न छोड़ें । गुरुदेव कहा करते थे कि जो भी काम करें, मन लगा कर करें । मन लगा कर काम करने से एक आदमी चार आदमियों का काम कर सकता है । आधे अधूरे मन से कभी काम नहीं करना चाहिए । शरीर और मन की शक्ति जब जुड़ जाती है तब आदमी बड़े से बड़ा कार्य भी आसानी से कर सकता है । जितने भी महापुरुष हुए हैं उन्होंने मन लगाकर कार्य किया है, तभी सफलता मिली है । गुरुदेव ने कहा-हम प्रत्येक कार्य मन लगा कर करते हैं और पाँच आदमियों के बराबर काम कर लेते हैं । प्रत्येक भाई बहिन को शिक्षण लेना चाहिए कि जो भी काम उसको सौंपा गया है उसको मन लगाकर करे ।

मितव्ययता का पाठ सिखाया

हम गुरुदेव के साथ कच्छ के दौरे पर गए । एक भाई के यहाँ ठहरे थे । हम स्नान गृह में स्नान करने गए । वहाँ पर दो बाल्टी पानी भरा रखा था । हमने दो बाल्टी से स्नान कर लिया और एक बाल्टी पानी स्नान गृह से बाहर रखा था उसको भी लेकर कपड़े धो लिए । जब वहाँ के भाई स्नान गृह में गए तो देखकर दंग रह गए कि तीन बाल्टी पानी कहाँ गया । घर में शोर मचने लगा । सब कहने लगे तीन बाल्टी पानी कहाँ गया ? हम घबरा गए हमने सोचा तीन बाल्टी पानी तो हमने ही खर्च

किया है । हम चुपके से गुरुदेव के पास गए और उनसे कहा कि तीन बाल्टी पानी जो स्नान गृह में था उससे दो से हम नहा लिए और एक से कपड़े धो लिए । इस बात पर यहाँ बड़ा हल्ला मच रहा है । तीन बाल्टी पानी कहाँ गया । गुरुदेव ने कहा-बेटा यह कच्छ है, यहाँ पानी की भारी कमी है । तीन बाल्टी पानी की हम दोनों के लिए उन्होंने कठिनाई से व्यवस्था की है । इसी से हमको कुल्ला करना, स्नान करना, कपड़े धोने का काम चलाना था । तूने तीनों बाल्टी पानी खर्च कर दिया । बेटा कभी ऐसी भूल मत करना । हमारे हिस्से में जितना पानी आता है उतना ही खर्च करना चाहिए । यह तो कच्छ है परंतु जहाँ पानी अधिक हो वहाँ भी कम पानी में काम चलाना चाहिए । हम दूसरे के हक का पानी खर्च करते हैं तभी तो पानी की इतनी समस्या है । एक-एक आदमी दस-दस बाल्टी पानी अपने लिए खर्च करता है, नल की टोंटी खुली छोड़ देता है, पानी बेकार बहता रहता है । ऐसा नहीं करना चाहिए । इस पर पूरा ध्यान रहना चाहिए कि जितना पानी हमारे हिस्से में आता है उतना ही खर्च करना चाहिए । उन्होंने हमको गाँधी जी का किस्सा सुनाया । गाँधी जी एक बार जवाहर लाल नेहरू के पास ठहरे थे । गाँधी जी कुल्ला कर रहे थे । नेहरू जी लोटा लेकर जल से कुल्ला करा रहे थे । गाँधी जी हाथ धोते समय नेहरू से बात भी करते जाते थे । बातों में ध्यान नहीं रहा और एक लोटा जल हाथ धोने में ही समाप्त हो गया । तब नेहरू जी दूसरा लोटा पानी का लेने को हुए तो गाँधी जी ने कहा-बस हम अपने हाथ धोने कुल्ला करने में एक लोटा जल ही खर्च करते हैं । नेहरू ने कहा-यह तो गंगा का पानी है नलों में हर समय पानी आता रहता है । अभी एक लोटा और भरकर लाता हूँ । गाँधी जी ने कहा-हमारे हिस्से में एक लोटा ही आता है वह हमने खर्च कर दिया । गाँधी जी ने कहा-जितना पानी का कोटा है हमें उतना ही अपने लिए खर्च करना चाहिए । गुरुदेव ने कहा-जहाँ पानी अधिक मिलता है वहाँ पर भी स्नान में एक बाल्टी पानी ही

खर्च करना चाहिए । दूसरे के हिस्से का पानी खर्च नहीं करना चाहिए । तब से हमने शिक्षा ली है कि पानी अनाप-शनाप नहीं खर्च करना चाहिए । नल बेकार नहीं खुला छोड़ेंगे जिससे पानी बर्बाद होता रहे । गुरुदेव प्रत्येक क्रिया के साथ ज्ञान देते थे ।

जब गायत्री तपोभूमि में शिविर चलते थे, तब माता जी चूल्हे पर लकड़ियों से रोटी बनाती थी । एक दिन लकड़ी गीली थी माता जी को चूल्हा जलाने में बड़ी परेशानी आई । उन दिनों केशवदेव उपाध्याय अखण्ड ज्योति में ही काम करते थे । वह जहाँ भोजन माता जी बना रही थीं गए उनने कहा-माता जी कल से ऐसा प्रबंध कर दूँगा, चूल्हा शीघ्र जल जाया करेगा, आपको परेशानी नहीं होगी । केशवदेव तपोभूमि आए, यहाँ कुछ लकड़ी का काम हो रहा था । लकड़ी के बुरादे का ढेर पड़ा था । केशवदेव ने दो बोरी बुरादा भर लिया और हमसे कहा-माता जी को चूल्हा जलाने में परेशानी होती है । लकड़ी के बुरादे से चूल्हा शीघ्र जल जाया करेगा । इसे मैं अखण्ड ज्योति ले जा रहा हूँ । हमने कहा-यहाँ तो बेकार पड़ा है सबको ले जाओ । चूल्हा जलाने में माता जी को परेशानी नहीं होनी चाहिए । केशवदेव ने दो बोरी बुरादा माता जी की रसोई के सामने रख दिया । गुरुदेव ने देखा तो पूछा-बुरादा कहाँ से आया है ? माता जी ने बताया केशवदेव रख गया है । गुरुदेव ने केशवदेव से पूछा कि बुरादा कहाँ से आया है ? उसने कहा-तपोभूमि में लकड़ी का काम हो रहा है वहाँ पर काफी बुरादा बेकार पड़ा है उसी में से भर कर ले आया हूँ । गुरुदेव ने केशवदेव को बड़ी जोर से फटकार लगाई । गायत्री तपोभूमि से बुरादा क्यों ले आया और कहा-इस बुरादे की गायत्री तपोभूमि के नाम से रसीद कटा । गुरुदेव ने उसको पैसे देकर दान की रसीद कटवा ली । गुरुदेव दान के एक पैसे को भी खर्च नहीं करते थे । दूसरों के दान का पैसा कभी निजी काम में खर्च नहीं करना चाहिए, ऐसा गुरुदेव कहा करते थे और वैसा ही किया करते थे । गुरुदेव कहा करते

थे, लोग अपने बच्चों को दूध नहीं पिला पाते और हमको दान भेजते हैं, हमें उनके पैसे का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए । समाज का पैसा समाज के हित में ही लगाया जाना चाहिए । अपने अनाप-शनाप खर्च नहीं करना चाहिए । इससे सभी भाइयों को शिक्षा लेनी चाहिए कि दान के पैसे का दुरुपयोग न करें । जो दान के पैसे का अपने हित में अनाप-शनाप खर्च करता है वह अध्यात्म से कोसों दूर है । वह अध्यात्मवादी हो ही नहीं सकता ।

पंचमुखी गायत्री का शिक्षण

हमारे मन में पंचमुखी गायत्री की प्रतिमा देख कर यह प्रश्न बार बार उठ रहा था कि गायत्री तपोभूमि की प्रतिमा तो एक मुखी ही है, परन्तु देश में कई स्थानों पर पंचमुखी गायत्री की प्रतिमाएँ स्थापित हैं । इसके पीछे क्या रहस्य है ? एक दिन जब हम दौरे से गुरुदेव के साथ लौट रहे थे तब हमने अपने मन की बात गुरुदेव से पूछ ही ली । उन्होंने कहा-बेटा गायत्री की प्रतिमा तो एक मुखी ही है, परंतु पंचमुखी स्वरूप अलंकारिक बनाया गया है । यह पंचमुखी स्वरूप हमारे शरीर के पाँच कोषों के प्रतीक के रूप में हैं । ईश्वर का साक्षात्कार करने के लिए इन पाँच आवरणों को हटाना पड़ता है जो आत्मिक प्रगति में बाधक है । यह पाँच कोश अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय एवं आनन्दमय के नाम से जाने जाते हैं ।

पहला कोष अन्नमय है । आज हर व्यक्ति खान पान के असंयम के कारण शरीर और मन से रोगी हो रहा है । अन्न से ही मन बनता है । अन्न यदि अनीति पूर्वक अर्जित किया गया है, वह शरीर और मन दोनों के लिए ही अत्यन्त घातक है । रोग, शोक, कलह आदि संकट अनीति पूर्वक अर्जित की गई सम्पत्ति की परिणति ही है । हमने २४ वर्ष तक जौ की रोटी और छाछ का सेवन कर साधना की है । इसके पीछे अन्नमय कोश के जागरण का उद्देश्य भी छिपा हुआ है । अनुष्ठानों में अस्वाद व्रत

इसी उद्देश्य से हम कराते रहे हैं । अन्नमय कोश को शुद्ध करने के लिए अन्न की शुद्धि भी अनिवार्य है । ईमानदारी एवं परिश्रम पूर्वक कमाई गई अन्न संपदा का सात्विक भाव से सेवन करना साधक की व्रतशीलता होनी चाहिए । इससे ही मन भी सधता है ।

दूसरा है मनोमय कोश । अन्नमय कोश के बाद में आत्मा का दूसरा आवरण मनोमय कोश का है । उपासना, साधना, स्वाध्याय, सत्संग, चिंतन, मनन आदि के द्वारा मन का परिष्कार किया जाता है । स्वाध्याय और सत्संग द्वारा मन पर कुविचारों और दुर्भावनाओं के रूप में कषाय-कल्मष हटाये जाते हैं । इसीलिए ऋषियों ने स्वध्याय को परम तप बताया है । शरीर की सफाई, कमरे की सफाई, कपड़ों की सफाई का जिस प्रकार हम ध्यान रखते हैं उसी प्रकार मन को भी नित्य ही स्वाध्याय द्वारा स्वच्छ निर्मल बनाना होता है । मनन और चिन्तन द्वारा आत्म निरीक्षण की प्रवृत्ति पैदा होती है । इसके द्वारा ही भूलों को सुधार कर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते हैं । प्रति दिन एक घंटा समय स्वाध्याय के लिए निकालना ही चाहिए । प्रेरक श्रेष्ठ साहित्य सदैव ही अपने घर पर रखना चाहिए जिससे स्वयं का स्वाध्याय हो और दूसरों को भी उसका लाभ मिले । मन इंद्रियों का स्वामी है अतः मन को साधकर ही इंद्रियों को आदर्शोन्मुख बनाया जा सकता है ।

तीसरा है प्राणमय कोश । मनुष्य का प्रधान बल मनोबल ही है । मनोबल संपन्न व्यक्ति ही संकल्प शक्ति से भरे पूरे होते हैं । यह मनोबल मस्तिष्क बल से भिन्न है, इसे प्राण तत्व कह सकते हैं । भीष्म पितामह में यह प्राणबल ही प्रचुर मात्रा में था, जिसके कारण छः महीने तक बाणों की शैया पर पड़े रहे और निश्चित समय पर प्राण त्यागने की प्रतीक्षा करते रहे । आत्मबल संपन्न व्यक्ति के लिए बड़े-बड़े असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं । भारत में ऐसे अनेक प्राण शक्ति संपन्न व्यक्ति हुए हैं । इस कोष की साधना प्राणायाम द्वारा की जाती है । प्राणायाम एक

ऐसा विज्ञान है जिसके माध्यम से बिना आहार के वर्षों तक जीवित रह सकते हैं । ऐसे कई ऋषि हिमालय क्षेत्र में आज भी तपस्यारत हैं ।

एक पवहारी बाबा हुए हैं । जो बिना अन्न जल के जीवन जीते थे । वैज्ञानिक इस बात को स्वीकार नहीं करते थे । उन्होंने एक बार प्रयोग किया । पवहारी बाबा को एक गुफा में बंद कर दिया, जहाँ केवल वायु जाने का स्थान रखा गया और गुफा के पास वैज्ञानिकों की टीम बैठी रही । किसी भी प्रकार भोजन की व्यवस्था वहाँ पर नहीं की गई थी । जब कई दिन बाद गुफा का द्वार खोला तो पवहारी बाबा उसी अवस्था में स्वस्थ दिखाई दे रहे थे जैसे पहले दिन गुफा में बंद किया था । वे प्राण तत्व प्राणायाम द्वारा संचित कर लेते थे ।

इस साधना के अन्तर्गत नित्य प्रति प्रातःकाल साधना करने के पूर्व प्राणायाम की क्रिया इस प्रकार करें -:

सुखासन या पद्मासन में बैठकर एकाग्रचित्त होकर धीरे-धीरे दोनों नथुनों से गहरी साँस खींचें और दोनों नथुनों को बंद कर लें, कुछ देर स्वाँस को भीतर ही रोकें, फिर धीरे-धीरे स्वाँस बाहर निकालें और कुछ देर पाँस को बाहर ही रोके रहें अर्थात् बिना स्वाँस के रहें । जितनी देर संभव हो उतनी देर ही स्वाँस रोकें । यह प्राणमय कोश की सबसे सरलतम साधना है । इसे नित्य करना चाहिए ।

चौथा विज्ञानमय कोश है । शरीर पदार्थ का बना हुआ है और नश्वर भी है । आत्मा पहले भी थी, आज भी है, आगे भी रहेगी । शरीर वाहन है, साधन है, आत्मा का । विज्ञानमय कोश का जागरण भावनाओं का परिष्कार कर किया जा सकता है । आत्मा पर मल विक्षेप छाए हुए हैं उन्हें दूर करना होगा । आत्म निरीक्षण करना होगा । विभिन्न बंध मुद्राओं का अभ्यास कर इसकी साधना की जाती है । ये साधनाएँ गायत्री महाविज्ञान के तृतीय खण्ड में विस्तार से लिखी हैं ।

गुरुदेव ने आगे आनन्दमय कोश के बारे में बताया । ध्यान की

गहराइयों में जाकर अलौकिक आनन्द की दिव्य अनुभूति इस कोश की साधना के अन्तर्गत है । नाद योग, बिन्दु योग आदि की साधना द्वारा आनन्दमय कोश का जागरण किया जाता है । प्रेम भावना को विस्तार देकर प्राणि मात्र के प्रति सच्चे प्रेम का जागरण किया जाता है । पति-पत्नि में, भाई-भाई में, मित्र-मित्र में जहाँ सच्चा प्रेम होता है, वहाँ वे अपने को असाधारण बलशाली अनुभव करते हैं । कहते हैं निर्जीव वस्तुएँ तो एक और एक मिलकर दो होती हैं, परन्तु संजीव मनुष्य एक और एक मिलकर ग्यारह हो जाते हैं । मानव जीवन में यदि कोई रस है तो वह प्रेम ही है । इसी प्रेम भावना से भगवान को वश में किया जा सकता है । इस प्रकार गुरुदेव ने पंचमुखी गायत्री माता और हमारी आत्मा पर चढ़े पाँच आवरण जो पंचकोश के नाम से जाने जाते हैं के बारे में समझाया । हमने गायत्री महा विज्ञान का अध्ययन किया और पंचकोश की साधना भी करते रहे ।

चार सहस्त्र कुंडीय यज्ञ

गुरुदेव जब मथुरा में रहते थे तब उन्होंने देश में चार स्थानों पर एक सहस्त्र कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया । उत्तर प्रदेश में बहराइच, मध्य प्रदेश में महा समंद, राजस्थान में भीलवाड़ा और गुजरात में पोरबंदर में यह कार्यक्रम सुनिश्चित किए । इनकी व्यवस्था हमारे पास ही रहती थी । गुरुदेव ने हमें इन यज्ञों की व्यवस्था के बारे में सुझाव दिया था कि दान उतना ही लिया जाय जिससे सादगी पूर्ण ढंग से कार्यक्रम संपन्न हो जाय । जो धन बचे उसे साहित्य विस्तार में लगा दिया जाय । इन यज्ञों का मुख्य उद्देश्य देव दक्षिणा में बुराइयों को छुड़वाना तथा अच्छाइयाँ ग्रहण करने के लिए संकल्पित करना था । सत्प्रवृत्ति संवर्धन तथा दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन का आंदोलन यज्ञ के माध्यम से चलाया था ।

हम पोरबंदर की व्यवस्था देखने गए थे । वहाँ जाकर हमने यज्ञ का बजट तैयार किया । जितना आवश्यक होता था उतना ही खर्च किया

जाता था । एक पाण्डाल में भोजन का प्रबंध था । भोजन में दाल, चावल, खिचड़ी आदि का ही खर्च था । कोई विशेष खर्च अलग से नहीं था । गुरुदेव हमेशा पैसे के संबंध में शिक्षण दिया करते थे कि कम से कम खर्च करें और उसकी उपलब्धि अधिक से अधिक हो । बड़े-बड़े पूँजीपतियों से जो स्वयं ही पूरा खर्च उठाने के लिए तैयार थे । उनसे हमने संकल्प करा लिया । धन की समस्या हल हो गई । जब यह बात गुरुदेव को बताई तो वे बोले- बेटा किसका धन किस प्रकार की कमाई का है यह हमें क्या पता उन पूंजी पतियों को मना कर तुम छोटे से छोटे और बड़े से बड़े व्यक्ति तक यज्ञ का आमंत्रण और चंदा लेने जाओ । टोलियाँ बनाकर मोहल्ले-मोहल्ले पीले चावल लेकर आमंत्रण देने जाएँ । इस प्रक्रिया से जन-जन में सहयोग की अपनत्व की भावना विकसित होगी और यज्ञ को अपना कार्यक्रम समझेंगे । इस प्रकार बड़े लोगों से ही पूरा सहयोग लेने की अपेक्षा सभी वर्ग के लोगों से यथा शक्ति भावना पूर्वक योगदान लिया गया, जिससे यज्ञ में भारी जन समुदाय एकत्रित होकर बुराइयों को छोड़ने के लिए यज्ञ भगवान के समक्ष संकल्पित हुआ । चारों कार्यक्रमों में इसी प्रकार की व्यवस्था बनाई गई । यज्ञीय जीवन के प्रति लोगों में आस्था विकसित हुई ।

महासमंद उस समय रायपुर जिले में था । वहाँ पर हम गुरुदेव के साथ ही गए थे, क्योंकि यज्ञों की व्यवस्था हमको ही संभालनी पड़ती थी । उस यज्ञ के प्रमुख संयोजक भाई ज्वाला प्रसाद जी थे । यज्ञ की व्यवस्था के लिए हमको कई बार महासमंद जाना पड़ा था । ज्वाला प्रसाद जी के घर पर ही हम ठहरते थे । महासमंद का कार्यक्रम भी बड़ा अच्छा रहा । बाद में ११ हजार रुपए गुरुदेव को वहाँ के लोगों ने विदाई के रूप में दिए थे, लेकिन गुरुदेव को यह पता नहीं था कि कितनी राशि विदाई में दी गई है अतः हमने उसका ड्राफ्ट बनवाने के लिए वह राशि जबलपुर के दाना भाई राठौर को दे दी । वे गायत्री तपोभूमि के ट्रस्टी

थे । बाद में जब गुरुदेव को पता चला कि विदाई में ११ हजार रुपए दिए हैं तो वे हमसे बहुत नाराज हुए कि लोगों ने दिन रात श्रम करके इतना चंदा इकट्ठा किया है और उस धन को हम ले जाकर क्या करेंगे ? वे बोले तू डकैत बनता है, अपना अधिकार जताता है । बचत का धन तो यहीं पर खर्च होगा । हम अपने विचारों को फैलाना चाहते हैं । हम गुरुदेव के चरण पकड़कर रोने लगे और भविष्य में ऐसी भूल नहीं करने का बचन दिया । अब हम रात दिन धन की बाबत विचार नहीं करेंगे । हमारा पूरा ध्यान कार्यकर्ताओं की तरफ होगा । कार्यकर्ता मिशन के प्राण हैं, उनसे हम नौकर जैसा व्यवहार करते हैं और जो पैसा वाला आता है उसके पीछे-पीछे घूमा करते हैं । यह हमारी भूल है । गुरुदेव ने कहा- कार्यकर्ताओं को मिशन का प्राण समझकर उनका सम्मान करना चाहिए । यदि शरीर से प्राण निकल जाएँ तो शरीर बेकार हो जाता है । इस प्रकार मिशन कार्यकर्ताओं का संगठन है । संगठन टूटने पर मिशन निष्प्राण हो जाएगा ।

हम बड़े-बड़े मिलों पर रहे थे, वहाँ हमेशा पैसा ही पैसा दिखता था । हमारा स्वभाव इसी कारण इस प्रकार का बन गया था । जब से गुरुदेव ने हमें हमारी भूल का एहसास कराया तब से हमने पैसे की ओर से ध्यान हटा लिया । प्रकाशन के लिए आवश्यकता पड़ी तो परिजनों से कर्ज लेकर समय पर उनका पैसा लौटा दिया ।

विदाई समारोह

गुरुदेव का अज्ञात वास जाने का समय आ गया तब हमने सोचा जब गुरुदेव हमेशा के लिए मथुरा से जा रहे हैं तो विदाई सम्मेलन आयोजित करना चाहिए । हमारा दिमाग इस सम्मेलन की व्यवस्था बनाने का ताना बाना बुनने लगा । देश के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं को आमंत्रित करने की बावत गुरुदेव से चर्चा की । उन्होंने कहा-बेटा तू इस चक्कर में मत पड़, तपोभूमि का सारा धन खर्च हो जाएगा । उनकी बात को हमने

नहीं माना और उनके मना करने पर भी देश में पत्र डाल दिए । गुरुदेव ने कहा-विदाई सम्मेलन मत कर अगर तुझे सम्मेलन कराना ही है तो बहुत कम कार्यकर्ताओं को बुला । हमारा मन है कि उसमें आदर्श विवाह होने चाहिए । आज विवाह शादियों के नाम पर भारी फिजूल खर्ची हो रही है । तब हमारा ध्यान आदर्श विवाह के जोड़े तैयार करने में लगा । जब गुरुदेव ने हमको फटकारा कि तूने इतने लोगों को पत्र डालकर यहाँ क्यों बुलाया है तो हमने लोगों को तुरन्त तार किए कि यहाँ पर कम से कम संख्या में शाखाओं से परिजन आएँ, यहाँ पर व्यवस्था की कमी है । उस समय गुरुदेव के मित्र श्री श्यामलाल जी मथुरा में थे । उनका लड़का शादी के योग्य था । हमने उनके लड़के की शादी सम्मेलन में करने की बात कही तो वे बोले कि यदि कोई लड़की हो तो हम अपने लड़के की शादी सम्मेलन में ही कर देंगे । हम एक ऑफिसर को जानते थे उनके दो लड़की थीं जब भी हम वहाँ जाते, वे लड़कियाँ हमसे खूब बातें किया करती थीं । उन लड़कियों के बारे में श्यामलाल जी को बताया तो वे शादी के लिए सहमत हो गए । गुरुदेव माता जी से हमने कहा-हमने श्यामलाल जी से बातें कर ली हैं । वे अपने लड़के का आदर्श विवाह करने को तैयार हैं । सत्यदेव (सत्यदेव) को गुरुदेव ने बुलाया । श्यामलाल जी को लड़की बुलाकर दिखलाई । संबंध पक्का हो गया । अब दो जोड़े आदर्श विवाह को तैयार हुए । इससे हमारी हिम्मत बढ़ गई । अब हमको आदर्श विवाहों की धुन लग गई । मस्तिष्क में २४ घंटे आदर्श विवाह घूमा करते थे और सम्मेलन की व्यवस्था में भी लगे हुए थे । २४ जोड़ों की शादी हुई थी । कई भाइयों को शादी के लिए वहीं पकड़ा । शादी के लिए आए ही नहीं थे । लखनलाल टाटा वालों की लड़की थी । मिशन का बड़ा प्रचार करती थी । हमने कहा-बेटी तेरे लिए सम्मेलन के बाद लड़का देखेंगे । उसका नाम सविता था । सविता बोली-बस मेरी शादी हो गई । सम्मेलन में शादी हो जाती तो ठीक थी '।

अब मैं जन्म भर तक शादी नहीं करूँगी । हमने कहा–बता तुझे कोई लड़का पसंद है । उसने लड़के का नाम हमको चन्द्रप्रकाश बतलाया । उस लड़के को हम अच्छी तरह जानते थे । वह भी आया था और उसकी माँ भी आई थी । हमने चन्द्रप्रकाश को बुलाया और उससे कहा–शादी क्यों नहीं करता, शादी कर ले । लड़का बोला–ऐसे यकायक कल ही शादी कैसे हो सकती है ? हमने शादी वाले दिन उस लड़के को पकड़ लिया और लड़की वालों से कहा–लड़की को लाओ, शादी होगी । उसको पकड़ कर शादी कर दी । इस प्रकार आदर्श विवाहों का आंदोलन प्रारंभ हुआ था । विदाई सम्मेलन में हमारे पुत्र राम का भी आदर्श विवाह हुआ । दोनों की जोड़ी को देखकर हम पुलिकित हो उठे । उस सम्मेलन में करीब एक ढेड़ लाख भाई आए थे । गुरुदेव बोले–तू प्रतिबंध नहीं लगाता बेटा तो इस सम्मेलन में दस लाख व्यक्ति आते । व्यवस्था गड़बड़ा जाती, हमने तुझसे मना किया था । आदर्श विवाहों का आंदोलन तो प्रारंभ हुआ । इन विवाहों में तुमने जो परिश्रम किया उससे हमको भारी प्रसन्नता है । चौथे दिन जब विदाई का दिन आया । हमारा दिल घबराने लगा और हम सोचने लगे कि गुरुदेव क्या कर ग्रहे हैं ? इतने बड़े मिशन को जो इतने श्रम से बनाया है, छोड़कर चले जा रहे हैं । अब आगे मिशन का कार्य कैसे चलेगा ? श्री जगन प्रसाद रावत जो उस समय उत्तर प्रदेश के मिनिस्टर थे वह भी आए थे और राजस्थान के राज्यपाल श्री नरेन्द्र नाथ भी आए थे । वे गुरुदेव से बोले–आचार्य जी आपने सारा जीवन मिशन के कार्योंमें लगाया । आज इसको छोड़कर जा रहे हो, इसे कौन चलाएगा । हम वहीं पर खड़े थे । गुरुदेव ने कहा–हम इसको सौंप कर जा रहे हैं । वे दोनों बोले–आपने सोचकर कदम नहीं उठाया । गुरुदेव बोले–बहुत सोच समझकर कदम उठाया है । वहीं पर हम से दोनों की मुलाक़ात करा दी । श्री जगन प्रसाद रावत बोले–जंब तुमने सोचकर ही कदम उठाया है तब हम क्या कह सकते हैं । हमसे बोले–

चलो लड़के की शादी हुई है, उसके पास ले चलो । हम उनको साथ लाए । उन्होंने बहू बेटे को आशीर्वाद दिया और कहा-जितनी भी शादियाँ हुई हैं उनमें यह जोड़ा प्रथम है । हम शादी के समय देख रहे थे तभी आशीर्वाद देने आए हैं । हम भी जुगल जोड़ी को देख कर मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे ।

गुरुदेव इतने बड़े मिशन को छोड़कर जा रहे थे, सोचकर हमारे पैर डगमगाने लगे । हमने कुछ विचार कर बाजार से दो जोड़ी खड़ाऊँ मँगाई । जब गुरुदेव माता जी जाते समय मंदिर में गायत्री माता के दर्शन करने गए, उस समय भीड़ बहुत अधिक थी । दरवाजे पर भीड़ रोक ली थी । हमने मंदिर की सीढ़ियों के नीचे दोनों जोड़ी खड़ाऊँ रख दी । गुरुदेव माता जी दर्शन करके सीढ़ियों से उतरे । हमारी तरफ देखा, हमारी आखों में आँसू थे। दो तीन बार हमारी तरफ माता जी गुरुदेव ने देखा । दोनों ने खड़ाऊँ पहन ली और पहन कर यज्ञशाला के पास उतार दी । हमने दोनों पादुकाएँ उठाईं और अपने सिर पर रखकर मंदिर आए और मंदिर में पादुकाओं को स्थापित कर दिया । गुरुदेव माता जी दरवाजे से विदाई लेकर जा रहे थे । उनके साथ हमारे कार्यकर्त्ता भाइयों की भारी भीड़ थी । सब उनके पास थे । विदाई के बाद हमने मंदिर के एक कमरे में पादुकाएँ एवं गुरुदेव का चित्र स्थापित किया । दूसरे कमरे में माता जी का चित्र तथा उनकी पादुकाएँ स्थापित कीं । आरती, चंदन, धूप, दीप सभी तैयार किए । उनकी आरती उतारी प्रणाम कर रहे थे, कि यकायक हमें आभास हुआ कि जैसे गुरुदेव व माता जी हमसे कह रहे हों कि बेटा हम तुम्हारे साथ सदा रहेंगे, तू निर्भय होकर कार्य करना । जो कुछ कार्य करे मुनीम बनकर करना, चिंता मालिक को होती है । मुनीम हिसाब किताब का जिम्मेवार होता है । मुनीम बनकर रहना । हमने मन ही मन बचन दिया-गुरुदेव आपकी जो आज्ञा है उसी का पालन करेंगे । उसी दिन से हम सुबह प्रति दिन मंदिर जाते हैं । पादुकाओं का पूजन करके

माला फूल चढ़ाते हैं । उनसे हमको नित्य प्रति जो प्रेरणा मिलती है उसी के अनुसार कार्य करते हैं और अपने को मुनीम ही समझते हैं ।

गुरुदेव को तपोभूमि के सभी भाई विदा करने जमुना पार तक गए थे । हम यहाँ की व्यवस्था में लग गए । सामान को इकट्ठा करवाया, टैन्ट वालों, बिजली वालों का हिसाब किया । दफ्तर का कार्य समाप्त हो गया । तब हमने सोचा हम भी हरिद्वार चलकर गुरुदेव माता जी के दर्शन करके आएँ । हम बस द्वारा हरिद्वार गए । वहाँ पर उस समय भी भारी भीड़ थी । हम पहुँचे तो गुरुदेव के पास सूचना पहुँची कि पंडितजी आपके दर्शन करने आए हैं । गुरुदेव ने कहा–उनसे कह देना कि अधिक समय नहीं लें, जो कोई भी बात हो थोड़ी देर में ही कह दें । हम गुरुदेव के पास दर्शन करने गए और प्रणाम किया गुरुदेव बोले–बेटा कितना पैसा बचा है ? हमने बतला दिया कि गुरुदेव विदाई सम्मेलन में इतना खर्च हुआ है । गुरुदेव बोले–मैने तुझसे कहा था अगर विदाई सम्मेलन नहीं करता तो वह पैसा जो खर्च हुआ है गायत्री तपोभूमि की व्यवस्था में अब काम आता । हमने कहा–गुरुदेव हमारा गुरु हमारे साथ है । चलते समय हमसे कहा था कि हम हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे । गुरु हमारा सब कार्य पूरा करेगा । गुरुदेव यह सुनकर मुस्कराए और कहा – बेटा तू ब्राह्मण का जीवन जीना, तुझे कोई कमी नहीं रहेगी । हमको आशीर्वाद देकर कहा कि हमारा माता जी का आशीर्वाद तेरे साथ है । हमने कहा–गुरुदेव हम अब तो ब्राह्मण के बालक हैं और ब्राह्मण का जीवन जी रहे हैं । गुरुदेव बोले–बेटा ब्राह्मण कोई जाति नहीं होती है, वृत्ति होती है । ब्राह्मण उसको कहते हैं जो शुद्ध पवित्र जीवन, दोष दुर्गुण रहित जीवन तथा सूर्य जैसा जीवन जीता है । सूर्य कभी भी विश्राम नहीं करता । ब्राह्मण हमेशा श्रम करता रहता है । विश्राम नहीं करता । सूर्य समय पर उगता है । ब्राह्मण को भी समय पर ही प्रत्येक कार्य करना चाहिए । अगर सूर्य भगवान नहीं उगें तो सारा संसार ही नष्ट हो जाएगा । जितने भी

जीव जन्तु हैं सब सूर्य के सहारे जीवित हैं । इसी प्रकार ब्राह्मण मर गया तो सारा संसार मर जाएगा । ब्राह्मण आज देश में जीवित रहता तो आज धर्म की ये हालत नहीं होती । ब्राह्मण अन्तःकरण में बैठा है, सोया हुआ है, उसको जगाना है । तुझे किसी बात की कमी नहीं रहेगी । कभी भी हिम्मत मत हारना । गायत्री माने हिम्मत, साहस । हमारी गायत्री कमजोरों की बुजदिलों की नहीं है । हमारी गायत्री साहस वालों की हिम्मत वालों की है । हमारे सामने कितनी समस्यायें आई हैं, परन्तु हमने कभी हिम्मत नहीं हारी है । तुम कभी साहस मत हारना । हमने कभी हिम्मत नहीं हारी । कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ा । गुरुदेव के द्वारा जो भी बातें हमें बतायी गयीं, हमने उनको जीवन में उतारा और उन पर अब तक अमल कर रहे हैं । गुरुदेव से बातें करने के बाद अब हम माता जी के दर्शन करने गए । माता जी नीचे कमरे में तखत पर बैठी थीं जैसे ही हमने माता जी के दर्शन किए, वैसे ही एक दम रो पड़े और उनके चरणों में गिर पड़े । हम फूट फूट कर रो रहे थे । माता जी भी रो पड़ीं अश्रुधार बहने लगी । बहुत देर तक रोते रहे । माता जी बोली–बेटा बता क्यों परेशान है ? हमने कहा–माता जी जबसे आप दोनों मथुरा से आए हैं हमारा मन नहीं लगता है और सूना–सूना लगता है । आपका जो स्नेह हमको मिलता रहा वह बार–बार याद आता है । आप हमारे भोजन तकलीफ, परेशानी का ध्यान रखती थीं और आपके सामने जो भी समस्या हम रखते थे, उनका हल हमको बता देती थीं । अब हम अपना कष्ट किससे कहेंगे ? माता जी ने हमारे सिर पर हाथ फेरा कहा–बेटा हम शरीर से आ गए तो क्या हुआ हमेशा हम दोनों ही तेरे आगे पीछे रहेंगे । अगर तुझे कोई आँख उठाकर देखेगा तो उसकी आँख निकाल लेंगे और स्थूल रूप से हम और आचार्य जी अपनी पादुकाएँ तेरे पास छोड़ ही आए हैं । सुबह उनकी पूजा करने जाएगा तो तुझको सारी समस्याओं का हल मिल जाएगा । हमसे हमेशा तुझको प्रेरणा मिलती रहेगी, तू मेरा प्यारा

बेटा है । हमेशा जब भी प्रवचन शांति कुंज में होता था, या माता जी किसी से बातें करती, तब कहती-लड़के मेरे लाखों की तादात में हैं, पर बेटा मेरा एक ही है तपोभूमि में जाकर देख लो । फिर उन्होंने हमारे सिर पर हाथ फेरा कहा-अभी भोजन बनाती हूँ, तू शीघ्र आना । माता जी ने भोजन बनाया । वैसे हम जब भी शांति कुंज जाते, माता जी के पास ही भोजन करते थे । दो तीन दिन हम हरिद्वार रहे फिर वहाँ से मथुरा आए । यहाँ की व्यवस्थाएँ गड़बड़ा रही थीं, उनको संभाला ।

गुजराती पत्रिका एवं साहित्य का प्रकाशन

एक दिन जब हम मंदिर में गुरुदेव एवं माता जी की पादुकाओं को प्रणाम करने गए तब वहाँ हमें प्रेरणा हुई कि जैसे गुरुदेव कह रहे हों कि बेटा अब गुजराती में एक पत्रिका निकाल, तब से हम दिन भर विचार करते रहे, पैसा नहीं है गुजराती पत्रिका कहाँ से निकालें । दूसरे दिन फिर प्रणाम करने गए तब प्रेरणा आई कि गुजरात जाओ, वहाँ पर अपनी समस्या को कह, व्यवस्था हो जाएगी । हम विचार करते रहे । गुजरात किसके पास जाएँ । हम गुरुदेव के साथ आनंद कई बार गए थे जिससे वहाँ के परिजनों से घनिष्ट संपर्क हो गया था, अतः हमने आनंद शाखा जाने का निश्चय कर लिया । वहाँ पाँच छः भाई उस समय शाखा का कार्य संभालते थे, हमको याद आया । रणछोड़ भाई, शुक्ला जी, मिश्रीलाल जी, डाक्टर आशाराम तथा शांति भाई । इनमें से दो भाई अब भी हैं । एक डाक्टर आशाराम भाई तथा दूसरे शांति भाई बाकी सब का स्वर्गवास हो गया है । हमने उन भाइयों से अपनी बात कही कि हमारा विचार है गुजराती में पत्रिका निकालें । उन्होंने कहा-हमारे लिए क्या सेवा है ? कितना धन चाहिए ? हमने कहा-२५ हजार तो चाहिए ही । इससे कम हों तो भी काम चलाएँगे । सब भाई बोले-आप पाँच दिन के लिए हमारे अनुसार कार्यक्रम बना लें । हमने १५ दिन के लिए समय उनको दिया । आनंद शाखा ने १०८ कुंड का गायत्री यज्ञ का आयोजन रखा ।

उसमें पाँच दिन के लिए हमें बुलाया । धन की व्यवस्था का पूरा आश्वासन दे दिया था । हम वापस मथुरा आए । बाद में आनंद शाखा के भाइयों का पत्र आया कि १०८ कुंड का यज्ञ रख दिया है । उन तारीखों में आपको आना ही है । पत्र पढ़ने के बाद हमने एक दिन पहले आने की सहमति आनंद के भाईयों को दे दी तथा बड़ौदा स्टेशन के लिए रिजर्वेशन करा लिया । हम बड़ौदा पहुँचने से पहले विचार कर रहे थे कि हमें लेने कोई नया व्यक्ति भेज दिया तो हम तो उसको पहिचान भी नहीं पाएँगे, परन्तु वहाँ स्टेशन पर जब गाड़ी पहुँची तो देखा कि लगभग सौ भाई बहिन माला हाथ में लिए खड़े थे । गायत्री माता की जय बोल रहे थे, जयघोषों से प्लेटफार्म गूँज रहा था । हम इसको देख कर आश्चर्य में रह गए । गाड़ी ठहरी, हम सब गाड़ी से उतरे । एक भाई ने हमसे कहा–चुप रहना, हम जैसा कहें आप वैसा करें, आप देखते रहो, बोलना नहीं । सब भाई बहिनों ने हमें माला पहनाईं, हमको बड़ा आश्चर्य हुआ कि हम गुरुदेव के साथ गुजरात कई बार आए, परन्तु ऐसा स्वागत तो गुरुदेव का भी नहीं हुआ था । बड़ौदा से हमको आनन्द ले गए, वहाँ से करीब एक मील दूर पर चाँदी की बग्गी खड़ी थी उसमें घोड़े जुते थे और बहिनें कलश लेकर खड़ी थीं । भाइयों के हाथ में झंडे बैनर थे, जयकारे बोल रहे थे । हमको कार से उतार कर बग्गी में बिठाया गया और फूलों की बड़ी माला हमको पहनाई । जुलूस वहाँ से यज्ञशाला तक आया । वहाँ पर हमारा प्रवचन भी रखा था । उन भाइयों ने जनता में ऐसा प्रचार कर दिया था कि बड़ा महात्मा यज्ञ में आया है । हजारों आदमी हमारे दर्शनों को घूमते थे । हम मन ही मन कह रहे थे, गुरुदेव क्या करा रहे हैं, परन्तु हम चुप थे । चार दिन तक यज्ञ चला और इस यज्ञ में सभी भाई बहिनों ने भरपूर धन दिया । जब हमारी विदाई हुई तब वहाँ के भाइयों ने हमको एक लाख की थैली भेंट की । हम थैली को लेकर धन्य हो गए । हमने मन ही मन गुरुदेव को धन्यवाद दिया और सोचा गुरुदेव आपने तो हमारी अर्थ की

व्यवस्था कर ही दी । कार्यक्रम करने के बाद हम मथुरा गायत्री तपोभूमि आए । हम सब भाइयों ने मिलकर गुजराती पत्रिका का रजिस्ट्रेशन करवाया । दो तीन भाई गुजरात से बुलाकर अनुवाद प्रूफरीडिंग का कार्य कराया । गुजराती पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया । गुजरात में गुजराती पत्रिका गई तब गुजरात के सभी भाई बहिन बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि हिन्दी में पत्रिका पढ़ने में उन्हें बहुत कठिनाई होती थी । गुजरात से सभी भाई बहिनों के पत्र हमारे पास आए कि गुजराती पत्रिका निकालकर आपने बहुत बड़ा कार्य किया है । अब हमें गुरुदेव के विचार मिलते रहेंगे । अब हमने सोचा कि अभी हमारे पास काफी पैसा बचा है जो आनंद की शाखा ने दिया है । अब हमको मुख्य-मुख्य साहित्य गुजराती भाषा में निकालना चाहिए । हम बड़ौदा गए, वहाँ के भाइयों से मिले, उस समय बड़ौदा में ही मोटा महाराज थे । जो पहले गुरुदेव के साथ मिले थे । उनके दर्शन करने हम उनके पास गए । मोटा महाराज को हमने जाते ही प्रणाम किया, मोटा महाराज बोले-आचार्य जी तो साक्षात् गायत्री यज्ञ ही हैं । उनके कार्य में रुकावट नहीं आए श्रम करते रहना । अगर तुझे धन की आवश्यकता हो तो मुझे बताना, जितने धन की आवश्यकता होगी, व्यवस्था करा देंगे । धन की कमी के कारण कोई कार्य उनका रुके नहीं । हमने कहा-महाराज अभी तो वहाँ का कार्य ठीक चल रहा है । आनंद शाखा ने एक लाख रुपया दिया, उसका ही हमको गुजराती साहित्य छपवाना है । गुजराती पत्रिका निकाली है । अगर आवश्यकता होगी तो आपके पास आकर अपनी कठिनाई बतला देंगे । अभी तो आपका आशीर्वाद है । काफी देर तक हमसे मोटा महाराज की बातचीत होती रही । भोजन भी उन्होंने अपने साथ ही बैठाकर कराया । जब हम उनको प्रणाम करके आने लगे तो उन्होंने हमारे सिर पर हाथ फेर कर कहा-बेटा हम तुम्हारे साथ हैं । आचार्य जी के कार्य में रुकावट नहीं आए । हमने कहा आपका आशीर्वाद चाहिए ।

महाराज बोले–हमारा हजार हाथ से आशीर्वाद है तुमको । यह सुनकर हमारा साहस हजार गुना बढ़ा । हम बड़ौदा, आनंद, अहमदाबाद, सौराष्ट्र सभी स्थानों पर गए और वहाँ के भाइयों से हमने गुजराती में साहित्य निकालने को कहा । सभी भाइयों ने हमको विश्वास दिलाया कि हम तुम्हारे साथ हैं । जो भी सेवा तन–मन–धन की पड़ेगी, हम आपका साथ देंगे । सब भाइयों ने निश्चय किया कि राजकोट में छपाई ठीक रहेगी । छपाई प्रूफ रीडिंग का कार्य हम सब भाई मिलकर कर लेंगे । आप चिंता नहीं करें । यह कार्य गुरुदेव का है । हमारा तुम्हारा थोड़े ही है । वही सब पूरा करेंगे । हम वापस तपोभूमि आए और हमने तपोभूमि के भाइयों को सब बातें बतलाई । सभी की सहमति हो गई फिर हम गुजरात गए और राजकोट से गुजराती साहित्य को छपवाने की व्यवस्था की । वहाँ पर गुजरात के तीन–चार भाई अनुवाद प्रूफरीडिंग के लिए रख दिए । दस दिन कभी पन्द्रह दिन हम राजकोट ठहरते थे । वहाँ की छपाई की व्यवस्था देखते थे । इस प्रकार एक वर्ष हमको गुजराती साहित्य में लग गया । वहाँ साहित्य छपाने के बाद सारा साहित्य मथुरा ले आए । फिर हमने सैट बनवाए । फिर कुछ सैट हम आनंद ले गए । वहाँ के भाइयों ने जिन्होंने थैली भेंट की थी, उनको हमने साहित्य भेंट किया । वहाँ के भाई बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने कहा–पंडितजी आपने गुजरात पर बहुत बड़ा उपकार किया है, अब गुजराती साहित्य पढ़ने से गुजरात में गुरुदेव के विचार फैलेंगे । हम जब मथुरा वापस आने लगे तब उन भाइयों ने हमको ११ हजार रुपये भेंट किए । हमने उनको छपाई आदि का खर्चा बतला दिया था । हिसाब को देखकर बहुत प्रसन्न हुए । हमने कहा–भाई हम तो आपके मुनीम हैं । जो धन आप भाइयों ने दिया, उसका हिसाब देना हमारा कर्त्तव्य था । आनंद से वापस मथुरा आ गए । अब हमारा साहस सौ गुना बढ़ गया । अब हमने

सोचा कि अन्य भाषाओं में भी पत्रिका निकालनी चाहिए । मराठी एवं उड़िया भाषा में पत्रिका निकाली । अब कुछ दिनों से मथुरा का कार्य बढ़ जाने के कारण मराठी पत्रिका अमलनेर जिला जलगाँव महाराष्ट्र में तथा उड़िया पत्रिका के प्रकाशन का कार्य भुवनेश्वर शाखा को दे दिया है । इधर अनुवाद करने वाले प्रूफ रीडिंग करने वाले उन भाषाओं के कम मिलते थे ।

बीच-बीच में हम गुरुदेव के तथा वंदनीया माता जी के पास दर्शन करने हरिद्वार जाते रहते थे और सभी बातें बतलाते रहते थे । दूसरी भाषाओं में पत्रिका निकालने पर वह बहुत प्रसन्न हुए । वे कहते तू जीवन भर मेरे विचारों को फैलाने में ही सारा समय लगाना । चमक-दमक में मत फँस जाना और अहंकार बड़प्पन से दूर रहना । तुमको हमने विचारों को फैलाने का कार्य सोच-समझकर सुपुर्द किया है । तुम हमारे विचारों को ही घर-घर पहुँचाते रहना और कहा-तुमने कई भाषाओं में पत्रिका निकाली है, हमको उससे भारी संतोष है । हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ रहेगा । तुम भटक मत जाना । क्रिया के साथ ज्ञान का प्रचार करना । कर्मकांड में ही मत फँस जाना । आगे चलकर हमारे बच्चे कर्मकांड पर ही जोर देंगे, क्योंकि यह सरल है और हमारे विचारों को घर-घर पहुँचाना कठिन है और इसमें तुझको बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा और तेरा साथ कोई नहीं देगा । विरोध करेंगे, कहेंगे, यह तो पुस्तक विक्रेता है । हमारे पास दो ही चीजें थीं, एक सत्संग, दूसरा स्वाध्याय । हमने तुझसे इसकी बाबत पूछा, तब तुमने हमसे कहा कि गुरुदेव हमको स्वाध्याय दे दो, क्योंकि हम साहित्य पढ़ने से ही बदले हैं । हमने तुमसे उस समय कहा था कि इसमें बहुत परेशानी होगी, परंतु तुमने साहित्य पसंद किया । आगे जाकर तुम्हारी भारी परीक्षा होगी । गुरुदेव ने कहा-बेटा, तुमने साहित्य पसंद किया था, तुमने गुजराती साहित्य निकाल कर साहस का परिचय दिया है ।

गुरुदेव ने पेट के गोले को बच्चा बनाया

गुरुदेव ने अब हरिद्वार में शिविर लगाना प्रारंभ कर दिया । हमसे कहा-तुमको हरिद्वार शिविरों में रहना है, और गोष्ठी भी तुमको लेनी पड़ेगी, तथा साहित्य जितना है, उसका स्टाल लगना पड़ेगा । साहित्य का लाना आवश्यक है । मुख्य तो हमारे विचार ही हैं, जितना भी साहित्य अधिक से अधिक छपा सकें छपवाकर ले आना, और जब शिविरों की छुट्टी हो तब मथुरा की व्यवस्था भी देखकर वापिस आ जाया करना । शिविरों में हम गोष्ठी लेते, प्रवचन हमारा भी होता था । एक दिन हम गुरुदेव की बाबत कह रहे थे । हमने कहा कि एक बहन ने हमको विदेश से डालर भेजे । हमने सोचा कि किस खुशी में इतने डालर भेजे हैं । यहाँ देश में तो हमको कभी कोई भाई-बहन दान भेजता ही नहीं है । हमने बहन को पत्र में लिखा कि बहन जी आपने किस खुशी में इतने डालर भेजे हैं । बहन जी का पत्र आया कि गुरुदेव विदेश आए थे तब हमने कहा था कि हमारे बच्चा नहीं है, गुरुदेव के आशीर्वाद से बच्चा हुआ है । उसी खुशी में डालर भेजे हैं । यह बात हम प्रवचन में कह रहे थे कि उनके आशीर्वाद फलीभूत होते हैं । जिसको भी आशीर्वाद देते थे, सब फलते थे । उसी समय शांतिकुंज में रामसिंह टाँक जो विदेश से आए थे, उसने प्रवचन सुना । जब हम कमरे पर आ गए तब रामसिंह हमारे पास आया । उसने कहा कि आपको यह बात कैसे मालूम पड़ गई ? हमने कहा कि उस बहन का पत्र आया था । तब उसने हमको किस्सा सुनाया कि गुरुदेव हमारे घर पर ठहरे थे । हमारी धर्मपत्नी बहुत समय से बीमार थी । उनके पेट में पत्थर जैसा गोला था, वह पीली पड़ गई थी । डाक्टरों ने जबाब दे दिया था कि कैसा भी आपरेशन कराओ पर बच नहीं सकती है । आपरेशन कराओगे तो उसी समय इसका स्वर्गवास हो जाएगा,

हमने इसी भय से आपरेशन नहीं कराया कि जब तक शरीर चल रहा है ठीक है, गुरुदेव चुप हो गए, उसकी तरफ देखा अवश्य, एक दिन एक बहन हमारे पास आई और कहा-हम गुरुदेव को अपने घर ले जाना चाहते हैं। हमने काफी मना किया, परंतु बहन जिद पड़ गई। गुरुदेव को अपने घर ले गई। घर पर उससे जो बातें हुई हमको पता नहीं था। गुरुदेव हमारे घर आकर बैठ गए, हमारी पत्नी को बुलाया, अपने पास बिठाया और कहा कि बेटी तू एक बात बतला कि अगर तेरे पेट के पत्थर को हम लड़का बना दें तो क्या तेरे पेट से जो लड़का होगा और कोई तुझसे उस लड़के को माँगे तो क्या तू उसको दे देगी ? पत्नी ने कहा कि गुरुदेव मैं वचन देती हूँ कि उसी समय बच्चे को दे दूँगी। गुरुदेव ने कहा-तेरे एक वर्ष में लड़का होगा, गुरुदेव ने उस बहन को बुलाया, जो अपने घर ले गई थी। उससे कहा कि इस लड़की के लड़का होगा, तुझे ध्यान रखना होगा, जिस दिन बच्चा हो, उसी दिन ले लेना। तेरे सामने वचन दे रही है। वह बहन प्रसन्न हुई। रामसिंह टाँक ने कहा कि हम उस समय वहीं खड़े थे। सब बातें सुन रहे थे। हमने अलग से उस बहन को जो घर ले गई थी, बुलाकर पूछा तो उसने कहा-गुरुदेव को घर ले गई वहाँ जाकर गुरुदेव से कहा-हमारे पास बहुत पैसा है। हमारा बड़ा कारोबार है पर हमारे लड़का नहीं है आप आशीर्वाद दो कि हमारे यहाँ लड़का हो जाए। गुरुदेव बोले कि बेटी, तेरे भाग्य में लड़का नहीं है। मैं कहाँ से तुझको लड़का दे दूँ। उस लड़की ने गुरुदेव से कहा-आप भारत के सबसे बड़े संत हैं, मैं आपसे लड़का ले लूँगी तभी इधर से जाने दूंगी। गुरुदेव ने फिर कहा-बेटी, तेरे भाग्य में बच्चा है ही नहीं, फिर मैं कहाँ से दे दूं ? लड़की बोली कि आप हमको आशीर्वाद दे दो कि हमारे लड़का हो जाए। आप गायत्री के उपासक हैं आपने आज तक जिसको भी

आशीर्वाद दिया है वह फलीभूत हुआ है । गुरुदेव ने कहा-बेटी तू किसी का लड़का जिस समय पैदा हो, उस समय ले ले और उसको इस भावना से पाल कि मेरे ही पेट से बच्चा हुआ है । अगर तूने उस बच्चे को इस भावना से पाला तो शायद तेरे बच्चा पैदा हो जाए । लड़की बोली-गुरुदेव बच्चा पैदा होते ही कौन दे देगा ? पशु भी अपने बच्चे को छूने नहीं देता है । कुतिया के पिल्ले को कोई छूता है तो काटने दौड़ती है । आप ही बच्चा दिला दें । इतना कहने पर गुरुदेव हमारे यहाँ से तुम्हारे पास चले आए , और यहाँ पर हमको कह रहे हैं कि इस बेटी को बच्चा होगा । यह तुझको बच्चा देगी । राम सिंह टाँक ने कहा- इस बात को सुनकर हमको बड़ा आश्चर्य हुआ कि गुरुदेव के पास इतना तप है कि वह पेट में पत्थर जैसे गोले को बच्चा बना सकते हैं । गुरुदेव वहाँ के कार्यक्रम करके भारत चले आए । नौ माह बाद जब हमारी पत्नी को प्रसव पीड़ा होने लगी तो हम उसे अस्पताल ले गए । वह बहन भी कार लेकर हमारे साथ ही गई । जब लड़का पैदा हुआ तो हमारी पत्नी ने उस बहन को तुरन्त ही लड़का दे दिया । वह लड़के को लेकर घर चली गई । उसने लड़के को इसी प्रकार पाला जैसे उसके पेट से ही पैदा हुआ हो । लड़का जब तीन वर्ष का हो गया तब वह बहन भी गर्भवती हो गई और नौ माह बाद उसको भी लड़का पैदा हुआ । लड़का बड़ा हो गया तब उसने दोनों लड़कों को समान ही समझा क्योंकि गुरुदेव ने उससे बचन ले लिया था कि पहले बच्चा को अपने पेट के बच्चे से अधिक प्यार देना है और उसी भावना से रखना है कि मेरा बड़ा बेटा है । राम सिंह से यह किस्सा सुनकर हमारी श्रद्धा गुरुदेव के प्रति हजार गुनी बढ़ गई और हमने कहा-हमारे गुरुदेव साक्षात् भगवान हैं । हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमको गुरुदेव के साथ रहने का मौका मिला है । हमने रामसिंह टांक से कहा-कल सुबह ही गोष्ठी में तुम सबको इस सारी घटना को सुनाना । रामसिंह का प्रवचन सुनकर सभी भाइयों ने माँग की

और उसको क्षेत्र में ले गए । उनका प्रवचन बहुत जगह हुआ । हमको उस समय मदन लाल गांधी की याद आई कि गुरुदेव में वह शक्ति है कि वह मरे को जिन्दा कर सकते हैं और पत्थर को बच्चा बनाकर पैदा करवा सकते हैं । हमने गुरुदेव से पूछा तो उन्होंने कहा-बेटा वह शक्ति हमारी नहीं हमारे गुरुदेव की है । ऐसे गुरुदेव पाकर हम सभी अपने को धन्य ही मानते हैं ।

पूज्यनीया ताई जी का स्वर्गवास

हरिद्वार में जितने भी शिविर लगते थे उसमें गुरुदेव साहित्य प्रचार पर विशेष जोर देते थे और गायत्री तपोभूमि मथुरा में सबसे पहले साहित्य लगाने के लिए हमको कहते थे । इसलिए हमको शिविरों में हरिद्वार ही रहने को कहते थे । जब शिविरों की छुट्टी होती थी तब हम मथुरा आकर व्यवस्था देख जाते थे ।

गुरुदेव ने एक दिन हमको बुलाकर कहा-बेटा सारे देश में यज्ञ काफी हो चुके हैं । १००८ कुंड के चार स्थानों पर यज्ञ हो चुके हैं । २४, ५१, ५ कुंडों के भी यज्ञ बहुत हो चुके हैं । जब मथुरा में थे तब हम तुम दोनों अधिकतर यज्ञों में ही रहते थे । दो माह तक लगातार क्षेत्रों में रह कर मथुरा आते थे । दो-दो माह यज्ञों में बाहर रहना पड़ता था । उन्होंने कहा-देख ताई (गुरुदेव की माता जी) का स्वर्गवास हुआ तब तुमने हमको समाचार दिया था पर हम यज्ञ छोड़कर नहीं गए ।

हमको ताई के स्वर्गवासी होने का तार राउरकेला में मिला था । उस समय हम गुरुदेव के साथ थे । हमें राउरकेला से दुर्ग आना था इसलिए रात को हमने गुरुदेव को यह बात नहीं बताई । सुबह उठते ही गुरुदेव को बतलाया कि ताई जी का स्वर्गवास हो गया है । आगे के कार्यक्रमों का क्या करना है ? गुरुदेव कुछ देर मौन रहे फिर कहा-कार्यक्रम यथावत चलते रहेंगे । हमने कहा-मथुरा नहीं चलना है । गुरुदेव ने मना कर दिया । स्वर्गवास होने का मथुरा से एक तार राउरकेला को, दूसरा दुर्ग को

तथा तीसरा बालाघाट को दे दिया था । वहाँ के भाइयों को पता चल ही गया था, परन्तु उनको यह पता नहीं था कि राउरकेला भी पंडितजी को तार मिल गया है । दुर्ग स्टेशन पर भारी भीड़ थी । बालाघाट के भाई भी आ गए थे । सब चिन्तित थे कि अब यज्ञों के कार्यक्रमों का क्या करना होगा ? जैसे ही हम गाड़ी से उतरे, हमको वहाँ के कार्यकर्त्ता मिलने आए और कहा-हमारे पास तुम्हारे नाम से तार आया है । गुरुदेव की माता जी का स्वर्गवास हो गया है । हमने पूर्व सूचना मिलने की बात बतला दी । गुरुदेव ने कहा है कि जितने भी कार्यक्रम बन चुके हैं यथावत् चलते रहेंगे । हम मथुरा नहीं जाएँगे । तुम चिंता मत करो, अपनी-अपनी यज्ञों की तैयारी रखो । दुर्ग में गुरुदेव का प्रवचन हुआ । वहाँ से बालाघाट गए । बालाघाट के भाइयों को हमने दुर्ग में कह दिया था कि गुरुदेव मथुरा नहीं जाएँगे । जब हम बालाघाट पहुँचे, तब वहाँ का कार्यक्रम चल ही रहा था । भाई वीरेश्वर जी मथुरा से पहुँचे और कहा-गुरुदेव को मथुरा चलना है । माता जी ने हमको भेजा है । हमने कहा-गुरुदेव से बातें हमने कर ली हैं । तार राउरकेला में मिल गया था । वे कार्यक्रम छोड़कर नहीं आएँगे । गुरुदेव ने कहा है कि हमने पहले कार्यक्रम दिए थे तब से अब तक इन कार्यकत्ताओं ने कितना श्रम किया है, इनका क्या हाल होगा । हमने कहा-वीरेश्वर जी, तुम्हीं बातें कर लो । वीरेश्वर जी किसी भी बात को समझाने में हम जितने भी भाई हैं, सबमें प्रबुद्ध हैं । उन्होंने गुरुदेव से सब प्रकार से कहा, परन्तु गुरुदेव ने मना कर दिया । उन्होंने फिर गुरुदेव से चलने का आग्रह किया । गुरुदेव उन पर बहुत नाराज हुए और उनको वापस मथुरा भेज दिया । गुरुदेव बोले-गायत्री तपोभूमि में बच्चे हैं, ओम प्रकाश आ गया सतीश है हम क्या करेंगे । माता जी सब व्यवस्था कर देंगी । गुरुदेव ने साफ मना कर दिया । हम एक माह बाद वापस आए । हमारा कार्यक्रम दो माह का था पूरा करके मथुरा वापस आए । हमने जब मथुरा आ रहे थे तब कहा माता जी हमसे

भी नाराज होंगी कि तुम गुरुदेव को मथुरा नहीं लाए । गुरुदेव ने कहा- माता जी को हम कह देंगे । माता जी जानती हैं कर्त्तव्य ही धर्म है । वहाँ के कार्यकत्ताओं का क्या हाल होता ? कितना यज्ञों का खर्चा हो चुका था । गुरुदेव हमेशा कर्त्तव्यपरायणता को ही धर्म मानते थे । शरीर के प्रति धर्म के बारे में बतलाते थे । इसको दोष दुर्गुणों से दूर रखना चाहिए, आलस्य असंयम नहीं करना चाहिए । श्रम करना ही धर्म है, परिवारों को संस्कारवान बनाना ही धर्म है । समाज में सामाजिक कुरीतियाँ फैली हैं उनको छुड़ाना ही धर्म है । कर्त्तव्य को ही गुरुदेव धर्म बतलाते थे । पूजा पाठ कर्मकांड यज्ञ तीर्थयात्रा धर्म को जीवन में धारण करने के लिए सीढ़ी है । कर्मकांड को वे सीढ़ी बतलाते थे । गुरुदेव कहा करते थे कि रामायण में सभी कर्त्तव्यपरायण थे, तभी रामायण इतनी घर-घर पहुँची है । गुरुदेव बोले-बेटा यज्ञ कितने ही कर चुके हैं, अधिकतर यज्ञ बड़ी-बड़ी जगह हो चुके हैं । अब हमको गाँवों में जाना है । गाँव का निर्माण करना है । अब तुम गोष्ठी में कहना कि अब गाँव-गाँव टोली बनाकर जाना है । वहाँ पर दिन में दीवार लेखन करना है । कोई घर बाकी नहीं रहे जिस पर सद्वाक्य नहीं लिखा हो । भोजन का सामान साथ में रखना है क्योंकि नए गाँव में व्यवस्था नहीं हो सकेगी । चार-चार दिन के साईकिलों के कार्यक्रम बनाए जाएँ ।

ग्रामों में प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम

हमने गुरुदेव के बताए अनुसार प्रवचन के द्वारा सभी भाइयों को निर्देश दिए । गाँव-गाँव जाकर प्रवचन करना चाहिए । सद्वाक्य लेखन एक-एक कुंड का यज्ञ का कार्यक्रम रखें, उसमें गाँव वालों से एक-एक बुराई अवश्य छुड़वाएँ एक अच्छाई ग्रहण कराएँ और प्रवचन में रामायण के आधार पर बतलाएँ कि भाई-भाई का प्रेम, सास-बहू का प्रेम, समाज के लोग कितने समाजसेवी थे गीता रामायण के ऋषियों को लेकर प्रवचन करें । हम जब चुप हो गए तब डा. रतन सक्सेना उठकर खड़े हो गए ।

डॉ० रतन सक्सैना सतना के रहने वाले थे । वे बोले-पंडितजी स्टेज से प्रवचन करना जानते हैं । गाँव में जाकर स्वयं बतलावें, कैसे कार्यक्रम होगा ? हम उनकी बात सुनकर चुप हो गए । अब हमने शांतिकुंज में ही साइकिल सीखना प्रारंभ कर दिया । शाम को एक घंटा साइकिल चलाना सीखते थे । हम एक माह तक शांतिकुंज में साइकिल चलाना सीखे । वहाँ शिविर चलते थे उनमें हमारा रहना अनिवार्य था । जो भी कार्य करते गुरुदेव साहित्य स्टाल अवश्य लगवाते थे । शांतिकुंज में गोष्ठी लेते थे और साहित्य भी संभलवाते थे । जब हम मथुरा आए तब हमने साइकिल यात्रा का पूरा प्रोग्राम बनाया । सबसे पहले हम कानपुर गए । भाई शुक्ला जी सैंगर जी और पाँच छै भाई थे । सब हमारे साथ कानपुर से साईकिलों से यात्रा पर गए । कानपुर के भाई बहिनों ने टोली को उत्साह पूर्वक विदाई दी । करीब पाँच दिन के कार्यक्रम बनाए गए । साइकिलों पर ही बिस्तर भोजन का कच्चा सामान भी था, क्योंकि नए गाँव का कार्यक्रम था । जिस दिन पहुँचते थे उस दिन सारे गाँव में दीवार लेखन करते थे और एक भाई भोजन बनाता था । भोजन का कार्य हमारे जिम्मे था । रात को प्रवचन होता था । एक कुंड का यज्ञ भी कर लेते थे और गाँव वालों से दक्षिणा में एक बुराई छुड़ाते थे एक अच्छाई ग्रहण कराते थे । भाई हरिप्रसाद शुक्ला टोली नायक थे । हम भी उनकी आज्ञा का पालन किया करते थे । इस प्रकार गाँव का साईकिल पर कार्यक्रम बना । करीब दस पन्द्रह गाँवों में गए । एक गाँव में सभी भाई गाँव की दीवारों पर दीवार लेखन करने गए, हमको भोजन बनाना था । जिस जगह में हम ठहरे थे, उसके पास एक बुढिया माता का मकान था । हम उसके पास गए, उसके चरण छुए उसने कहा-क्या बात है बेटा । हमने कहा-माता जी हमको भोजन बनाना है आप बर्तन दे दो तो बड़ी कृपा होगी । माता जी ने कहा-तुम कौन हो ? हमने कहा-माता जी हम ब्राह्मण हैं । उसने कहा-तब तो बर्तन देती हूँ । और उसने दाल बनाने की भगौनी, थाली आटा गूँथने की

दे दी । कच्चा सामान हमारे पास था । हमने कहा-माता जी थोड़ी सी लकड़ी या उपले दे दो, तो उससे हम आग जलाकर भोजन बना लेंगे । माता जी ने कहा-बेटा हमारे पास लकड़ी नहीं है । हम तो अरहर की लकड़ी रखते हैं इसी से भोजन बनाते हैं । हमने उसी लकड़ी को लेकर व्यवस्था की । गाँव के कुछ भाई हमको भोजन बनाते देख रहे थे । कुछ भाई बोले-देखो भाई पेट बड़ा बुरा है, बेचारा बुड्ढा भोजन बना रहा है । उसमें से एक बोला-बुड्ढा कोई मुफ्त में थोड़ी बनाता होगा, पैसा लेता होगा तब भोजन बना रहा है । हम उनकी बातें सुन रहे थे । जब हरिप्रसाद शुक्ला दीवार लेखन करके लौट रहे थे तब उन्होंने भी उन गाँव वालों की बातें सुन लीं । जब सभी भाई भोजन करने आए तब हमने मोटी मोटी रोटी जो बनाई थीं सबको एक-एक दे दी । सबने एक-एक ही रोटी खाई । कुछ बची थी रात के लिए रख लीं । शुक्ला जी बोले-भाई गाँव वाले क्या कह रहे थे ? इतने में हम बोल पड़े कि यह कह रहे थे कि बुड्ढा रोटी बना रहा है और जवान लोग गाँव में घूम रहे हैं, पेट बड़ा बुरा है, नौकर है , वेतन लेता होगा । तभी तो यह कार्य कर रहा है । इतना हमारा कहना था कि सभी भाई बड़े जोर से हँस पड़े । भाई शुक्ला जी बोले जब हम वापस आ रहे थे तब हमने भी वही बातें उनसे सुनी थीं । तभी आप भाइयों से पूछ रहे थे परन्तु पंडित जी ने ही बतला दिया । हमारी पाँच-छै भाइयों की टोली थी । गाँव जाकर काम भी करते और जब इकट्ठे होते तब खूब हँसते भी थे । सभी अपनी-अपनी कहानी बतलाते थे । रात को जब प्रवचन हुआ तब भाई शुक्ला जी ने कहा-आप लोगों का भ्रम है । यह हमारे व्यवस्थापक हैं । इनके ही निर्देश पर टोली बनाकर चले हैं । हमारे बड़े भाई हैं । सभी गाँव वालों के सामने हम भी स्टेज पर बैठे थे । टोली वाले भाइयों ने हमारे चरण छुए, गाँव वालों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि व्यवस्थापक होकर रोटी बनाता है । जिस मिशन में ऐसे भावनाशील व्यक्ति हैं तभी गाँव-गाँव जाकर दीवार लेखन कर रहे

हैं और बुराइयाँ छुड़ा रहे हैं । समाज के प्रति इनका बड़ा प्रेम है । हमने बताया कि हमारा गुरु हरिद्वार में रहता है । यह भी बताया कि आप हरिद्वार अवश्य जाएँ । गाँव वालों ने कहा-हम उनके दर्शन करने अवश्य जाएँगे । जिनके शिष्य इतने सेवाभावी हैं तब उनके गुरु के दर्शन तो करने ही हैं । इस प्रकार हम गाँव गाँव गए । एक जगह एक नाला आ गया । हमारे साथ जितने भाई थे, सब नाले को देखकर खड़े हो गए । हमारी साइकिल पीछे थी । तब हम आए । हमने अपनी साइकिल कंधे पर रख ली और नाला पार कर लिया । तब सभी भाइयों को साहस हुआ और साइकिल कंधों पर रखकर नाला पार किया, नाला पार करके सभी हँसने लगे । कहने लगे-पंडित जी नाला क्या समुद्र को भी पार कर सकते हैं, हमको पूर्ण विश्वास हो गया है । सब लोग हँसते हुए साइकिल पर सवार होकर चल दिए । पाँच दिन की यात्रा में स्वर्ग जैसी स्थिति में रहे । वह यात्रा हमको आज तक याद आती है । शुक्ला जी ने हमारे फोटो भी यात्रा के खींच लिए थे और कानपुर आकर हरिद्वार गुरुदेव को समाचार भेज दिए कि पंडित जी के साथ गाँव की यात्रा की थी ।

इसके बाद हम गुजरात गए, वहाँ भी साइकिल यात्रा पर गाँव में गए । वहाँ पर भी खूब हवा फैली, सब शाखाओं से साइकिल यात्रा निकालकर गाँव-गाँव गए । एक कुंड का यज्ञ करते दीवार लेखन करते बुराई छुड़ाते । इसकी हवा सारे देश में फैल गई । उसीका परिणाम है कि मिशन इतना फैला । गुरुदेव गाँव-गाँव यज्ञ चाहते थे । अब समय आ गया है कि हम गाँव-गाँव टोली बनाकर निकलें और यज्ञ कराएँ । दीवार लेखन करें, बुराई छुड़ाएँ गाँव में संस्कार कराएँ । अब वह बड़े-बड़े यज्ञ नहीं चाहते हैं । उसमें खर्चा अधिक होता है । जनता से धन लेते हैं एवं देते कुछ नहीं हैं ।

अब एक दिन गुरुदेव की प्रेरणा आई कि उनको अब कुशल इंजीनियरों की आवश्यकता है । अब तक जो भी कार्यकर्ता हैं वह बांस

बल्ली हैं । पंडाल बनाने वाला कार्य मजदूर भी कर सकता है, पर गुरुदेव को अब छत ढालनी है । उसके लिए साहस वाले आत्मबल वाले कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है जो त्याग कर सकें, बलिदान कर सकें । भीड़ की जरूरत बिलकुल नहीं है । भीड़ गंदगी फैलाती है । अब भीड़ में से कुशल कार्यकर्त्ता छाँटने हैं । अब गाँव-गाँव जाकर यज्ञ कराने, संस्कार कराने, बुराई छुड़ाने, दीवार लेखन करने का कार्य करना चाहिए । हिम्मत वाले कार्यकत्ताओं की आवश्यकता है । प्रत्येक घर में गायत्री माता का चित्र एक माला जप कराना प्रारंभ कराना चाहिए । अब गुरुदेव गाँव का निर्माण चाहते हैं । एक लाख गाँवों में यज्ञ कराने का काम, शाखा कायम करने का काम कराना चाहते हैं । कुशल इंजीनियरों की आवश्यकता है । समझदार आदमी थोड़े ही बहुत कार्य कर दिखाते हैं । समझदार आदमी एक अच्छा है । भीड़ कुछ नहीं कर पाती है ।

देवरहा बाबा के दर्शन

हम एक दिन गायत्री तपोभूमि में बैठे ऑफिस में कार्य कर रहे थे । हमारे पास जगन प्रसाद जी रावत आए, वह उत्तर प्रदेश सरकार में मिनिस्टर थे । हमारे पास आकर बैठ गए । हमने चाय नाश्ता मँगाया । विदाई सम्मेलन में गुरुदेव हमारा परिचय इनसे करा चुके थे । हम से उम्र में भी कॉफी बड़े थे । हमको नाम लेकर ही पुकारते थे । चाय पीने के बाद उन्होंने कहा-लीलापत हम देवरहा बाबा के यहाँ जा रहे हैं, तुमको चलना हो तो हमारे साथ चलो । हमने कहा-मिनिस्टर के साथ जाने के लिए किसका मन नहीं होगा । हम शीघ्र तैयार हो गए । देवरहा बाबा के दर्शन करने गए । वहाँ पर केन्द्र के जगजीवनराम मिनिस्टर भी थे और भी एक दो मिनिस्टर थे । दर्शन के लिए सब खड़े थे, हम भी रावत जी के साथ दर्शन के लिए खड़े हो गए । देवरहा बाबा मंच पर झोपड़ी थी, उसमें से निकले और जनता को चारों तरफ देखा । वहाँ पर पुलिस की व्यवस्था थी । चारों तरफ देखकर बाबा ने जहाँ मिनिस्टर खड़े थे, उनकी

तरफ इशारा किया । हम भी उनके साथ थे । पुलिस जगजीवन राम के पास गई । देवरहा बाबा ने मना कर दिया । फिर और मिनिस्टरों के पास गई । देवरहा बाबा ने फिर मना कर दिया । फिर उन्होंने हमारी तरफ इशारा करके कहा, पुलिस ने हमारे पास आकर कहा । बाबा ने कहा-हाँ इनको हमारे पास लाओ । हम पुलिस के साथ बाबा के पास गए । बाबा मंच पर बैठे थे । हम नीचे खड़े थे । हमने बाबा को साष्टांग दंडवत किया । बाबा ने कहा-बेटा श्रीराम अज्ञातवास को चला गया । हमने कहा-हाँ बाबा चले गए । उन्होंने हमसे कहा-बेटा उनके कार्यों को ठीक तरह से करना । हमने कहा कि अभी कार्य ठीक चल रहा है । बाबा बोले-कोई कठिनाई हो तो हमको बतलाना । बाबा ने कहा-बेटा वे साक्षात् सविता हैं । तू मिशन के कार्य को मन लगाकर करना । हमने कहा-बाबा बस आप जैसे सन्तों का हमको आशीर्वाद चाहिए तब हम अवश्य ही अपने कार्यों में सफल होंगे । बाबा ने हमसे कहा-तुम मंच के नीचे आओ । हम मंच के नीचे गए मंच में छेद था । उसमें से बाबा ने अपना पैर निकालकर हमारे सिर पर रखा और ऊपर मंच पर ही झोपड़ी बनी थी, वहाँ से एक चादर लाए और बताशे लाए हमको चादर उढ़ाई और तीन अंजलि भरकर हमको बताशे दिए और कहा-हमारे आशीर्वाद तेरे साथ हैं । हम सोच रहे थे कि हमने बाबा के दर्शन पहली बार किए हैं । फिर बाबा को कैसे मालूम पड़ गया कि हमारे मन में बड़ा भ्रम रहा । हम मिनिस्टरों के पास गए । बाबा ने मंच से कहा-अब सब हमारे साथ कीर्तन करो । जनता कीर्तन करने लगी और बाबा कीर्तन कराकर कुटिया में अन्दर चले गए । जनता वापस आ गई । हमने मिनिस्टरों को बताशे का प्रसाद दिया । रावत जी को साथ लेकर हम तपोभूमि आए । यहाँ पर आरती हो रही थी । हम आरती में बैठ गए । जप करने के बाद हमने जो चादर बाबा ने हमको उढ़ाई थी वह गायत्री माता के चरणों में रख दी और बताशे का भोग लगाकर भाई बहिनों को आरती में बंटवा

दिया । हमसे जब तपोभूमि के भाइयों ने पूछा तब हमने सारी बातें उनको बतलाई । हम सभी भाई अचंभे में पड़ गए कि बाबा को तुम्हारी बाबत कैसे पता चल गया । जब गुरुदेव अज्ञातवास से आए और हम उनसे मिले, तब हमने सारी बातें बतलाई कि देवरहा बाबा ने हमको बुलाकर चादर उढ़ाई थी और बताशे का प्रसाद दिया था हमने पूछा गुरुदेव बाबा को हमारी बाबत कैसे पता चल गया ? गुरुदेव बोले बेटा संतों को शक्ल देख कर ही पता चल जाता है । हम और देवरहा बाबा हिमालय में बहुत दिन रहे हैं, वह संत हैं, संत को सब कुछ मालूम पड़ जाता है । इस प्रकार हमने गुरुदेव के साथ संतों के दर्शन किए । आनन्द स्वामी के कई बार दर्शन किए । विनोबा जी के दर्शन किए और मोटा महाराज गुजरात वाले के दर्शन किए ।

सन् १९७८ की बाढ़ में विनाश

एक बार इतनी अधिक वर्षा हुई कि जमुनाजी के जल का स्तर बहुत ऊँचा हो गया । सुबह यज्ञ हो रहा था । हम जमुना जी के पानी की तरफ देख रहे थे । तपोभूमि के पीछे के सभी दरवाजे एवं नाले बंद करवा दिए, परन्तु पानी का स्तर इतना अधिक बढ़ गया कि पानी सड़क पर होकर तपोभूमि के अंदर प्रवेश करने लगा । हमने यज्ञ शीघ्र पूरा करके अग्नि ऊपर एक कमरे में रखवा दी और हवन सामग्री, समिधाएँ घृत, भोग का सामान आदि सब तीसरी मंजिल पर एक कमरे में रखवा दिया । उस समय विद्यार्थी भी थे । हमने गायत्री तपोभूमि के सभी भाई बहिनों बच्चों से कहा-तुम लोग तपोभूमि शीघ्र खाली करो । एक डंडा हाथ में लेकर सबको बाहर निकाल ही रहे थे कि तपोभूमि में कमर तक पानी भर गया । हमने अखंड ज्योति मृत्युंजय शर्मा को फोन कर दिया कि तपोभूमि में पानी आ गया है एवं सभी तपोभूमि वालों को आपके पास भेजा है, आप इन सबकी व्यवस्था कर देना । उन्होंने शीघ्र एक धर्मशाला ले ली और भोजन बनाने की व्यवस्था कर दी । सारा सामान बाजार से

खरीद लिया । हम फोन करके ऊपर जाने लगे । तब तपोभूमि में पानी हमारी गर्दन तक आ गया था । अगर हम पन्द्रह मिनट पहले ऊपर चढ़कर नहीं जाते तब हमारा जीवन ही ख़तरे में था । हम तीसरी मंजिल पर जहाँ सामान रखा था, कमरे पर गए । हम रात भर सोए नहीं थे । एक धोती वहाँ रखी थी । एक बनियान पहन रखी थी । बस यही सामान हमारे पास था । हमको सुबह चाय पीने की आदत थी । हमने सोचा अब चाय मिल जाए तो ठीक है । हमने कार्यकर्त्ताओं के कमरों में जाकर देखा तो एक कमरे में एक बल्टी पानी भरा था । हमने सोचा कि इस पानी से तो हम एक सप्ताह निकाल देंगे । दूसरे कमरे में गया, वहाँ पर हमको ४०० ग्राम के लगभग दूध एक लोटा में रखा मिला एवं वहाँ चाय पत्ती एवं चीनी भी थी । अब हमको चाय का सामान तो मिल ही गया था । सामान पाकर हमें तसल्ली हुई । एक कमरे को और देखा तो गुरुदेव की कृपा से एक पैकिट डबल रोटी का भी मिल गया । इस घटना को हम गुरुदेव गायत्री माता का चमत्कार ही मानते हैं कि ऐसी परिस्थिति में हमें ये सारा सामान कमरों में उपलब्ध हो गया । स्टोव कमरे में था ही । हमने आधे दूध की चाय बनाकर पी ली । दूसरे दिन सुबह शौच से निवृत्त हुए । सीढ़ियों में जमुना जी का जल आ गया था, उसमें स्नान किया । कमरे में पूजा का सारा सामान था ही, वहीं से भावना से गायत्री माता की आरती की, भोग लगाया एवं कुण्ड में रखी हुई अग्नि से यज्ञ किया । इसके बाद बचे हुए दूध की चाय बनाकर डबल रोटी के दो पीस चाय के साथ खाए और सोचने लगे कि चाय चीनी हमारे पास है ही डबल रोटी भी है । सिर्फ दूध ही नहीं है । हमने सोचा चलो अब बगैर दूध के ही चाय बनाकर डबलरोटी से अपनी क्षुधा की पूर्ति कर लिया करेंगे । पानी का स्तर बढ़ रहा था । हम छत पर चढ़कर देख रहे थे । मवेशी एवं बहुत से आदमी बहते जा रहे थे । दृश्य बहुत ही खतरनाक था । उनको देखकर हमारा हृदय पिघल जाता था, परन्तु हम करते ही क्या, इस

प्रकार तीन दिन तक जल स्तर वैसा ही रहा । हम गायत्री माता की दोनों समय ऊपर से आरती करते और यज्ञ भी करते रहे । रेडियो हमारे पास था, हमने सुना कि अभी पाँच फुट पानी और आएगा । अब हमने सोचा अगर पाँच फुट पानी आया तब हम भी बह जाएँगे, अब बच नहीं सकते हैं । पास के टीलों पर जयसिंह पुरा के भाई चढ़ गए थे । उनको भोजन की व्यवस्था नहीं थी । मिलट्री सहायता के लिए आ गई थी । हमसे मिलट्री वालों ने पूछा–आपको भोजन पहुँचाएँ ? हमने कहा–हमारे पास भोजन कैसे आ सकता है ? हमारे चारों तरफ जल ही जल है । हम ऐसे रह रहे हैं जैसे कोई टापू में रहता है । उन्होंने कहा–हम हेलिकॉप्टर से भोजन छत पर डाल देंगे । हमने उनसे मना कर दिया । हमारे पास भोजन की व्यवस्था में व्यर्थ समय बर्बाद नहीं करो । हमने कहा–हमारे बहुत से भाई सामने वाले टीले पर हैं, उनके भोजन की व्यवस्था नहीं है, उनके भोजन की व्यवस्था कर दें । उन्होंने उन टीले वाले भाइयों को भोजन पहुँचा दिया । उधर जो भाई हमने मथुरा शहर में भेजे थे, उनको चिंता लगी रहती थी कि पंडित जी पानी में फँस गए हैं, उनके पास भोजन नहीं है । मृत्युंजय शर्मा को भी चिंता थी और हरिद्वार गुरुदेव को भी पत्र लिख दिया था । फोन से भी सूचना दे दी कि तपोभूमि बर्बाद हो गयी, पंडित जी पानी में फँस गए हैं तथा भारी नुकसान हुआ है । दोपहर बाद मृत्युंजय शर्मा ने नाव वालों से बात की । तपोभूमि के सामने भी सड़क पर ६–७ फुट पानी बह रहा था । नाव वाला कुछ रुपए लेकर तैयार हो गया । उसमें दो भाई जो तैरना जानते थे, उनको नाव में बिठाकर भोजन पानी, दूध का डिब्बा, चाय, कपड़े सभी सामान नाव में भेजा । हम तपोभूमि का मुख्य दरवाजा बंद करके ताला लगाकर आए थे । नाव जब दरवाजे पर आई तब जो भाई आए थे दरवाजे के ऊपर से चढ़कर एक एक करके सामान हमारे पास लाए । एक हाथ से तैरते एक हाथ से सामान लाते थे । हमने कहा–भाई आपने इतना कष्ट क्यों उठाया ?

उन्होंने कहा-हम भाइयों को चैन नहीं था । भोजन भी ठीक नहीं लगता था कि आप फँसे हैं । तीन चार दिन का सामान लेकर वह आए थे एवं समाचार लेकर वापस नाव से चले गए । उधर जब गुरुदेव को हरिद्वार समाचार मिले तब उन्होंने हमको एक पत्र लिखा । पत्र सेना वाले लेकर आए । उन्होंने रस्सी बाँधकर पत्र को छत पर फेंक दिया था । हमने पत्र को पढ़ा, उसमें गुरुदेव ने लिखा था कि बेटा तपोभूमि बर्बाद हो गई । सारा सामान नष्ट हो गया । बिल्डिंग गिर गई इसकी मुझे रत्ती भर भी चिंता नहीं है । अगर तेरा साहस चला गया तो हम कुछ भी नहीं कर सकेंगे और तपोभूमि बर्बाद हो जाएगी, तुम अपना साहस बनाए रखना । बाकी सब कार्य हम कर लेंगे । हमने कई बार पत्र को पढ़ा और हमको उस पत्र के पढ़ने से हजार गुना साहस आ गया । हम सुबह शाम ऊपर कमरे में ही गायत्री माता की आरती करते थे, भोग लगाते और यज्ञ करते । अखण्ड अग्नि रखी उसमें समिधा लगाते रहते थे । हमारा नित्य प्रति का काम था । चौथे दिन सुबह पानी कम हुआ और दो घंटे के बाद एक़ दम पानी तेजी से खाली हो गया । हम नीचे गायत्री माता के मंदिर में आए, पानी गायत्री माता के गर्दन तक था, मुँह तक नहीं था । झाड़ू लेकर मंदिर में झाड़ू लगाना आरंभ किया । इतने में शहर में हल्ला मच गया कि आज यमुना जी का पानी उतर गया । समाचार पाते ही तपोभूमि के भाई व विद्यालय के बच्चे आ गए । हमको झाड़ू लगाते देख कर सब झाड़ू लेकर सफाई में लगे । कागज सड़ रहा था । मशीन खराब हो गई थी । टाइप बर्बाद हो गया था । दीवारें भी फट गई थीं । तपोभूमि के सारे भाई बहिन बच्चे हमको देखकर सफाई में लगे गए । गंदगी इतनी थी कि हम एक महीने में भी सफाई नहीं कर सकते थे । नगरपालिका के मेम्बर हमारे पास आए, उन्होंने कहा-आप चिंता न करें, हम आपका सहयोग करेंगे । उनका स्टाफ सफाई को आ गया । वह कागज जो भीगा था उसको उठाकर छत पर ले गए और सुखाने लगे । मथुरा में प्रेस अधिक

हैं, सभी प्रेसों के मालिक आ गए और एक एम. एल. ए. आए उन्होंने कहा-हम सब व्यवस्था करेंगे आप घबराना नहीं पंडित जी । सारे शहर में हल्ला मचा कि अब तपोभूमि सौ वर्ष में भी नई नहीं बन पाएगी । उसका भारी नुकसान हुआ है, परन्तु सारे शहर ने बड़ी मदद की । जो भी आता यही कहता कि तपोभूमि बर्बाद नहीं होना चाहिए । सभी सफाई में लगे रहे । करीब एक सप्ताह सफाई करने में लगा । सारे देश के भाइयों ने हमको पूरी मदद की । सीमेन्ट की व्यवस्था के लिए जिलाधीश ने सहायता का आश्वासन दिया । हमने क्षेत्रों में दौरे का कार्यक्रम बनाया । उस वर्ष विद्यालय के लड़कों ने कहा-एक वर्ष हम नहीं भी पढ़ेंगे तो हर्ज नहीं । हमारे साथ टोली बनाकर चलते थे । यहाँ पर जो बिल्डिंग खराब हो गई थी उसे ठीक कराया, मशीनों को ठीक कराया ।

शक्तिपीठों का निर्माण

गुरुदेव ने उसी समय २४ शक्तिपीठों के बनाने की घोषणा की थी । उन्होंने यह भी कहा-हम शक्तिपीठों का उद्घाटन करने जाएँगे । गुरुदेव कहीं बाहर नहीं जाते थे, सूक्ष्मीकरण में ही रहते थे । सबसे पहली शक्तिपीठ शामलाजी गुजरात में बनी । गुजरात के भाई बहिनों ने कहा-हमारी शक्तिपीठ का उद्घाटन करने चलना है । गुरुदेव ६-७ वर्षों से क्षेत्र में नहीं गए थे । हम मथुरा की ही व्यवस्था संभालते थे । उन्होंने अपना कार्यक्रम शामलाजी का बनाया और शांतिकुंज के भाइयों से कहा-हमारे साथ लीलापत का रिजर्वेशन कराना । शक्तिपीठों के उद्घाटनों में वही हमारे साथ जाएगा । हमको हरिद्वार बुलाया । हमसे कहा-बेटा शामलाजी की शक्तिपीठ बन गई है । उसका उद्घाटन करने चलना है । हमने कहा-गुरुदेव जैसी आपकी आज्ञा । गुरुदेव दिल्ली तक कार में एवं दिल्ली से ट्रेन में आए । हम मंथुरा से उनके साथ बैठते थे । मथुरा स्टेशन पर उस समय बहुत भीड़ थी । आसपास के कार्यकर्त्ता दर्शन करने मथुरा आए थे । यहाँ पर भी गाड़ी १५ मिनट लेट हो गई । भीड़ के कारण

स्टेशन मास्टर ने गाड़ी रोक ली थी । भरतपुर गाड़ी ठहरती ही नहीं थी, परन्तु वहाँ के भाइयों ने ऐसी व्यवस्था की जिससे गाड़ी स्टेशन पर ठहर गई । वहाँ भी बहुत भीड़ थी । प्रत्येक स्टेशन पर जहाँ भी जाते, भयंकर भीड़ मिलती थी । गुरुदेव को एक मिनट का भी आराम नहीं मिलता था । कोटा पर जब गाड़ी पहुँचने वाली थी, थोड़ी सी नींद आ गई । हमने सोचा एक दो मिनट गाड़ी रुकेगी, दरवाजे पर हम खड़े थे वहाँ के भाइयों से बातें करेंगे तब तक गाड़ी चल देगी । कोटा पर बहुत भीड़ थी । हम सब भाइयों से बातें कर रहे थे, इतने में पुलिस इंस्पैक्टर आ गया । वह बोले तुम सब लोग हटो । पंडित जी हमारे पुराने मित्र हैं, मैं इन्हें खूब जानता हूँ , बात करके समय निकाल देगा, गाड़ी चल देगी । हम इनको हाथ पकड़कर नीचे उतारते हैं । तब गुरुदेव के दर्शन करेंगे । हमने जैसे ही इंस्पैक्टर की बात सुनी हम एक दम गाड़ी में भागकर गुरुदेव के पास गए । गुरुदेव को जगाकर कहा-गुरुदेव भारी भीड़ है । सब गाड़ी में चढ़ रहे हैं । गुरुदेव ने कहा-ठहरो हम बाहर आते हैं । गुरुदेव दरवाजे पर आ गए । सबको दर्शन दिए । वहाँ पर गाड़ी को १५-२० मिनट ठहरने की व्यवस्था पहले से बनाकर रखी थी । इस प्रकार जिस स्टेशन पर जाते उस पर १५-२० मिनट गाड़ी लेट हो जाती । गुजरात में जब गोधरा स्टेशन पर गाड़ी पहुँची तो भीड़ का ठिकाना नहीं था । हमने कहा कि गुरुदेव आप ही संभालो, हमारे काबू की बात नहीं है । गुरुदेव दरवाजे पर खड़े हो जाते । लोग स्टेशन पर मनों फूल की मालाएँ लाते थे । स्टेशन-स्टेशन पर स्वागत की तैयारी थी । दूर खड़े भाई दूर से ही माला फेंकते थे । गाड़ी में जो भाई थे उनके लिए भोजन लाते थे । बड़ौदा स्टेशन पर भारी भीड़ थी । हम तो डिब्बे से उतरते ही नहीं थे । फल भोजन आदि सामान जो भाई लाते उसको ले लेते थे । दूसरे स्टेशन पर पहले स्टेशन का सामान फल इत्यादि प्रसाद के रूप में दे देते थे । सिर्फ एक ही स्टेशन का भोजन फल रखते थे, बाकी प्रसाद में देते थे । गाड़ी

६-७ घंटे लेट हो गई । प्रत्येक स्टेशन पर लेट हो जाती थी । आनन्द स्टेशन पर गाड़ी ठहरी, तब भीड़ का ठिकाना नहीं था । गुरुदेव की शक्ति थी कि उस भीड़ को समझा देते थे । अहमदाबाद पर जब गाड़ी पहुँची तब हमने कहा-गुरुदेव आप ही इस भीड़ से निकल सकते हो हम तो गाड़ी में ही बैठे रहेंगे । सामान की हिफाजत करेंगे । अहमदाबाद आखिरी स्टेशन था । गाड़ी को ठहरना ही था । गुरुदेव करीब एक घंटा दरवाजे पर खड़े रहे । भीड़ बेकाबू थी । करीब ५०० पुलिस वाले और एक हजार कार्यकर्त्ता थे जो व्यवस्था कर रहे थे । पुलिस से गुरुदेव ने कहा-डंडा मत चलाना । गुरुदेव ने भीड़ के भाई बहिनों से इशारा किया वहाँ तक हमको किसी प्रकार जाने दो हम वहाँ से सबको दर्शन देकर ही जाएँगे । भीड़ ने जगह दे दी, एक टैक्सी खड़ी थी, वहाँ गुरुदेव उछलकर एक टैक्सी की छत पर बैठ गए । उस पर कैरियर लगा था । गुरुदेव के साथ पाण्डे जी सी. बी. आई. इन्सपैक्टर साथ थे । गुरुदेव ने उनसे कह दिया था कि शीघ्र गाड़ी को भगाकर ले चलो । पाण्डे जी ने ड्राइवर से कहा और कार वहाँ से एक दम चली गई । वहाँ पर हजारों आदमियों के हाथ में माला थी, करीब १००० बहिनें कलश लिए खड़ी थीं । एक चाँदी की बग्घी खड़ी थी । वहाँ पर सब खड़े हो गए । हम जब भीड़ कम हो गई तब गाड़ी से सामान लेकर उतर कर बाहर आए गुरुदेव को बलवंत भाई के घर ठहरना था । हमने सोचा वहाँ पर ही गए होंगे । भाइयों से पूछा सबने कहा-बलबंत भाई के घर ठहरने की व्यवस्था की गई है । सारी भीड़ बलवंत भाई के घर पहुँच गई । गुरुदेव ऊपर एक कमरे में चले गए । बाहर का नीचे का दरवाजा बन्द कर दिया । हम बलवंत भाई के घर के पीछे के रास्ते से घर पर पहुँचे । बलवंत भाई ने बड़ी भारी तैयारी कर रखी थी । अंदर जाकर जूतों समेत भीड़ घुस गई । उनके मकान के चारों तरफ धूल ही धूल भर गई । पर्दे लगे थे फट गए । उसकी सारी सजावट बेकार हो गई । हम अंदर गुरेदव के पास गए, वहाँ

पर हमने कहा–आप जब तक दर्शन नहीं देंगे, भीड़ जाने वाली नहीं है । हमने ऊपर खड़े होकर सबको समझाया । वहाँ पर मैदान में सबको बिठा दिया । तखत लगा दिया । गुरुदेव को लेकर गए, गुरुदेव ने सबको दर्शन दिए । वहाँ पर बुद्धा भाई उस भीड़ में खड़े थे । शामला शक्तिपीठ का उद्घाटन करने गुरुदेव को छिपड़ी जाना था । हमने बुद्धाभाई को बुलाकर पूछा कि तैयारी कैसी है ? वह हमको देख कर रो पड़ा । हमने पूछा–क्या बात है ? उसके पास तीन चार भाई थे । उन्होंने बतलाया–इसके लड़के का एक्सीडेन्ट हो गया है, अस्पताल में उसका बोल बन्द है, डाक्टरों ने जबाब दे दिया है, घर ले जाना चाहो तो ले जा सकते हैं । हमने गुरुदेव से कहा कि जहाँ उद्घाटन करने जाना है वहाँ के बुद्धा भाई के लड़के की हालत खराब है । वह बच नहीं सकता है । गुरुदेव तुरन्त लड़के के पास अस्पताल पहुँचे, अस्पताल के सब डाक्टर आ गए । गुरुदेव ने उसके सिर पर तीन बार हाथ फेरा और उसको आवाज लगाई वह आँखें खोलकर बोलने लगा । जब डाक्टरों ने देखा, सबको बड़ा आश्चर्य हुआ, सब गुरुदेव के चरणों में गिर पड़े । अध्यात्म की शक्ति बड़ी है । वहाँ से शामलाजी आए । वहाँ पर हजारों भाई बहिनों की भीड़ थी । हमने उस समय की भीड़ देख कर सोचा, अब युग निर्माण निश्चित होगा । हम बहुत प्रसन्न थे । हमारे पैर जमीन से ऊँचे उठकर चल रहे थे । गुरुदेव ने हमसे कहा–बेटा इस बार तो तू बड़ा खुश मालूम पड़ता है । हमने कहा–हाँ गुरुदेव अब तक हमको भ्रम था कि युग निर्माण होगा कि नहीं । अब विश्वास हो गया है कि युग निर्माण होगा । गुरुदेव बोले–बेटा अब विश्वास कैसे हो गया ? हमने कहा–जब से गाड़ी में बैठे हैं तब से स्टेशनों पर भारी भीड़ और शामला जी में तो हजारों आदमियों की भीड़ है । गुरुदेव हँसकर बोले–बेटा इस भारी भीड़ में से एक–दो आदमी मिल गए तो अपने को सौभाग्यशाली मानो । तू ही देख तू हमको मिल गया तो कितना विस्तार हो गया। भीड़ को दर्शन

करने घूमने और आशीर्वाद लेने से मतलब होता है इनको हमारे विचारों से मतलब नहीं है । जहाँ भीड़ होती है वहाँ गंदगी फैलाती है । भीड़ को देखकर तू मत प्रसन्न हो । भीड़ पर हमारा विश्वास नहीं है । शक्तिपीठों के उद्घाटन में तो तू कार्यकर्त्ता गोष्ठी लिया कर, उसमें कार्यकर्त्ता तलाश कर, भीड़ पर ध्यान मत दे । तब से हमारा ध्यान आज तक कार्यकर्त्ताओं पर ही रहता है ।

गुजरात के बाद हमारा मध्य प्रदेश का दौरा था । एक दिन में दो तीन शक्तिपीठों का उद्घाटन करना पड़ता था । सफर भी क़ाफी पड़ता था । दल्लीराजहरा के उद्घाटन को गए । एक उद्घाटन करके दूसरी शक्तिपीठ का उद्घाटन करना था । वहाँ पर करीब दो बजे दल्लीराजहरा पहुँचे । वहाँ पर भाई कालीचरन जी मुख्य कार्यकर्त्ता थे । रास्ते में देरी हो गई थी , भोजन कहीं नहीं किया था । वहाँ जनता बैठी थी । गुरुदेव ने उद्घाटन करके प्रवचन प्रारंभ किया । भूख लग रही थी । गुरुदेव का प्रवचन चल रहा थ, हमने अपने साथियों से कहा-चलो भोजन करें । भोजन की व्यवस्था कहाँ है, पता नहीं था । हमने काली चरन जी के क्वार्टर का पता पूछा और उनके मकान पर चले गए । वहाँ पर पाँच सात व्यक्तियों का भोजन बनाकर रखा था । हमारे पास कमरे की चाबी नहीं थी । सब भाइयों के पास अपनी-अपनी चाबी थी, उससे खोलने की कोशिश की तो ताला खुल गया । सबने भोजन किया । सब्जी ठंडी थी । उसमें घी डाल कर गरम किया और भोजन करके हम प्रवचन स्थल पर आ गए । प्रवचन समाप्त हुआ, काली चरन जी बोले पंडित जी भोजन करने चलना है । हमने कहा-हम तो भोजन करके अभी आए हैं । उन्होंने कहा-कहाँ पर भोजन किया है ? हमने कहा-तुम्हारे घर पर, ताला हमारी चाबी से खुल गया था । काली चरन जी बोले-गुरुदेव को भोजन करना है हमने कहा-उन्होंने तो आज पानी भी नहीं पिया है । क्योंकि कहीं समय नहीं मिला । अभी एक शक्तिपीठ का उद्घाटन करने

और जाना है । कालीचरन जी ने पूछा तो गुरुदेव ने भोजन के लिए मना कर दिया । उन्होंने कहा–देर हो रही है । काली चरन जी एक कप चाय लाए, उसे ही पीकर गुरुदेव चल दिए । रात को ११ बजे भोजन मिला । शक्तिपीठों के कार्यक्रम में सुबह से शाम तक समय नहीं मिलता था । इसी प्रकार मध्य प्रदेश के शक्तिपीठों का कार्य चलता रहा । बस्तर के शक्तिपीठों का उद्घाटन करने गए ।

जगदल पुर में शक्तिपीठ का उद्घाटन करने जा रहे थे । वहाँ रास्ते में पहाड़ पड़ते हैं । पहाड़ों पर कार चढ़ी और गुरुदेव जिस कार में बैठे थे, वह खराब हो गई । हमने गुरुदेव से कहा–आप हमारी गाड़ी में चलो और कपिल जी आपके साथ चले जाएँगे । हम यहाँ पर रहेंगे । कोई व्यवस्था बनाकर गाड़ी को जहाँ तक हो सकेगा ले जाएँगे । आगे के कार्यक्रम में वहाँ के भाइयों को परेशानी होगी । गुरुदेव को हमारी गाड़ी में बिठा दिया और हम ड्राइवर सहित वहाँ रह गए । पहाड़ी पर भारी जंगल था । हम गाड़ी में बैठे थे तब एक भाई वहाँ होकर जा रहा था । उसने कहा–तुम लोग यहाँ पर क्यों बैठे हो, क्या तुम्हारी मौत आई है ? हमने कहा–कैसे ? उसने कहा–यहाँ पर जंगल में एक आदमखोर शेर है और उसको आदमी का खून लग गया है । इधर आ गया तो तुमको मार कर खा जाएगा । हमने ड्राइवर से कहा–भाई गाड़ी में चलो वहाँ पर बिस्कुट चाय रखी है । हम जब दूर जाते तब साथ में चाय बिस्कुट ले जाते थे । हमने कहा–चलो बिस्कुट और चाय ले लें । हमने गाड़ी में जाकर चाय बिस्कुट खाए । हम बचपन में सुनते थे कि शेर आग के पास नहीं आता है । हमने वहाँ पर लकड़ी इकट्ठी करके आग जला दी और गाड़ी के किवाड़ बंद करके बैठ गए । शाम हो गई, परन्तु कोई व्यवस्था गाड़ी को ले जाने की नहीं बनी । हम घबराने लगे । इतनी देर में हमारी एक गाड़ी जो साहित्य लेकर चलती थी, पीछे से आती देखकर हमारा साहस बढ़ गया । हमने गाड़ी को हाथ देकर ठहराया । हमारी कार को

उससे बाँधा । काफी समय लग गया । रात के करीब १० बजे एक गाँव में पहुँचे । गाँव छोटा सा था । ठंड बहुत जोर से पड़ रही थी । सबको भूख बहुत जोर से लग रही थी । हमने कहा-रात भर यहीं ठहर जाएँ सुबह चलेंगे । हमने एक भाई से पूछ कर गाड़ियों को ठहरा दिया और भाइयों को कहा-गाड़ियों में सो जाएँ हम कार में सोते हैं । सभी बोले- भूख के कारण नींद नहीं आएगी । हमने सबको समझाया, जंगल का जीवन है, यहाँ कुछ नहीं मिल सकता, रात तो निकालनी ही है । इतने में मकान के अन्दर से एक बहिन आई । उसने हमसे पूछा-आप लोगों ने भोजन किया है या नहीं । हमने कहा-बहन जी यहाँ हमारी कोई जान पहिचान नहीं है । रात को भोजन का प्रश्न ही नहीं उठता है । वे बोलीं- हमारे दरवाजे पर आप ठहरे हैं, भूखे नहीं सोने दूँगी । उसने भोजन बनाना प्रारंभ किया । हमने कहा-बहन जी मोटी-मोटी रोटी बनाना । हम मोटी रोटी ही खाते हैं । हमने सोचा, पतली रोटी कब तक बनाती रहेगी । उसने दाल रोटी बनाई । करीब साढ़े ग्यारह बजे भोजन किया । हमने गुरुदेव को मन ही मन प्रणाम किया कि गुरुदेव आपने जंगल में ही हमारी व्यवस्था बना दी । सुबह उठे, हाथ मुँह धोकर तैयार हुए । बहन जी बोली चाय बनाती हूँ । हमने मना किया । बहन जी बोली-हमारे पास चार-पाँच भैंस हैं, सब दूध देती हैं । हमको कोई बाजार से दूध थोड़े ही लाना है । उस बहन ने दूध में ही चाय की पत्ती डालकर एक-एक गिलास चाय सबको पिलाई । हमको विश्वास हो गया कि गुरुदेव हमारे साथ हैं, तब हमारा कोई क्या बिगाड़ सकता है । गाड़ी ठीक कराई । शाम को जगदलपुर पहुँचे । गुरुदेव समय पर ही पहुँच गए थे । उद्घाटन ठीक समय पर हो गया था ।

एक बार खोखरकला के प्रज्ञापीठ का उद्घाटन करने गुरुदेव के साथ गए, वह गाँव था । आसपास आम के पेड़ लगे थे । वहाँ गुरुदेव का कार्यक्रम था । उसमें भोपाल शाखा के तीन-चार सौ भाई गुरुदेव के

दर्शन के लिए आ गए । वहाँ टैन्ट थे नहीं । आम के पेड़ों के नीचे ही ठहर गए । गर्मी का मौसम था । प्रज्ञापीठ का उद्घाटन देरी से हुआ। भोपाल शाखा के भाइयों को रात में ठहरना पड़ा । भोजन व्यवस्था वहाँ पर नहीं थी क्योंकि गाँव वालों को ऐसा पता नहीं था कि भोपाल शाखा के कितने भाई आएँगे । गुरुदेव ने मुझको बुलाया और एकदम नाराज हो गए कि जब यहाँ पर भोजन की व्यवस्था नहीं थी तो गाँव में हमको क्यों लाया । हमने कहा–अभी व्यवस्था करते हैं । हमने आकर गाँव वालों को इकट्ठा किया । उनसे कहा–सबके घरों में आटा है हर घर से आटा इकट्ठा करके लाओ । एक भाई बोला–पंडित जी हमारे यहाँ शादी है उसके लिए आटा पिसवाया है । घी तेल के पीपे भी हैं । अभी हमारे पास से ले लो हमारी व्यवस्था बाद में बन जाएगी । वहाँ से हमने चार बोरी आटा और तेल के पीपे मँगाए । आटा हम स्वयं ही गूँदने लगे । कढ़ाई थी जिसमें पूड़ी सेकनी थी, उसको हमने धोया । इतने में गाँव की बहनें आईं। कुछ भाई भी सहयोग करने आ गए । सब भाई बहिनों को भोजन कराया । गुरुदेव के पास भोजन करने के बाद सभी भाई गए । उन्होंने कहा–गुरुदेव पंडित जी स्वयं पूड़ी बेल रहे थे । गुरुदेव बोले–हाँ बेटा हमको विश्वास है, वह अब सब को भोजन कराने के बाद ही आएगा । रात को एक बजे हम गुरुदेव के पास पहुँचे । गुरुदेव हँसकर बोले–बेटा हमने व्यवस्था तो पहले से ही करके रख दी थी । तेरी हिम्मत देखनी थी, और भोपाल के भाइयों से कहा–हम साथ लेकर चलते हैं । तभी हमने इसको गायत्री तपोभूमि का व्यवस्थापक बनाया है । उद्घाटनों में बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ा था । एक वर्ष तक शक्तिपीठों के उद्घाटन में उनके साथ रहे ।

बरवालाबाईसे गुजरात के दौरे पर शक्तिपीठों का उद्घाटन करने गुरुदेव गए । गुरुदेव प्रत्येक जगह हमारा परिचय कराते थे । परिव्राजक के लिए अबापुर में कमरा नहीं बना था । गुरुदेव ने अपने प्रवचनों में

कहा-प्रज्ञापीठ बहुत अच्छी बनी है। अगर इसमें एक परिव्राजक के रहने का कमरा बन जाता तो यहाँ का कार्य प्रारंभ हो जाता । मिशन की गतिविधि तेज हो जाती । श्रोताओं में से एक बूढ़ी माँ खड़ी होकर बोली- इस प्रज्ञापीठ के पास ही मेरा एक छोटा कच्चा मकान है, उसमें दो ही कमरे हैं । गुरुदेव ने उस माता का समर्पण देखकर उस मकान को सोने हीरे के जैसा बताया । माता जी से पूछा-आपके पास कोई मकान और है । उन्होंने कहा-सारे गाँव के मकान मेरे ही तो हैं । उनका कोई लड़का नहीं था । गुरुदेव ने कहा-गाँव के सभी परिजन माता जी के रहने, भोजन की व्यवस्था करना । माता जी ने कहा-दूसरों से मदद मैं क्यों लूँगी ? मैं स्वयं कमाऊँगी, अपना निर्वाह करूँगी । गुरुदेव की आँखों में श्रद्धा के आँसू आ गए । गुरुदेव ने कहा-ऐसे विचारों वाली माताएँ मिल जाएँ तो धरती पर स्वर्ग का अवतरण शीघ्र हो जाएगा । सौराष्ट्र में बहुत शक्तिपीठ प्रज्ञापीठों का उद्घाटन हुआ जिसमें जूनागढ़ की शक्तिपीठ पहाड़ पर बहुत ही सुन्दर है । वहाँ का प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त सुहावना लगा । उड़ीसा, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात सभी प्रान्तों में हम गुरुदेव के साथ उद्घाटन में गए थे ।

अब भिलाई शक्तिपीठ का उद्घाटन करना था । मथुरा से सीधा भिलाई जाना था । रास्ते में प्रत्येक स्टेशन पर इतनी भीड़ थी कि गुरुदेव रात भर एक मिनट भी नहीं सो पाए। नागपुर पहुँचे, वहाँ गाड़ी काफी लेट हो गई थी । जब दुर्ग स्टेशन आया, वहाँ पर सिगनल नहीं हुआ, गाड़ी जंगल में खड़ी रही । गुरुदेव इतने परेशान थे कि कार्यक्रम में देरी हो गई । हमारे साथ भाई रमेश चंद्र शुक्ला जी थे । शुक्ला जी ने गुरुदेव को समझाया क्योंकि गुरुदेव नीचे उतर रहे थे । हमको रोको मत, ऐसा कहते हुए गुरुदेव ने हाथ उठाया, हम डर गए कि कहीं चाँटा नहीं मार दें । हम चुपचाप दरवाजे पर खड़े हो गए । गुरुदेव गाड़ी से उतरकर जंगल में एक बड़ा बरगद का पेड़ था । उसकी जड़ बड़ी-बड़ी थीं, उस

पर बैठ गए । सिगनल हो गया । गाड़ी ने सीटी दी । गाड़ी चल दी, दुर्ग स्टेशन पर ठहरी, वहाँ पर हजारों भाई माला लेकर खड़े गायत्री माता कें जयकारे बोल रहे थे । हमारे साथ एक दो भाई और थे । सामान उतारकर डिब्बे से उतरे । भीड़ चारों तरफ आ गई । साकुरे जी ने कहा-पंडित जी गुरुदेव कहाँ हैं ? हमने कहा-भिलाई चले गए हैं । किससे गए हैं । हमने कहा-हेलिकाप्टर से । वहाँ के भाइयों ने कहा-सीधा उनको भेज दिया और गुस्से के कारण माला हमारे ऊपर सब जोर-जोर से फेंकने लगे । ऐसी जोर-जोर से माला फेंकी कि बदन में दर्द हो गया, कई जगह सूजन आ गई । हमारा सामान भी किसी ने नहीं उठाया । सवारी लाए हैं, यह भी नहीं बताया । हमने कुली बुलाकर सामान उठाया । बाहर आए, हमने टैक्सी किराए पर की । टैक्सी से हम भिलाई जहाँ पर यज्ञशाला बनी थी, वहाँ पर पहुँच गए । डाक्टर चौबे ने कहा-गुरुदेव कहाँ हैं ? हमने कहा-हमको कहाँ ठहरना है, वहाँ ले चलो, वहाँ आपको बतलाएँगे । उसने कहा-क्या गुरुदेव नहीं आएँगे । हमने कहा-अवश्य आएँगे । डाक्टर चौबे से कहा-तीन चार बाल्टी पानी गरम करवा दें हमारा शरीर दु:ख रहा है । डाक्टर चौबे ने कहा-यह सब व्यवस्था हो जाएगी । बहनें मिशन की हैं, आप तो सब जानते हैं । ये बताओ गुरुदेव कहाँ हैं ? हमने कहा-दुर्ग स्टेशन से सिगनल की तरफ चले जाना वहाँ एक बड़ा बरगद का पेड़ है, उसके नीचे बैठे हैं । उसने कहा-ऐसी क्या बात हो गई जो वहाँ पर वे अकेले बैठे हैं, आप उनको छोड़कर चले आए । हमने कहा-यह बात बाद में बताएँगे । पहले आप उनको लेकर आएँ । चौबे जी कार लेकर गए दुर्ग स्टेशन की ओर वहाँ तलाश किया, बरगद के पेड़ के नीचे अकेले बैठे थे । चौबे जी ने हमको बतलाया कि हमने चरण स्पर्श किए, तब बहुत नाराज बैठे थे । हमने गुरुदेव से कहा-गुरुदेव कार में बैठकर चलो, भिलाई चलना है । हम दुर्ग राजनांद गाँव होते हुए आए हैं । वहाँ के कार्यकर्त्ताओं को भी पता चल गया है कि

गुरुदेव को चौबे जी ला रहे हैं । सब खड़े होंगे । गुरुदेव चौबे जी पर बरस पड़े । तुमने सबको क्यों कह दिया है ? चौबे जी चुप रहे । कार में बैठाकर दुर्ग लाए, वहाँ पर रास्ते में भीड़ खड़ी थी । उस भीड़ पर ऐसे नाराज हुए कि सब भीड़ गुस्सा देखकर भाग गई । सब डर गए । वहाँ से राजनांद गाँव आए । वहाँ भी जयकारे बोल रहे थे । वहाँ की भीड़ पर गुस्से में बरस पड़े, सब डर के मारे भाग गए । हमने स्नान किया । शरीर मालाओं की चोट से दुःख रहा था । तेल लगवाया, हम और हमारे साथियों ने भोजन किया तथा विश्राम करने कमरों में चले गए । भाइयों ने कहा-पंडित जी कहीं हमको नींद आ जाए और गुरुदेव आ गए तो नाराज होंगे । हमने कहा-आराम से सोओ अभी गुरुदेव तीन चार घंटे नहीं आने वाले । तीन चार घंटे हमने विश्राम किया, बहनों से कहा-चाय बनाकर लाओ । सब भाइयों ने चाय पी । शाम के पाँच बज गए । भाइयों ने कहा-यज्ञशाला पर चलो, गुरुदेव आने वाले हैं । वहाँ पर गए भारी भीड़ थी । यज्ञशाला पर शाम गुरुदेव का प्रवचन भी था । हमने सब भीड़ से कहा-बैठ जाओ । संगीत शुरू करवा दिया । ७ बजे गुरुदेव कार से आए, हमने सब भाइयों से माइक से कहा-गुरुदेव के दर्शन मंच से करना, यहीं से उनके प्रवचन सुनना । कोई उठे नहीं । गुरुदेव को स्टेज पर ले गए । प्रवचन रात के नौ बजे तक समाप्त हुआ । हमने कहा-भाइयो सूक्ष्म का महत्व अधिक है । पानी की भाप कितनी ताकतवर होती है । अब भाई बहिन गुरुदेव के चरण स्पर्श का आग्रह नहीं करें । भावना से चरण स्पर्श करें । भावना की शक्ति बड़ी होती है । उसमें तीन चार भाई खड़े हो गए और कहने लगे-हमें स्थूल से ही मतलब है । आप भावना से चरण स्पर्श कर लिया करो । हमको प्रवचन मत दो । हम चुप हो गए। सारी भीड़ भी उनके साथ यही कहने लगी । आखिर चरण स्पर्श की व्यवस्था करनी पड़ी । रात के १० बज गए । अधिक समय हो जाने के कारण भोजन से गुरुदेव ने इनकार कर दिया । रात को हम अकेले ही

गुरुदेव के पास गए थे । हम अकेले ही गुरुदेव के पास थे और जो भाई हमारे साथ थे, सब डर कर उनके पास नहीं गए । हम सुबह प्रति दिन की भाँति उनके पास सुबह गए । गरम पानी की व्यवस्था उनके लिए कर दी । हमने उनको चाय पिलाई और दूसरे भाई गुरुदेव के पास कोई नहीं आए । भाई शुक्ला जी हमारे साथ थे, उनको यज्ञशाला में यज्ञ कराने जाना था । हमने शुक्ला जी से कहा-इतनी देर हो गई है, तुम भजन ही कर रहे हो । शुक्ला जी बोले-आज गायत्री माता से विशेष प्रार्थना कर रहा हूँ । हमने कहा-क्या प्रार्थना कर रहे हो ? हमको कभी भी गुरूजी मत बनाना । वहाँ पर जितने भी भाई थे, हँस पड़े । शुक्ला जी को यज्ञ कराने हमने भेज दिया । गुरुदेव अकेले ही बैठे थे, उनके पास एक भी भाई नहीं आया । करीब नौ बजे हमने गुरुदेव से कहा-यज्ञशाला चलना है । वह तैयार हो गए । हम यज्ञशाला में उनको साथ लेकर पहुँचे । वहाँ पर गुरुदेव के बैठने का स्थान था । हमने उन्हें बिठा दिया । साकुरे जी और उनके साथ जो भाई थे, उन्हें गुरुदेव के पास भेजा तो वे कहने लगे कि पंडित जी हमने आपके दर्शन कर लिए, बस गुरुदेव के दर्शन कर लिए । गुरुदेव की नाराजगी वे देख चुके थे । सब डर गए थे । गुरुदेव ने कहा-आज हमारे पास कोई नहीं आया । क्या बात है? हमने कहा-आपका कल का महाकाल का स्वरूप देख कर सब डर गए । हमने यज्ञशाला में भी भाइयों से कहा-उन्होंने यही उत्तर दिया । गुरुदेव बोले-बेटा अब क्या करना चाहिए ? हमने कहा-हम कहें वैसा करो, आप हमारे साथ चलो । तब इधर के भाइयों का भय निकलेगा । उन्होंने कहा-तुम जैसा कहोगे, वैसा ही करेंगे । हमने कहा-भोजन करके आप स्नान करो, हम व्यवस्था करते हैं । हमने राजनांदगाँव तथा दुर्ग वालों से कहा कि शाम को यज्ञशाला में गुरुदेव के प्रवचन की व्यवस्था करो उनसे डरो मत हम तुम सबको मिलाएँगे । फिर साकुरे जी बोले-पंडित जी गुरुदेव को यहाँ महाकाल के स्वरूप में मत लाना । हमने कहा-आप चिंता मत

करो । आप व्यवस्था कर लेना । हम यज्ञशाला से आए, गुरुदेव विश्राम से उठे । हमने कहा-आपको उस पेड़ के पास ले चलना है, जहाँ पर आप बैठे थे । गुरुदेव बोले-तू जैसा कहेगा वैसा ही करेंगे । हमने कहा-गुरुदेव कल जितना आप नाराज थे उतना ही प्रवचन में वहाँ के भाइयों को हँसाना ताकि उनका डर दूर हो जाए । हम गुरुदेव को कार में बिठाकर उस पेड़ के पास ले गए । वहाँ से दुर्ग शक्तिपीठ पर लाए । वहाँ पर गुरुदेव ने प्रवचन में इतना हँसाया कि हँसते-हँसते सबके पेट दु:खने लगे । दुर्ग से राजनांद गाँव आए, वहाँ पर भी गुरुदेव ने प्रवचन में सबको हँसाया और प्रत्येक भाई बहिन से दुर्ग तथा राजनांद गाँव में बात की । घर परिवार बच्चों की सबकी बावत पूछा । वहाँ से भिलाई आए । दूसरे दिन से उनके पास भारी भीड़ लगने लगी । जहाँ ठहरे थे वहाँ तथा यज्ञशाला में सुबह से शाम तक सोने के समय तक अपार भीड़ लगने लगी । गुरुदेव ने हमसे कहा-बेटा उस दिन हमारे मस्तिष्क में सारे दिन सारी रात जागते-जागते गर्मी चढ़ गई थी । तुम से भी हमने कहा था कि तुम इस भीड़ को जो स्टेशन-स्टेशन पर है और गाड़ी में चढ़ जाती है इसे रोको, तुमने भी व्यवस्था नहीं की । हमने कहा-गुरुदेव आपने इतने बच्चे पैदा कर लिए हैं उनको अब संभाल नहीं सकते हैं । इतना परिवार है उसको हम नहीं संभाल सकते । तब हम से हँसते-हँसते बोले-तू ने यह बात हमको पहले क्यों नहीं बतलाई ? हम अपना आप्रेशन करवा लेते । जब उन्होंने यह कहा तब हमको जोर से हँसी आ गई और गुरुदेव भी हँस पड़े । उनका स्वभाव हमेशा ही हँसने का था । जो भी भाई बहिन उनके पास बैठते थे उनको हँसाते रहते थे । जहाँ भी गुरुदेव बैठते थे हँसी के ठहाके होते थे और जहाँ नाराज होते तब महाकाल का रौद्र रूप उनका देखते थे । हमने उनसे हँसने-हँसाने का गुण सीखा । प्रत्येक भाई-बहिन को यह गुण ग्रहण करना चाहिए । भिलाई, राजनांद गाँव, दुर्ग के भाइयों ने कहा-पंडित जी आप अगर गुरुदेव को वापस नहीं लाते तब हम तो

उनके पास नहीं जाते, इतना हमको डर लग गया था । हमने कहा-उनको क्षणिक गुस्सा आता है । रात दिन जगने से गर्मी बढ़ गई थी ।

शक्तिपीठों के उद्घाटनों में इतनी भीड़ होने लगी कि हम उनकी व्यवस्था ही नहीं कर पाते । गुरुदेव को रात-दिन सोने को भी नहीं मिलता था । हमने एक दिन गुरुदेव से कहा कि हम उद्घाटनों में नहीं चलेंगे । फिर वे बोले-क्या बात है ? हमने कहा-गायत्री तपोभूमि पर काम बढ़ गया है, हमको वहाँ की व्यवस्था संभालनी है । किसी दूसरे भाई को ले जाएँ । इसके बाद उनका एक दौरा और हुआ । हमारा रिजर्वेशन उनके साथ था । जब मथुरा स्टेशन पर पहुँचे तब हमने सभी तपोभूमि के भाइयों को समझा दिया कि आप सब एक ही बात कहना कि यहाँ का काम बहुत है पंडित जी नहीं जा सकते हैं । हमने भी स्पष्ट मना कर दिया । उस समय हमने शरण जी को बिठला दिया था । दिल्ली स्टेशन पर जब गुरुदेव आए तो वहाँ के भाई कोई भी भोजन नहीं लाए थे उन्होंने सोचा था कि मथुरा से मृत्युंजय शर्मा व पंडित जी भोजन लाएँगे ही । हम दोनों भी भोजन लेकर नहीं गए । कपिल जी गुरुदेव के साथ चलते थे । उन्होंने हमसे पूछा-पंडित जी भोजन लाए हो क्या ? हमने कहा-हमने समझा था दिल्ली वालों ने भोजन रख दिया होगा । हम जब भी उनके साथ चलते थे प्रत्येक स्टेशन पर भोजन फल चाय दूध इतना आता था कि हमको दूसरे स्टेशन पर प्रसाद कह कर देना पड़ता था । उस बार ही ऐसा हुआ था कि भोजन नहीं आया । सुबह ७ बजे हरिद्वार से दिल्ली कार से चलकर आए थे । वहाँ से रेल में बैठ गए । जबलपुर जाना था । रास्ते में कहीं भोजन नहीं मिला । जबलपुर पर पहुँचे वहाँ से जुलूस निकला, शाम को भोजन मिला । दौरे से आकर हमसे पूछा-अब दौरे पर चलोगे या नहीं । हमने कहा-गुरुदेव हमने निश्चय कर लिया है, हम दौरे पर नहीं चलेंगे । अब इतनी भीड़ होती है कि आपको विश्राम व भोजन को समय नहीं मिलता है । हमको काफी समझाया । हमने साफ मना कर

दिया । गुरुदेव बोले जब तू हमारे साथ नहीं चलता है तब हम भी अब उद्‌घाटनों में नहीं जाएँगे । एक दिन हरिद्वार से अनुष्ठान कराके दो भाइयों को उद्‌घाटन के लिए भेजा । उन्होंने शक्तिपीठों का उद्‌घाटन किया । गुरुदेव क्षेत्रों में हमारे बगैर नहीं गए । हरिद्वार ही रहते थे ।

पूज्यवर की सूक्ष्मीकरण साधना एवं महानिर्वाण

फिर वह सूक्ष्मीकरण में चले गए । सूक्ष्मीकरण में किसी से मिलते भी नहीं थे और दर्शन भी नहीं देते थे । जो भी भाई बहिन शिविर में जाते सब की एक ही अभिलाषा रहती थी कि गुरुदेव के दर्शन होना चाहिए । माता जी ने सबको इतनी स्वीकृति दे दी थी कि गुरुदेव के दर्शन खिड़की से कर सकते हैं, परन्तु इससे संतोष लोगों को नहीं होता था । चरण स्पर्श करने की सबकी इच्छा रहती थी । गुरुदेव ने कह दिया कि हमारा स्थूल शरीर हमने प्रखर प्रज्ञा के रूप में बनाकर तैयार कर दिया है । उसके दर्शन करें, चरण स्पर्श करें, उसके पास बैठकर जो भी बात हो उसको कहें । अब सभी भाई बहिन प्रखर प्रज्ञा के दर्शन करते और अपने मन की बात कहते । उत्तर अन्तःकरण में मिल जाता था । अब गुरुदेव ने कहा-हमको सबसे मिलना है । शांतिकुंज के बड़े से लेकर छोटे बच्चे तक तथा गायत्री तपोभूमि के सभी बच्चों को बुलाया । कोई भी बाकी न रहा । सबसे मिलते घर परिवार की कठिनाइयों को पूछते । सबसे सारी बातें पूछते । एक दिन हम वंदनीया माता जी के पास बैठे थे । माता जी ने हमसे कहा-बेटा मैं गुरुदेव के पास गई तब गुरुदेव ने हमको एक पुस्तक दे दी और हमसे कहा पढ़ो । उन्होंने उस पुस्तक में निशान लगा रखे थे । माता जी ने कहा-हमने पढ़कर गुरुदेव से कहा हमने पढ़ली है । गुरुदेव ने कहा-स्वामी रामकृष्ण की पत्नी ने उनके महाप्रयाण के बाद २०-२५ वर्ष तक मिशन का कार्य चलाया था । माता जी ने कहा और हम सुनते रहे । ऐसा कहकर माता जी चुप हो गई और दूसरी बातें करने लगीं । हमारी समझ में कुछ आया नहीं ।

कुछ समय बाद हम गुरुदेव के दर्शन करने गए । गुरुदेव के दर्शन करने के बाद माता जी के पास बैठे तो माता जी ने हमसे कहा–बेटा तेरे गुरूजी हमसे कह रहे थे कि हमारे बाद अपना स्वरूप मत बिगाड़ना, ऐसा कहकर फिर दूसरी बातें करने लगीं । हमारी समझ में फिर नहीं आया कि माता जी हमसे क्या कह रही हैं ? गुरुदेव के पास जाते तब गुरुदेव हमसे यही कहते कि हरिद्वार ही रहूँगा । तपोभूमि और अखंड ज्योति नहीं रहूँगा । ऐसे हमसे कई बार कहा । हमने कहा–आपकी इच्छा हो वहीं रहना । हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा था । कुछ समय बाद गुरुदेव ने बुलाया अपने पास बिठाकर समझाया, बेटा इस शरीर से जितना काम लेना था ले लिया । अब यह कार्य तो सूक्ष्म और कारण शरीर से करेंगे । हमारी आँखों से अश्रुधारा निकल पड़ी और रोने लगे । गुरुदेव ने कहा–बेटा रोता क्यों है ? जिस हिम्मत से आज तक कार्य किया, करते रहना । आगे हम सूक्ष्म शरीर से सदैव करते रहेंगे । रोते हुए हम माता जी के पास आए और गुरुदेव की बात बताई । माता जी ने कहा–यह बात तो तुमको हमने एक महीने पहले ही राम कृष्ण परमहंस का किस्सा सुनाकर बता दी थी । गुरुदेव ने हमसे कहा है अपना स्वरूप मत बिगाड़ना, वह बात तो हम पहले ही बता चुके हैं । दुःखी क्यों होता है ? उनको अपना कार्य करने दो, हम तुम यहाँ का कार्य करेंगे । माता जी सहज भाव से बात कर रही थीं । सुनकर हमारा साहस बढ़ गया । गुरुदेव जब महाप्रयाण करने वाले थे, तीन चार दिन पहले हम उनके पास गए । जैसे ही दर्शन किए, हमसे कहने लगे तुम हमको मथुरा ले चलो, हम चुप रहे । हम मथुरा चलना चाहते हैं । माता जी से हमने कहा तो माता जी बोलीं–ऐसी स्थिति में कैसे ले जाया सकता है ? थोड़ी देर बाद हम फ़िर गुरुदेव के पास गए । गुरुदेव बोले कि तुम मुझे मथुरा नहीं ले चलोगे ? हमको तपोभूमि ले चल । फिर

कुछ दिनों बाद ही गुरुदेव का महाप्रयाण हो गया । उस समय हमारी स्थिति बड़ी खराब थी, परन्तु माता जी के साहस ने ही हमारा साहस बढ़ाया । वापस हम मथुरा आ गए ।

अश्वमेध यज्ञ शृंखला

अब हरिद्वार से अश्वमेध यज्ञों की शृंखला प्रारंभ हुई । पहला अश्वमेध जयपुर में संपन्न होना था । हम प्रातः मंदिर में पूज्य गुरुदेव की चरणपादुकाओं को प्रणाम कर रहे थे । हमने गुरुदेव से मन ही मन पूछा कि गुरुदेव तपोभूमि की इन अश्वमेध यज्ञों में क्या भूमिका होगी ? हमें प्रेरणा आई कि बेटा तू ब्रह्मभोज कर । (ब्रह्मभोज के बारे में यहाँ विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस योजना को फोल्डरों के माध्यम से सभी परिजन जान चुके हैं ।) आधे मूल्य पर साहित्य उपलब्ध करा कर जन जन तक हमारे विचार पहुँचाओ । हमने सोचा अनुदान कहाँ से आए, व्यवस्था कैसे हो ? हम सोच ही रहे थे कि शांतिकुंज से गाड़ी लेकर हमारे पुराने मित्र भाई रामेश्वर नैनीवाल आए । उन्होंने हमको विश्वास दिलाया कि हम एक लाख रुपए अनुदान दस दिन में ही इकट्ठा कर आपके पास इस ब्रह्मभोज के लिए जमा करा देंगे । उन्होंने इस अवधि में दस लोगों से दस-दस हजार रुपए अनुदान लाकर परचे छपवा लिए । हमने साहित्य के प्रथम पृष्ठ पर अनुदान देने वाले का नाम छाप कर लगवा दिया । इस प्रकार चार लाख रुपए का साहित्य आधे मूल्य पर जयपुर अश्वमेध में ब्रह्मभोज के रूप में उपलब्ध कराया । हम जयपुर, गुना, भिलाई, लखनऊ इन चार स्थानों पर अश्वमेध यज्ञों में गए । लखनऊ में ही मैंने माता जी से कहा कि अब मैं किसी अश्वमेध में नहीं आऊँगा । माता जी ने कहा-बेटा तेरी जैसी मर्जी हो वैसा कर । फिर हम १०८ पुस्तकों के संकलन-संपादन के कार्य में जुट गए ।

माता जी ने हमारी आयु बढ़ाई

हमारा स्वास्थ्य अब धीरे-धीरे गिरने लगा । बिस्तर पर लेटे रहते थे । चिकित्सकों का कहना था कि अब चार-छः महीने के मेहमान हो । अब सोचा कि माता जी के दर्शन के लिए हरिद्वार चलना चाहिए और हम कार में लेटे-लेटे हरिद्वार गए । हमारे शांतिकुंज पहुँचने की सूचना माता जी को मिल चुकी थी । हम बड़ी कठिनाई से सीढ़ी चढ़कर माता जी के दर्शन करने गए । माता जी के चरण स्पर्श किए । हम उनके चरणों में बैठ गए । हमसे माता जी ने कहा-बेटा तुमको दो रोटी बनाकर रखी हैं भोजन कर लो । अब हमारा भी स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है । हम रो पड़े और हमने कहा-हम माँ बेटे दोनों का स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है । माता जी बोली-बेटा तू मथुरा चला जा और हर्निया की जो शिकायत तुझे है उसका आपरेशन करा ले । हमने कहा-माता जी हमारे आपरेशन के लिए कोई भी डाक्टर तैयार नहीं है क्योंकि मुझे दो बार दिल के दौरे पड़ चुके हैं । माता जी बोली-बेटा तू चिन्ता मत कर तेरा सफल आपरेशन होगा । माता जी के कहने से हम गायत्री तपोभूमि आ गए । वहाँ एक दिन डॉक्टर आर. एस. पारीक आगरा वाले का पुत्र डॉ० राजू हमें देखने आया । वह पहले हमें आपरेशन के लिए मना कर चुका था । इस बार उन्होंने कहा कि मैं अभी कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ लौटकर आऊँ तब आप मेरे साथ आगरा चलना । जब वह लौट कर वापस आया तो मैं उनके पास मृत्युंजय को लेकर आगरा डा० पारीक के यहाँ गया । वहाँ पर हमारे शरीर की सभी आवश्यक जाँच हुईं और आपरेशन के लिए समय निर्धारित कर दिया गया । हमारा आपरेशन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ । आपरेशन के दूसरे दिन हमारी तबियत अचानक खराब हो गई थी तो मृत्युंजय शर्मा घबरा गए । वे डाक्टरों को बुला लाए । कई डाक्टर आए काफी देर के बाद मुझे होश आया । सुबह ही हमारे पास डाक्टर प्रणव पण्ड्या एवं राम सहाय शुक्ला जी हरिद्वार से आ गए । उनको देख

कर हमने तथा मृत्युंजय शर्मा ने भी पूछा कि आप इतने सुबह कैसे आ गए ? वे बोले माता जी ने रात को ही हमें बुलाकर कहा कि तुमको अभी आगरा जाना है । लीलापत की तबियत खराब है, इसलिए हम चले आए । मृत्युंजय शर्मा ने उनको सारी बातें बतलाई । वे हमें देखकर वापस हरिद्वार चले गए । माता जी को सारी बातों से अवगत करा दिया । उसके तीन दिन बाद डाक्टर प्रणव जी आगरा हमको देखने आए और डाक्टर राजू से बातें करते रहे । पूछते रहे कि पंडित जी को अस्पताल से कब छुट्टी मिलेगी और हमारे स्वास्थ्य के बारे में सारी बातें उनसे पूछी ।

मातृ सत्ता का गुरु सत्ता में महालय

हमारा स्वास्थ्य धीरे-धीरे ठीक होने लगा तो हमें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई । हम मथुरा आकर बिस्तर पर पड़े रहते थे । मृत्युंजय शर्मा हमें रोज देखने आया करते थे । एक दिन रात्रि में हम अपने कमरे में बैठे थे । अचानक हमें लगा कि जैसे हमारे कमरे की खिड़की के सामने माता जी खड़ी हैं । वे मुझसे बोली-बेटा मैं शरीर छोड़ रही हूँ । जैसे ही हमें यह आभास हुआ माता जी की आवाज सुनकर हमने बाहर निकल कर देखा तो वहाँ कोई नहीं था । अब हमें बड़ी बेचैनी हुई । हमने तुरन्त ही चैतन्य जी को कहा-आप शांतिकुंज फोन करके पूछो कि माता जी की तबियत कैसी है ? उन्होंने शांतिकुंज फोन मिलाया तो बृजमोहन गौड़ जी से बात हुई । उन्होंने माता जी के स्वास्थ्य खराब होने की सूचना दी और देहरादून में भर्ती होने की बात कही । फिर मृत्युंजय शर्मा एक दिन हमारे पास आए और कहा कि आपको टाँके कटवाने आगरा चलना है । हमने माता जी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा-ठीक हैं माता जी अब शांतिकुंज में ही है ।.हम आगरा गए, हमारे टाँके कट गए । अब हमारे मन में माता जी के के स्वास्थ्य की चिंता होने लगी । रात को एक दिन माता जी स्वप्न में आई और कहा-बेटा मैं अब शरीर छोड़ रही हूँ । हम

बहुत बेचैन हुए । सुबह मृत्युंजय शर्मा शांतिकुंज से लौटकर तपोभूमि नहीं आए, सीधे जनजागरण प्रेस चले गए । जब हमें पता चला तो हमने अपनी गड़ी निकलवाई और प्रेस में पहुँच गए । मृत्युंजय से माता जी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा । उन्होंने कहा–माता जी के पेट में तकलीफ है । हमने उनसे कहा–हमको माता जी कह गई हैं कि मैं शरीर छोड़ रही हूँ और तुम हमसे झूठ बोल रहे हो कि माता जी हरिद्वार हैं । हमने उनसे कहा कि हम हरिद्वार जा रहे हैं तो उन्होंने मना कर दिया । उन्होंने कहा–माता जी का स्वास्थ्य अधिक बिगड़ने के कारण दिल्ली अस्पताल में भर्ती हैं । हमने कहा–दिल्ली कब आई हैं ? तब उनने बतलाया कि जिस दिन आपकी छुट्टी आगरा से हुई थी उसी दिन चार बजे माता जी आगरा उसी अस्पताल में आ गई थीं । जिस बैड पर आप लेटे थे उसी पर वे लेट गईं थीं । मृत्युंजय ने कहा–आपको एक दिन दिल्ली ले चलेंगे, वहीं आप माता जी को देख लेना । हमने डाक्टर राजू से मिलकर पूछा कि माता जी कब आई थी ? उसने कहा–जिस दिन आपकी छुट्टी बारह बजे हुई उसी दिन चार बजे शाम को माता जी आ गई थीं । हमने कहा कि माता जी को कैसे पता चला कि शाम को बैड खाली हो जाएगा तो डॉ० पारीक ने बताया कि प्रणव जी आए थे तो उन्होंने सारी बातें हमसे कर ली थीं । हमने कहा कि जब हम आपके पास टाँके कटाने आए तो आपने हमें क्यों नहीं बताया तो उसने कहा कि माता जी ने हमें आपको यह बताने के लिए मना कर दिया था ।

प्रेस में मृत्युंजय से दिल्ली जाने की बात हो ही गई थी । दूसरे दिन ही हम माता जी को देखने दिल्ली गए । अस्पताल बड़ा था । हमें गेट मैन ने बिना पास के अंदर जाने ही नहीं दिया । बड़ी परेशानी उठानी पड़ी । काफी देर निवेदन के बाद उसने मेरी उम्र को देखते हुए हमें अन्दर जाने दिया । हम माता जी को देखकर रोने लगे । माता जी से हमने कहा कि आपने हमें यह आभास कराया है कि मैं शरीर छोड़ रही हूँ । माता जी ने कहा–नहीं बेटा तुझे भ्रम हो गया है ऐसी कोई बात नहीं है । हमने कहा–

माता जी आपने डॉक्टर पारीक को मना क्यों किया कि वे हमें आपकी बीमारी के बारे में कुछ न बताएँ। बेटा तेरे स्वास्थ्य को देखकर ही हमने ऐसा कहा था । तीसरे दिन हम फिर उन्हें देखने गए । माता जी बोली बेटा परेशान क्यों होता है ? मैं स्वस्थ हूँ । उनके पेट का आपरेशन हो चुका था । हमसे कह रही थीं कि देश भर के बच्चों से मिलने का मेरा मन है । चूँकि माता जी हमारी दोनों नातिनों की शादी पहले ही पक्की कर चुकी थीं । बड़ी लड़की की पिलानी के श्री सुभाष कौशिक के पुत्र एवं छोटी का भोपाल के श्री बलराम राव के पुत्र से संबंध तय किया था । वे बोली–बेटा यदि राम की दोनों लड़कियों की शादी मेरे सामने हो जाती तो हमारी यह जिम्मेदारी भी पूरी हो जाती । माता जी ने कहा कि मुझे शांतिकुंज ले चलो, मेरा मन अपने सभी बच्चों से मिलने का कर रहा है । यह बात उन्होंने कई बार कही थी । इन बातों को सुनकर हमें पुनः स्वप्न वाली बात याद आई कि माता जी ने कहा था कि मैं शरीर छोड़ रही हूँ । हमने माता जी से कहा–माता जी हम अब मथुरा नहीं जाएँगे यही आपके पास रहेंगे । माता जी बोलीं–बेटा ठहर जा परन्तु हमारे पीछे से वहाँ उपस्थित शैलबाला डा० प्रणव, मृत्युंजय एवं उनकी धर्म पत्नी निर्मल से माता जी ने कहा–लीलापत को आज हर हालत में मथुरा भेज दो । यहाँ मत ठहरने दो । हमारा कष्ट वह देख नहीं सकेगा । जब भी वह हमारे पास आता है उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं । सभी हमसे कहने लगे कि पंडित जी आप मथुरा चले जाओ, आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है । हम विश्वास दिलाते हैं कि कल माता जी को हरिद्वार ले चलेंगे । फिर हम मथुरा चले आए । माता जी शांतिकुंज चली गईं । एक दिन फोन आया कि पंडित जी आपको आज ही हरिद्वार आना है । हम तुरन्त ही हरिद्वार के लिए रवाना हो गए । वहाँ जाकर हमें पता चला कि माता जी का महाप्रयाण हो गया । माता जी का पार्थिव शरीर जब हमने देखा तो हमारा हृदय इस असहनीय दुःख से भर गया । ऐसा प्रतीत हुआ

कि हमारा हार्ट फेल हो जाएगा । तुरन्त ही अदृश्य शक्ति ने हमें झकझोरा माता जी की आवाज सुनाई दी कि बेटा तू हिम्मत से काम ले, हमने अपनी शेष आयु तुझे दे दी है, जब तेरा आपरेशन आगरा में हुआ था तो मैं भी उसी बिस्तर पर जाकर लेटी थी, जिस पर तू लेटा था । मैंने तेरी सारी बीमारियाँ अपने ऊपर ले ली थीं । तुझे अभी मिशन का बहुत सा काम करना है । यह दायित्व तुम्हारे ऊपर है । मृत्युंजय ने कहा कि पंडित जी आप हम सबसे बड़े हो और आप ही ऐसे हिम्मत हारेंगे तो इस मिशन का क्या होगा ? फिर माता जी के दाह संस्कार के बाद हम मथुरा आ गए । हमारा यह निश्चित मत है कि वंदनीया माता जी ने ही हमारी आयु बढ़ाई है । यह जीवन उन्हीं का दिया हुआ है । अतः शेष जीवन का समय हम उन्हीं के कार्य में लगा देना चाहते हैं । अब हमें लगता है कि गुरुदेव और वंदनीया माता जी सदा हमारे साथ ही हैं ।

परम पूज्य गुरुदेव ने सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के लिए सत् सूत्रीय कार्यक्रमों की घोषणा की थी । वही आज युग निर्माण योजना, विचार क्रांति अभियान के अन्तर्गत चल रहे हैं, परन्तु मूल रूप से रचनात्मक और संघर्षात्मक कार्यक्रमों के अन्तर्गत सप्त सूत्रीय कार्यक्रम जिनकी पूर्व घोषण सन् १९७१ में की थी, उन्हीं कार्यक्रमों को पुनः गति देने के लिए पूज्यवर की प्रेरणा उपासना काल में हुई । गायत्री जयंती १९९७ को प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा (परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माता जी के प्रतीक स्मारक) की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर देश भर के दस हजार प्राणवान युग सैनिकों ने इन कार्यक्रमों को गति देने के लिए शपथ पत्र भरकर समर्पित किए । हमने युग निर्माण योजना मासिक पत्रिका का जून माह का विशेषांक क्रांति विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया, जिसकी लाखों प्रतियाँ क्षेत्रों में वितरित की गईं । अब चारों तरफ सृजन की दिशा में उल्लास पूर्वक युग सैनिक जुटे हुए हैं । इस क्रांति के चमत्कार विचार क्रांति के विस्तृत रूप में अगले दिनों प्रत्यक्ष परिलक्षित

होंगे कि किस तरह पूज्यवर की सूक्ष्म चेतना युग सैनिकों के माध्यम से युग परिवर्तन की विशाल योजना के अंतर्गत काम करा रही है तथा उज्ज्वल भविष्य के अनुकूल वातावरण विनिर्मित हो रहा है ।

उन सात क्रांतियों के बारे में परिजनों के लिए संक्षेप में रूप रेखा प्रस्तुत की जा रही है । हर पाठक बंधु इसे ध्यान पूर्वक पढ़े और जो कुछ संभव हो अपनी तरफ से इस दिशा में सहयोग के लिए प्रयत्न शील रहे ।

(१) आस्तिकता संवर्धन आन्दोलन

ईश्वर की सत्ता में विश्वास कर लेना ही आस्तिकता नहीं है । आज की परिस्थितियों में आस्तिकता एवं ईश्वर की नई प्रगतिशील व्याख्या करना अनिवार्य हो गया है । वस्तुतः आस्तिकता, ईश्वरीय अनुशासन को अपने चिंतन, चरित्र और व्यवहार में कूट-कूट कर समाविष्ट कर लेने का नाम है । जो आस्तिक है वह भले ही मंदिरों, पूजागृहों में न जाता हो, पर यदि परमात्म सत्ता का अनुशासन जीवन में उतारता है, सही ढंग से जीवन जीता है तथा सृष्टि को एक ईश्वरीय उद्यांन मानकर उसकी सिंचाई, करता है वह सच्चे अर्थों में आस्तिक है । नास्तिक तो वह है जो बाह्याडम्बर कितने ही रचता हो, दिखता तो धार्मिक हो पर जीवन के किसी भी कोने से आदर्शवाद, सच्चरित्रता, उत्कृष्टता का एक अंश भी नहीं झलकता हो ।

घर-घर आस्तिकता का वातावरण बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आन्दोलन के रूप में तेजी से चलाए जा रहे हैं ।

१-घर-घर में देव स्थापना-(पंच देव चित्र स्थापना)घर-घर में देव स्थापना कराकर गायत्री साधना प्रारंभ कराने का प्रयास ।

२-मन्त्र जप या लेखन-विश्व कल्याण के लिए गायत्री मंत्र जप अथवा भगवत नाम जप या अपने समुदाय, धर्म के मंत्र का जप करने की प्रेरणा देना । मंत्र लेखन साधना की सर्व सुलभ विधि बताकर प्रोत्साहित करना ।

३-बलि वैश्व यज्ञ-भोजन ग्रहण करने के पूर्व भोजन की पाँच

आहुतियाँ अग्निदेव को समर्पित करने की क्रिया का व्यापक प्रचार प्रसार ।

४-ज्ञान मंदिर स्थापना-परिवार में देव मंदिर के साथ ज्ञान मंदिर (पुस्तकालय) का होना अनिवार्य बताकर स्वाध्याय के प्रति निष्ठा जगाना ।

५-श्रीराम झोला पुस्तकालय-पूज्यवर के विचार घर-घर पहुँचाने के लिए श्रीराम झोला पुस्तकालय द्वारा ज्ञान-अमृत बाँटने के लिए लोक सेवी कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहन ।

६-ज्ञान रथ-चार पहिए का पीला सुन्दर मंदिरनुमा आकृति का ज्ञान रथ बनवा कर बिक्री द्वारा जन-जन को साहित्य उपलब्ध कराना ।

७-संस्कार परम्परा-संस्कार परंपरा का पुनर्जीवन कर परिवारों में संस्कारों का प्रचलन चलाते रहने के लिए परिव्राजकों की सक्रियता ।

८-यज्ञ एवं धार्मिक आयोजन-यज्ञ एक सामूहिक धर्मानुष्ठान है । इसके माध्यम से जन जागरण कर आस्तिकता के वास्तविक अर्थ का बोध कराना तथा पर्व आयोजनों के अवसर पर आदर्श की दिशा में जन उत्साह का नियोजन करना ।

९-तुलसी रोपण-हर घर में तुलसी का पौधा लगाने तथा आस्तिकता एवं स्वच्छता का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित करना । तुलसी की रोग निवारक क्षमता के कारण उपयोगिता समझाना ।

१०-भोजन, जल और स्नान-हर व्यक्ति को भोजन से पहले तीन बार गायत्री मंत्र बोलकर भोजन ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना । जल को गंगा जल की भावना के साथ ग्रहण करना तथा स्नान के समय गंगा जल में स्नान की भावना के साथ स्नान करने और स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीरों के पवित्र होने की भावना का संचार करना ।

(२) स्वास्थ्य संवर्धन आंदोलन

१-असंयम और अनुचित आहार-बिहार के कारण रोगों की जड़ मजबूत होती जाती है और आरोग्य क्षीण होता है । जन-जन को खाने के तरीकों तथा स्वास्थ्य संरक्षण सिद्धाँतों को समझाया जाना चाहिए । प्राकृतिक

चिकित्सा द्वारा धूप, हवा, पानी, मिट्टी द्वारा सरल उपचार सिखाए जाएँ । प्रज्ञायोग, सूर्य नमस्कार, योगासन, प्राणायाम, बंध, मुद्रा, नेति आदि का प्रचलन प्रारंभ कराया जाए । आज आवश्यकता चौका क्रांति की है । जिसमें अंकुरित अन्न, छिलकों को न फेंकना, भाप से पकाना, शाकों-ऋतु फलों-सलादों का उपयोग जैसी अनेक बातें सिखाई और प्रचलन में लाई जानी चाहिए । कसे हुए भारी कपड़ों की भरमार, सौन्दर्य प्रसाधन, आभूषण जैसे सज्जा उपकरण आरोग्य की दृष्टि से कितने अहितकर हैं, यह पाठ हमें नए सिरे से पढ़ना होगा ।

२-अत्यन्त सरल, निरापद एवं उपयोगी वनौषधियों का चूर्ण विभिन्न रोगों से छुटकारा पाने के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होता है । इसका व्यापक प्रचार किया जाय । **जड़ीबूटियों द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण** पुस्तक का स्वाध्याय कर बहुत से लोगों को लाभ दिलाया जा सकता है । शांतिकुंज हरिद्वार से वनौषधियों के चूर्ण प्राप्त किए जा सकते हैं ।

३-स्वास्थ्य संवर्धन पुस्तक माला-युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण हेतु स्वास्थ्य की हर समस्या पर उपयोगी साहित्य प्रकाशित किया गया है । इन्हें मँगा कर झोला पुस्तकालय द्वारा अथवा ज्ञान मंदिर स्थापित कर जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए ।

४-मानसिक स्वास्थ्य-मन जीवन का केन्द्र बिन्दु है । इसे स्वच्छ बनाये रखने के लिए नियमित रूप से स्वाध्याय एवं सत्संग करना चाहिए । जिस प्रकार शरीर की रोज सफाई करना अनिवार्य माना जाता है उसी प्रकार मानसिक रूप से स्वस्थ बने रहने के लिए सद्विचारों की झाड़ू से मन की सफाई करते रहना पड़ता है । ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे मनोविकारों को नियंत्रित करने के लिए सत्साहित्य का स्वाध्याय रामबाण औषधि है । मनोविकारों से ही हृदय रोग, मधुमेह, मानसिक अवसाद, तनाव, पागलपन, हिस्टीरिया, रक्तचाप तथा लकवा

आदि घातक रोग जन्म लेते हैं । अतः पहले रोग मन में होता है फिर तन में । यह सिद्धान्त सुनिश्चित सत्य है । इनसे बचने के लिए पहले मन की चिकित्सा की जानी चाहिए ।

५-**आत्मिक स्वास्थ्य**-उपासना के माध्यम से हम अपने आत्मिक स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं । आत्मा, परमात्मा का अंश होने के कारण निर्मल एवं पवित्र होती है । लेकिन वातावरण से प्राप्त कषाय कल्मष उस पर चढ़ जाते हैं जो मलीनता की पर्त बना लेते हैं । उपासना द्वारा इसकी नियमित सफाई होती रहनी चाहिए ।

(३) नारी-जागरण आंदोलन

नारी देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है । यों दोष तो सब में रहते हैं । सर्वथा निर्दोष तो परमात्मा ही है । नारियों में तात्त्विक दृष्टि से आत्मिक विशेषता है, उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति । बेटी, बहिन, धर्म पत्नी और माता के रूप में वह परिवार के लिए जिस प्रकार उदात्त आदर्शों से भरा पूरा जीवन यापन करती है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पुरुषार्थ प्रधान नर अपनी जगह ठीक है, पर आत्मिक संपदा की दृष्टि से वह नारी से पीछे ही रहेगा । नारी को प्रजनन का उत्तरदायित्व उठाने के कारण शारीरिक दृष्टि से थोड़ा दुर्बल भले ही रहना पड़ा हो, पर आत्मिक विभूतियों की बहुलता को देखते हुए वह ईश्वरीय दिव्य अनुकंपा की अधिक अधिकारिणी बनी है । अगले दिनों द्रुत गति से बढ़ता आ रहा नवयुग निश्चित रूप से आध्यात्मिक मान्यताओं से भरा पूरा होगा । शासन-तन्त्र, धर्म-तन्त्र, अर्थ-तन्त्र, समाज तन्त्र का सारा कलेवर उसी स्तर का पुनर्निर्मित होगा । ऐसी स्थिति में नारी को हर क्षेत्र में विशेष भूमिकाएँ निबाहनी पड़ेंगी । उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखा जाए तो नारी-जागरण अपने समय का सबसे बड़ा काम प्रतीत होगा ।

१-युग निर्माण महिला मण्डल का गठन करना चाहिए ।

२-युग निर्माण योजना, युग शक्ति गायत्री(गुजराती) एवं अखण्ड

ज्योति तथा साहित्यिक जीवनियाँ महिलाओं को अधिक रुचिकर होती हैं । यह साहित्य नियमित रूप से उन्हें पढ़ने को मिलता रहे तो उनका भावनात्मक स्तर निश्चित रूप से उल्लसित होता है और थोड़े दिनों में वे भी महिला संगठनों की गतिविधियों में योगदान देने लगती हैं । अतः नगर की शिक्षित महिलाओं की सूची तैयार कर उनके पास तीसरे पहर अवकाश के समय नव निर्माण का साहित्य पढ़ने के लिए जाकर देने और वापस लेने का क्रम बनाकर महिला मंडल सक्रिय हो ।

३-महिला मंडल द्वारा साप्ताहिक सत्संग का आयोजन ।

४-मूढ़ मान्यताओं, अन्ध विश्वासों, कुरीतियों, सामाजिक विकृतियों ने भारतीय समाज को किस तरह पद दलित किया और जिनके प्रहार से नारी जाति को कितनी भारी क्षति उठानी पड़ी । अब उनका समाधान, निराकरण, उन्मूलन कैसे हो सकता है-यह दार्शनिक पक्ष नारी शिक्षा योजना का अविछिन्न अंग माना गया है । कहना न होगा कि आज की सुशिक्षित लड़कियों को बेकार का दिमागी बोझा तो बहुत ढोना पड़ता है, पर काम में आने वाली व्यावहारिक जीवन में उपयोगी एवं आवश्यक जानकारियों से वंचित ही रहना पड़ता है ।

५-पुंसवन, नामकरण, मुंडन, अन्न प्राशन जैसे संस्कार महिलाएँ परस्पर मिल-जुलकर शास्त्रीय विधि से कर सकती हैं और उनके साथ जुड़ी हुई शिक्षाओं केआधार पर उस परिवार में एक नई विचारधारा एवं चिंतन शैली का प्रवाह बहाया जा सकता है ।

६-जन्म-दिन और विवाह दिन के उत्सव पर संगठित मंडली की महिलाऐं एक पुष्प और एक बताशा का उपहार लेकर पहुँचा करें और शुभ कामनाऐं दें तो उनमें पारस्परिक घनिष्ठता बढ़ती ही चली जाएगी ।

७-नारी पर से प्रतिबंध अविलंब हटाये जाएँ । उसे पर्दा प्रथा से मुक्त कराने के उपायों को कार्यरूप में परिणत किया जाए ।

८-नारी को समाज की सेवा करने के लिए घरेलू बंधनों से थोड़ा

अवकाश दिया जाए । उसे सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने दिया जाए ।

९-जो लोग नारी उत्कर्ष के महत्व को समझते हैं तथा भारत के आधे जन समाज की अपंग स्थिति को दूर करना चाहते हैं उनके लिए प्रथम कार्य यही करने का है कि अपने घर की नारियों में इस ओर रुचि उत्पन्न करें । उन्हें योग्य बनाऐं, आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें और मार्गदर्शन एवं सहयोग करके उन्हें कार्य क्षेत्र में उतारें ।

१०-नारी शिक्षा का प्रचलन आवश्यक है । भारतीय नारी को तीसरे पहर का अवकाश रहता है । उस समय गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले महिला पाठशालाएँ चलनी चाहिए । थोड़ा प्रयत्न करने पर मोहल्लों में ऐसी पाठशालाएँ स्थापित हो सकती हैं । उन्हीं में से कोई सुशिक्षित नारी पढ़ाने सिखाने का उत्तरदायित्व स्वयं उठाले जो महिला मंडल में सम्मिलित है ।

(४) सत्प्रवृत्ति संवर्धन दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन

देव और असुर दोनों तत्वों से मिलकर मनुष्य बना है । उसमें ईमान भी रहता है और शैतान भी । परिस्थितियाँ इन्हें विकसित करती हैं । यदि अच्छा वातावरण मिले तो देव तत्व और ईमान विकसित होता है । सज्जनता और महानता की वृद्धि होती है । यदि बुरा वातावरण मिले तो उसका प्रभाव अंतरंग में छिपी असुरता को उभारता है और मनुष्य का चिंतन और कर्तृत्व निकृष्ट स्तर का पतनोन्मुख बनता चला जाता है ।

१-समाज का नेतृत्व करने वाले प्रबुद्ध लोगों का काम है कि वे ऐसा वातावरण बनाएँ, ऐसा आंदोलन चलाएँ जिसमें आदर्शवाद का अवलंबन करने वाले व्यक्तियों को कम से कम सामाजिक सम्मान का लाभ तो मिल ही सके ।

२-सत्प्रवृत्तियों को उभारने के लिए, सद्‌भावनाओं को प्रोत्साहित और पुरस्कृत करने के लिए कुछ नहीं किया गया । जब कि होना यह चाहिए था कि जितना दुष्टता के दमन पर ध्यान दिया जाता है कम से कम

उतना ध्यान तो सज्जनता को सराहने और आदर्शवादी सत्साहस को पुरस्कृत करने के प्रयत्न पर दिया जाता । अपराध और दंड, यह निषेधात्मक पक्ष है, उससे भी महत्वपूर्ण पक्ष वह है जिसे विधेयात्मक करना भी उतना ही आवश्यक है जितना अनैतिकता को दंडित करना ।

३-अनीति विरोधी वातावरण बनाने के लिए लोक मत को संगठित व प्रखर होना चाहिए । इस प्रयोग को हमें अपने घरों से आरंभ करना चाहिए । जिन बच्चों की परिजनों की गतिविधियां प्रशंसनीय हों उन्हें समुचित सहयोग, समर्थन, प्यार, सम्मान एवं पुरस्कार मिलना चाहिए । भूल करने वालों, कुमार्ग पर चलने वालों की उपेक्षा की जाए ।

भर्त्सना, ताड़ना, असहयोग आदि परिस्थिति अनुसार वह क्रम अपनाया जाय जिससे कुमार्गगामी को अपने कार्य से परिवार की नाराजगी और भर्त्सना का परिचय मिले । यह नीति परिवार के भावनात्मक विकास और व्यवस्था संतुलन में बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है ।

४-आदर्श प्रस्तुत करने वाले ऐसे अनेक व्यक्ति मिल सकते हैं जिनको गरीबी के कारण किसी ने प्रोत्साहित नहीं किया । ऐसे लोगों को प्रोत्साहन दिया जाए । ऐसे स्वर्गीय लोगों की जयंतियाँ मनाकर उनके चित्रों पर पुष्प चढ़ाना, उनके स्मारक स्वरूप वृक्ष लगाना, उनके जीवन वृतान्त से सर्व साधारण को अवगत कराना ऐसी पद्धति है जिससे हर व्यक्ति को सन्मार्गगामी, लोक सेवी बनने का प्रोत्साहन मिल सकता है ।

५-वैयक्तिक जीवन में समाविष्ट कुत्साओं, कुंठाओं से जूझने के लिए हमें प्रायश्चित और आत्म प्रताड़ना का शस्त्र काम में लाना चाहिए । आत्मशोधन के लिए **हर दिन नया जन्म, हर रात नई मौत** का जो मन्त्र दिया गया है वह अति कारगर सिद्ध होता है । दिन भर अपने शारीरिक मानसिक क्रिया कलाप पर दृष्टि रखनी चाहिए । रात को सोते समय दिन भर की भूलों को शारीरिक दण्डों के रूप में प्रायश्चित करना चाहिए । * कान पकड़कर उठना बैठना, * अपने आपको चाँटे लगाना,

* अमुक समय तक खड़े रहना, * सोने की अपेक्षा उतनी देर जागते रहना, * भोजन में कुछ कटौती या उपवास । इस प्रकार आत्म प्रताड़नाएँ अपने को देकर और अगले दिन वैसी ही भूलें न करने की चेतावनी देकर यह प्रायश्चित प्रक्रिया हर रात को पूरी कर लेनी चाहिए । हर प्रातः उठते ही सोच लिया जाए कि आज का एक ही दिन का जीवन है । रात को सोने के साथ ही आज की मृत्यु हो जाएगी । इस एक दिवसीय जीवन को सर्वोत्कृष्ट रीति से जीने की दिन चर्या प्रातः ही बना ली जाए तो निःसंदेह वह दिन अधिक श्रेष्ठता के साथ बीत सकता है ।

६-परिवार निर्माण के लिए भी संघर्ष की जरूरत पड़ती है । पत्नी व बच्चों को बड़े और छोटों को समुचित प्यार किया जाए और उनकी सुविधा का पूरा ध्यान रखा जाए, पर साथ ही कड़ी नजर इस बात पर रखी जाय कि परिवार का कोई सदस्य कुमार्गगामी, व्यसनी, दुर्गुणी एवं अनाचारी तो नहीं बन रहा है । हर हालत में औचित्य की रक्षा की जानी चाहिए । यह संघर्ष यथा संभव मृदुल, सौम्य और स्नेहासिक्त रखा जाना चाहिए ।

७-रूढ़िवादिता और अनौचित्य के विरुद्ध संघर्ष बड़े बूढ़ों से भी किया जा सकता है । बड़ों का आदर करना, उनकी सुविधाओं का ध्यान रखना तथा शारीरिक सेवा करना छोटों का कर्त्तव्य है और इस शिष्टाचार को हर हालत में निभाया जाना चाहिए, पर उनकी अनुचित इच्छाओं तथा आज्ञाओं से सहयोग करने से साहस पूर्वक इनकार भी कर देना चाहिए ।

८-ऊँच-नीच, छुआ-छूत, पर्दा, नारी प्रतिबन्ध जैसी प्रथाएँ मनुष्यता को कलंकित करने वाली कुरीतियाँ हैं । प्रश्न हिन्दू परंपराओं का नहीं, विश्व विवेक और मानवीय न्याय का है । किसी संप्रदाय या किसी देश में कोई अनुचित परंपरा चल पड़े इसका अर्थ यह तो नहीं होता कि वह बात उचित और न्याय संगत भी ठहरा दी जाए ।

९-स्त्री और पुरुष के बीच खड़ी की गई दीवार सर्वथा अन्याय युक्त

है । पर्दा, विधवा के पुनर्विवाह आदि प्रतिबंध यदि उचित हैं तो नर नारी दोनों पर समान रूप से लागू होने चाहिए । यदि अनुचित हैं तो दोनों पर से हटने चाहिए । इसी प्रकार कन्या और पुत्र के बीच बरता जाने वाला भेद भाव किसी भी दृष्टि से न्याय संगत नहीं है । यह मूढ़ मान्यताएँ हिंदू समाज में गहराई तक जड़ जमाए बैठी हैं ।

१०-अनाचारी तत्वों के प्रति समाज में घृणा, असहयोग, विरोध, प्रतिरोध एवं संघर्ष की प्रवृत्ति उत्पन्न करनी होगी ।

(५) कुरीति उन्मूलन आन्दोलन

समाज में सभी व्यक्ति विवेक से काम लेकर अपने कार्यों का निर्धारण नहीं करते । अधिकांश व्यक्ति परंपरावादी होते हैं और प्रचलित रीति रिवाजों को बिना तर्क की कसौटी पर कसे अपनाते रहते हैं । बहुत सी कुरीतियाँ समाज के लिए बहुत हानिकारक ही हैं । इन कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए प्राणवान, जुझारू एवं संघर्षशील व्यक्तियों की आवश्यकता होगी । हिन्दू समाज में एक बड़ा सिर दर्द सामाजिक कुरीतियों के कारण उत्पन्न हो गया है । कितनी ही प्रथाएँ ऐसी चल पड़ी हैं जो बहुत धन खर्च करने की माँग प्रस्तुत करती हैं । मध्यम श्रेणी का व्यक्ति ईमानदारी से उतना ही मुश्किल से कमा सकता है जिसमें उसके परिवार का गुजारा किसी प्रकार हो सकता है । इस मँहगाई के जमाने में लंबी चौड़ी बचत कर सकना सर्वसाधारण के लिए संभव नहीं । आए दिन बहुत धन खर्च कराने की माँग करने वाली कुरीतियों का भी यदि मुँह भरना है तो बेईमानी के तरीके अपनाए बिना और कोई रास्ता नहीं मिलता । एक रास्ता यह भी है कि पेट पर पट्टी बाँध कर साग-सत्तू से गुजारा करते हुए बच्चों के मुँह में जाने वाली दूध की बूँदें बचा कर कौड़ी-कौड़ी धन जोड़ा जाए और इन कुरीतियों की पिशाचिनी को तृप्त किया जाए । तीसरा तरीका है कि घर के बर्तन किवाड़ बेचकर मित्र रिश्तेदारों से कर्ज लेकर तत्काल का काम तो चला लिया जाए, पर पीछे

भारी अभाव और तिरस्कार का जीवन बिताया जाए । कर्ज का ब्याज सिर पर चढ़कर दौड़ता रहे । इतना सब कुछ होते हुए भी हमारी मानसिक दुर्बलता यह सोचने नहीं देती कि क्या यह सामाजिक कुरीतियां आवश्यक ही हैं ? क्या इन्हें सुधारा और बदला नहीं जा सकता ?

१-वर्ण व्यवस्था का विकृत स्वरूप हटे-ब्रह्मा जी ने अपने चारों पुत्रों को चार कार्यक्रम सौंप कर उन्हें चार वर्णों में विभक्त किया है । ज्ञान, बल, धन और श्रम । यह चारों ही शक्तियाँ मानव समाज के लिए आवश्यक थीं । इनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए वंशगत प्रयत्न चलता रहे और उसमें कुशलता तथा परिष्कृति बढ़ती रहे इस दृष्टि से इन चार कामों को चार पुत्रों में बाँटा गया था । चारों सगे भाई-भाई थे । इस लिए उनमें ऊँच नीच का कोई प्रश्न न था । किसी का सम्मान, महत्व और स्तर न न्यून था न अधिक । अधिक त्याग-तप के कारण अपनी महानता प्रदर्शित करने के कारण ब्राह्मण की श्रेष्ठता तो रही, पर अन्य किसी वर्ण को भी हेय या निम्न स्तर का नहीं माना गया था । आज स्थिति कुछ भिन्न ही है । चार वर्ण अगणित जातियों-उपजातियों में बँट गए हैं और इससे समाज में भारी अव्यवस्था एवं फूट फैली है । यहाँ तक कि एक ही वर्ण के लोग अपनी उपजातियों में ऊँच-नीच की कल्पना करने लगे । यह मानवीय एकता का प्रत्यक्ष अपमान है । व्यवस्थाओं या विशेषताओं के आधार पर वर्ण जाति रहे, पर ऊँच-नीच की मान्यता को स्थान न मिले ।

२-बाल विवाह-अनमेल विवाह-बाल विवाहों की भर्त्सना की जाए और उनकी हानियाँ जनता को समझाई जाएँ । स्वास्थ्य, मानसिक सन्तुलन आगामी पीढ़ी एवं जीवन विकास के प्रत्येक क्षेत्र पर इसका बुरा असर पड़ता है । अनमेल विवाहों को भी रोका जाना आवश्यक है ।

३-भिक्षा व्यवसाय की भर्त्सना-समर्थ व्यक्ति के लिए भिक्षा माँगना उसके आत्म गौरव और स्वाभिमान के सर्वथा विरुद्ध है । आत्म

गौरव खोकर मनुष्य पतन की ओर ही चलता है । खेद है कि भारत वर्ष में यह वृत्ति बुरी तरह बढ़ी है । जो लोग सर्वथा अपंग, असमर्थ हैं, जिनके परिजन या सहायक नहीं उनकी आजीविका का प्रबंध सरकार को या समाज के दान से संस्थाओं को स्वयं करना चाहिए । जिससे इन अपंग लोगों को बार-बार हाथ पसार कर अपना स्वाभिमान न खोना पड़े और बचे हुए समय में वे कोई उपयोगी कार्य कर सकें । अच्छा हो ऐसी सेवाभावी संस्थाएँ जगह-जगह खुल जाएँ और उदार लोग उन्हीं के माध्यम से वास्तविक दीन दुःखियों की सहायता करें ।

४-मृत्यु-भोज की व्यर्थता-किसी के मरने के बाद उस घर में दो सप्ताह के भीतर विवाह शादियों जैसी दावत का आयोजन होना दिवंगत व्यक्ति के प्रति अपमान है । दावतें तो खुशी में उड़ाई जाती हैं । मृत्यु को शोक का चिन्ह मानते हैं तो फिर दावतों का आयोजन किस उद्देश्य से ? मृतक के मित्रों और संबंधियों के लिए भी यही उचित है कि इस क्षति ग्रस्त परिवार की कोई सहायता न कर सकते हों तो कम से कम दावतों की सलाह देकर उसका आर्थिक अहित तो न करें । मृतक की आत्मा को शांति देने के लिए धार्मिक कृत्य कराए जाएँ । ऐसे शुभ कार्यों में जिनसे मानवता की कोई सेवा होती हो, श्राद्ध के उपलक्ष में कितना ही बड़ा दान किया जा सकता है । वही सच्ची श्रद्धा का प्रतीक होने से सच्चा श्राद्ध कहा जा सकता है ।

५-जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण-अंधाधुंध बच्चे पैदा करने और परिवार बढ़ाने के सामूहिक दुष्परिणाम आज सबके सामने हैं । स्वास्थ्य की समस्या, शिक्षा की समस्या, निवास की समस्या से क्या व्यक्ति, क्या समाज और क्या राष्ट्र सब अगणित समस्याओं से ग्रस्त हैं । अपने व्यक्तिगत, समाज, राष्ट्र और विश्व हित की दृष्टि से जनसंख्या को सीमित एवं नियंत्रित रखा जाना आवश्यक है । भुखमरी, अकाल, मँहगाई, भ्रष्टाचार आदि अभिशाप भुगतने पड़ रहे हैं । संसार को नियमित रखने के लिए

प्रकृति जोर मारती है तो उससे विनाश के ही लक्षण दिखाई देते हैं । इसलिए मनुष्य स्वयं उस समस्या को सुधारने का प्रयत्न करें । यह सबसे अच्छी और फायदे की बात हो सकती है ।

६-बलि प्रथा-धर्म ग्रन्थों में जिन देवी-देवताओं का वर्णन है उनकी संख्या भी पर्याप्त है, पर उतने से भी संतोष न करके लोगों ने जाति-जाति के, वंश-वंश के, गाँव-गाँव के इतने अधिक देवता गढ़ लिए हैं कि आश्चर्य होता है । उन पर मुर्गे, अण्डे, भैंसे, बकरे, सुअर आदि चढ़ाते हैं । यह कैसी विडम्बना है कि दया और प्रेम के लिए बने हुए देवता अपने ही पुत्र पशु पक्षियों का खून पीएँ ।

७-भूत-पलीत और जादू टोना-भूत पलीतों का मानसिक भ्रम पैदा करके सयाने, दीवाने और ओझा लोग भोली जनता का मानसिक और आर्थिक शोषण बुरी तरह करते हैं । मानसिक रोगों, शारीरिक कष्टों और दैनिक जीवन में आती रहने वाली साधारण सी बातों को भूत की करतूत बनाकर व्यर्थ ही भोले लोगों को भ्रमित करते हैं । उस भ्रम का इतना घातक प्रभाव पड़ता है कि कई बार तो जीवन-संकट तक उपस्थित हो जाता है ।

८-अशिक्षा का निवारण-राष्ट्रीय प्रगति के लिए अशिक्षा का निवारण नितान्त आवश्यक है । इस प्रयोजन को पूरा करने में सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र पूरी तरह जुट जाऐं । एक दूसरे का भी पूरा सहयोग करें तो समय की अति महत्वपूर्ण आवश्यकता को सरलता पूर्वक पूरा किया जा सकता है । प्रौढ़ अशिक्षितों में से अधिकांश आजीविका उपार्जन में व्यस्त होते हैं इसलिए उनके अवकाश के समय ही शिक्षा व्यवस्था की बात सोची जा सकती है । पुरुषों के लिए वह समय रात्रि का हो सकता है । उनके लिए प्रौढ़ रात्रि पाठशालाओं का प्रबंध होना चाहिए । महिलाओं को भोजन बनाने एवं अन्य गृह कार्यों से थोड़ी सी फुर्सत पाने का समय तीसरे पहर का है । उनके लिए प्रौढ़ महिला पाठशालाऐं मध्यान्ह में दो से

पाँच बजे के बीच में तीन घंटे को चल सकती हैं ।

९-पर्दा प्रथा-हमारे अपने देश में कभी भी पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं रही है । प्राचीन काल में स्त्रियाँ सभी क्षेत्रों में काम करती थीं और उन्हें विद्या अध्ययन, योग्यता अभिवर्धन और अपनी प्रतिभा से समाज को लाभ पहुँचाने की खुली छूट थी । उन्हें कहीं किसी प्रतिबन्ध में नहीं रहना पड़ता था । इस घातक परम्परा को समूल नष्ट करने के लिए किसी स्त्री से घूँघट खुलवा देना या पर्दा न करने के लिए तैयार कर देना भर पर्याप्त नहीं है । वस्तुतः इसके लिए तो महिलाओं में आत्म विश्वास जाग्रत करने के व्यावहारिक प्रयास करने चाहिए ताकि वे स्वयं को आश्रिता, संरक्षिता तथा अबला नहीं वरन् समर्थ स्वावलंबी और परिस्थितियों की चुनौती स्वीकार कर सकने वाली अनुभव करने लगें । पर्दा प्रथा उस समय चली थी जब यवन लोग बहू-बेटियों पर कुदृष्टि डालते और उनका अपहरण करते थे । अब वैसी परिस्थितियाँ नहीं रहीं, तो पर्दा प्रथा भी अनावश्यक हो गई ।

१०-अश्लीलता का प्रतिकार

अश्लील साहित्य, अर्धनग्न युवतियों के विकारोत्तेजक चित्र, गंदे उपन्यास, कामुकता भरी फिल्में, गंदे गीत, अमर्यादित कामचेष्टाएँ, नारी में विद्यमान शील-संकोच-मर्यादा का व्यतिक्रम, दुराचारों की भौंडे ढंग से चर्चा आदि अनेक बुराइयाँ अश्लीलता के अंतर्गत आती हैं । इनसे दांपत्य जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है और शरीर एवं मस्तिष्क खोखला होता है । ऐसे चित्र, कलैंडर, पुस्तकें, मूर्तियाँ तथा अन्य उपकरण हमारे घरों में न रहें, जो अपरिपक्व मस्तिष्कों में विकार पैदा करें । अश्लीलता का विरोध करने के लिए जनमत तैयार कर इनकी जुलूस निकाल कर होली जलाई जाए ।

६-व्यसन मुक्ति आन्दोलन-मादक द्रव्यों से होने वाली हानियाँ सर्वविदित हैं । इधर हमारे देश की युवा पीढ़ी में राष्ट्र के नव निर्माण का

उत्तरदायित्व जिसके कंधों पर है, यह कुप्रवृत्ति तेजी से बढ़ती चली जा रही है । युवावस्था में जब शरीर के अंग-प्रत्यंग विकास कर रहे होते हैं, जीवनी शक्ति बढ़ रही होती है तभी मादक द्रव्यों का कुप्रभाव उन्हें निष्क्रिय और अशक्त करने लगता है । यह सोचनीय स्थिति है । शराब, गाँजा, भाँग, चरस, सिगरेट, तम्बाकू आदि नशे तो युवक-युवतियों में इतने प्रिय हो चुके हैं जिन्हें न अपनाने वाले को रूढ़िवादी तथा पुराण पंथी समझा जाता है । आज व्यसन की इस प्रवृत्ति के विधि पूर्वक विरोध की आवश्यकता है । हमें इस संबंध में लोगों को ज्ञान कराना होगा और उन्हें बताना होगा कि यह कोई शौक या फैशन की चीज नहीं । अपने को सभ्य प्रदर्शित करने का भी यह कोई तरीका नहीं है । सभी समाज सेवी संस्थाओं को इस असुर पर विजय पाने हेतु निम्न कार्यक्रम चलाना चाहिए ।

१-विचार गोष्ठियों द्वारा समय-समय पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाकर व्यसन ग्रसित लोगों को इसकी हानियाँ समझाई जाएँ ।

२-पुरोहित द्वारा यज्ञ, संस्कार, पर्व एवं कथा इत्यादि जैसे अवसरों पर व्यसन छोड़ने हेतु प्रेरित करना ।

३-साधु, संत, महात्माओं के प्रवचनों में इस दुष्प्रवृत्ति को छोड़ने का आह्वान करवाना । विभिन्न उदाहरणों एवं तर्कों द्वारा व्यसनों की हानियों से अवगत कराना ।

४-व्यसन मुक्त भाई-बहिनों को सहयोग हेतु संगठित करना ।

५-समाज सेवा की भावना रखने वाले चिकित्सकों द्वारा गोष्ठियाँ लेकर तथा शिविर लगाकर जन साधारण को इन दुष्प्रवृत्तियों से होने वाली शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक हानियों से परिचित कराना ।

६-परिवार के सदस्य बच्चे पत्नी एवं घनिष्ट मित्र व्यसन ग्रस्त व्यक्ति पर लगातार दबाव डालते रहें तो सफलता की आशा की जा सकती है ।

७-व्यसन मुक्ति आन्दोलन कार्यों द्वारा बैनर, झंडे लेकर जुलूस निकालना । सरकार को मादक द्रव्यों के उत्पादन एवं सेवन पर कानूनी रोक लगाने हेतु ज्ञापन देना ।

८-नशा सेवन से दिल दहलाने वाली दुर्घटनाओं का संकलन किया जाए और उन्हें पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया जाए ।

९-युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित व्यसन मुक्ति आन्दोलन सैट की पुस्तकों को झोला पुस्तकालय, ज्ञान मंदिर अथवा बिक्री द्वारा जन-जन तक पहुँचा कर व्यसन ग्रस्तों के चिंतन में परिवर्तन करने का प्रयास करना चाहिए ।

(७) विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन

समाज का निर्माण परिवार से होता है और परिवार का विवाह से । हर नया विवाह एक नए परिवार की रचना करता है । इस संदर्भ में यह आवश्यक है कि विवाह का शुभारंभ, श्रीगणेश ऐसे वातावरण में हो जो अंत तक मंगलमय परिणाम ही उत्पन्न करता रहे । कहते हैं कि अच्छी शुरूआत में सफलता की आधी संभावना सन्निहित रहती है । जिसका आरंभ ही दुर्बुद्धि एवं दुर्भावना के साथ होगा, उसका विकास भी असंतोष और संघर्षों के बीच होगा और यह क्रम अन्ततः उसे असफल ही बना देगा । अपने समाज की अविवेक पूर्ण रीतिरिवाजों के लिए क्या कहा जाए ? विवाह उत्सव अपने लिए एक कमर तोड़ भार बना हुआ है । लड़के वाले दहेज की लंबी चौड़ी रकमें और कीमती सामान माँगते हैं । लड़की वालों की माँग कन्या के लिए बहुमूल्य जेवरों, कीमती कपड़ों की रहती है । तमाशबीन, सजधज की बारात-बाजे, आतिशबाजी, बढ़िया दावत और अमीरी शान-शौकत की आवभगत चाहते हैं । पग-पग पर निरर्थक नेग-जोग इतने खड़े रहते हैं कि उनमें ढेरों खर्च होता है । यह अतिरिक्त धन आखिर आए कहाँ से ? ईमानदारी से आज की परिस्थितियों

में कोई गुजारे भर को कमा सकता है । जमा करना अति कठिन है । विवाहों में इतना प्रचुर धन फूँकना जब आवश्यक ही हो गया तो दिन रात बेईमानी करते हुए पैसे का जुगाड़ बनाने के अतिरिक्त किसी के सामने और कोई उपाय नहीं रहता । सरकारी कर्मचारी को रिश्वत, मजदूरों के लिए चोरी, व्यापारी के लिए मिलावट करना या कम तौलना, चिकित्सकों के लिए रोगी को डराकर पैसे एँठना आदि अनीति पूर्ण मार्ग ही शेष रह जाते हैं । जो चतुरता पूर्वक छिपी रहने वाली चालाकी नहीं कर सकते उन्हें जोखिम भरे और फूहड़ कहे जाने वाले चोरी, डकैती, लूट, कत्ल ठगी, बेईमानी, विश्वासघात, शोषण, अपहरण के ऐसे तरीके अपनाने पड़ते हैं जो बदनामी और राज दंड भी साथ लिए रहते हैं ।

अपने समाज में अपराध बुरी तरह बढ़ रहे हैं । चोरी-बेईमानी की प्रवृत्ति हर क्षेत्र में पनप रही है, उसका एक बहुत बड़ा कारण विवाह शादियों में होने वाला अंधाधुंध अपव्यय भी है । जो वैसा करना नहीं चाहते उन्हें भी ऐसे पाप मजबूर होकर करने पड़ते हैं । अन्यथा शादियों का खर्चा जुटे कैसे ? अपने समाज की नैतिकता ईमानदारी इस घातक कुरीति के कारण बुरी तरह नष्ट हो चली है ।

यदि यह सही है कि विवाह शादियों का वर्तमान खर्चीला स्वरूप अनुपयुक्त है तो यह विवेकशील देशभक्त का कर्त्तव्य है कि उस अवांछनीयता को हटाने के लिए कुछ साहस प्रदर्शित करे । जिसके कारण अपने समाज का नैतिक और आर्थिक स्तर दिन-दिन चकनाचूर होता जा रहा है । आरंभ हमें अपने घर से करना चाहिए । अपने बच्चों की शादियाँ बिना खर्च ही करेंगे । 'न तो दहेज लेंगे और न देंगे' के सिद्धांत पर दोनों पक्षों का सामंजस्य दूर हो सकता है । जब मिटने होंगे तो दहेज और जेबर एक साथ मिटेंगे । एक पक्षीय सुधार संभव नहीं । समय आ गया है कि हम चेतें और सादगी के वातावरण में मितव्ययिता वाले सज्जनता और विवेकशीलता के आधार पर विवाह आयोजनों की योजना बनाएँ ।

क्या करें ? कैसे करें ?

१-आंदोलन में छात्र-छात्राओं को शामिल करें । प्रयत्न यह होना चाहिए कि हर विद्यालय में यह विचारधारा तेजी से फैले और अविवाहित नव युवक-युवतियाँ प्रभावित होकर विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन में सम्मिलित हों । अपना निज का विवाह आदर्श रीति से ही करने के लिए कटिबद्ध हों, फिर भले ही उसके लिए उसे घर वालों का कितना ही विरोध क्यों न करना पड़े ? हर घर में ऐसे प्रह्लाद पैदा किए जाने चाहिए जो साहस पूर्वक अपने अभिवावकों को भी सन्मार्ग पर चलाने का सत्याग्रह कर सकने का साहस प्रदर्शित कर सकें । छात्राएँ संकल्प लें कि वे विवाहोन्माद से ग्रसित पागलों के साथ विवाह करने या उनके घर जाने की अपेक्षा अविवाहित रहना श्रेयस्कर मानें तो यह उनकी आदर्शवादिता एवं गर्व गौरव भरी प्रतिज्ञा ही होगी ।

२-**प्रतिज्ञा आंदोलन**-यह आंदोलन छात्रों तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए वरन् हर नर नारी तक उसकी पुकार पहुँचाई जानी चाहिए । इसके लिए घर-घर अलख जगाया जाना चाहिए । एक क्रांतिकारी आंदोलन दहेज विरोधी अभियान के विरोध में किसी संगठित प्रयास के साथ आरंभ किया गया है । सर्व विदित है कि दहेज, जेवर और धूम-धाम वाली शादियाँ अपने समाज की आर्थिक कमर तोड़कर रख दे रही हैं । जो कमाया जाता है शादियों के कुचक्र में बर्बाद होता रहता है । सुयोग्य कन्याओं का बिना विवाह के रह जाना, उत्पीड़न सहना और आग में जलाया जाना जैसे अनाचार इस विवाहोन्माद की ही देन हैं । संगठित प्रज्ञामंडलों को मिल जुल कर दहेज विरोधी आंदोलन खड़ा करना चाहिए । इस हेतु एक प्रतिज्ञा आंदोलन चलाया जाना है । अभिभावक प्रतिज्ञा करें कि वे अपने पुत्रों का विवाह बिना दहेज जेवर के नितान्त सादगी के साथ ही करेंगे ।

३-**खर्चीली शादियों का बहिष्कार**-विरोध का एक आसान तरीका

यह है कि धूम धाम वाली शादियों में सम्मिलित होने का बहिष्कार किया जाए । भले ही वे अपने कुटुम्बियों, संबंधियों के यहाँ ही क्यों न हो रही हों । यह विरोध भी चर्चा का विषय बनेगा और आगे चलकर अनेकों को नए सिरे से सोचने के लिए विवश करेगा ।

४-उप जातियों की कट्टरता कम हो-इस संदर्भ में एक बात और भी सोची जा सकती है कि उप जातियों की कट्टरता को कम किया जाए और एक बड़ी जाति के अंतर्गत शादियाँ करने की छूट पंचायत स्तर पर घोषित की जाए । यह पहला कदम आगे चलकर अपना दायरा और भी विस्तृत करेगा । अभी तो उप जातियों का बंधन ही इतना बड़ा अवरोध बना हुआ है कि उस कारण योग्य लड़की-लड़कों का जोड़ा मिलना ही कठिन हो रहा है । उप जातियों की छोटी परिधि भी लड़कों की दहेज की बोली बढ़ाने का एक बहुत बड़ा कारण है ।

५-स्वयं सेवी संस्थाओं का दायित्व-संस्थाएँ अपने कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण अंग यदि विवाहोन्माद के निराकरण को मान लें और अपनी गतिविधियों में इस प्रक्रिया को भी जोड़ लें और देश में बिखरे हुए अनेक धार्मिक सामाजिक संगठन थोड़ा-थोड़ा भी प्रयत्न करें तो सब मिलकर बहुत काम हो सकता है ।

६-प्रगतिशील जातीय संगठनों का दायित्व-जातीय पंचायतें फैसले करें । प्रस्ताव पास करें कि उनके वर्ग में विवाहों की खर्चीली प्रथा बंद की जाएगी और अगणित मूढ़ताओं भरे रीति-रिवाजों का बहिष्कार कर अति सादगी और मितव्ययिता पूर्वक विवाह शादी किए जाया करेंगे । हर वर्ग अपनी संकीर्णता को घटाएँ और विशालता को बढ़ाएँ तो उसे उप जातियों को मिला कर एक बड़ी जाति मात्र रहने देने की उपयोगिता हर दृष्टि से विवेक पूर्ण एवं हित कर दिखाई देगी । जातीय पंचायतें यदि यह सुधारात्मक कार्य हाथ में लें और पूरा करने में जुट पड़ें तो वे अपने अस्तित्व की उपयोगिता सिद्ध कर सकती हैं । अन्यथा

संकीर्णता एवं विभेद की खाई चौड़ी करने वाली विडम्बनाओं में ही उनकी गणना होती रहेगी ।

७-प्रेस का दायित्व-देश में अनेक पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं और उसमें से सभी सुधारवाद, विवेक एवं औचित्य का समर्थन करती हैं । अच्छा हो सभी एक न्यूनतम संयुक्त कार्यक्रम बनाकर उसमें विवाहोन्माद के प्रतिरोध एवं आदर्श विवाहों की परिपाटी चलाने को प्राथमिकता देने लगें । सभी पत्र इस संदर्भ में लोक मत जाग्रत करें और प्रचलित रूढ़िवादिता को हटाने के लिए एक व्यवस्थित आंदोलन खड़ा कर दें । मूढ़ता की हानियाँ और दूरदर्शिता की आवश्यकता को यदि कहानी, कविता, समाचार, लेख आदि माध्यमों से प्रस्तुत करना आरंभ कर दें तो इस दिशा में लोक मत जगाया जा सकता है । लेखक, कवि एवं प्रकाशक ऐसे साहित्य का सृजन एवं प्रसारण कर सकते हैं, जो विवाह व्यवसाय के रोमांचकारी दुष्परिणामों से अवगत कराएँ ।

८-धर्मतंत्र का दायित्व-धर्म तंत्र के माध्यमों से मंदिरों, आश्रमों, पंडित पुरोहितों एवं धर्म संप्रदायों के केंद्र यदि इस प्रकार की प्रतिष्ठा को ही धर्म की सच्ची सेवा मान लें और इस संदर्भ में अपने प्रभाव का उपयोग करें तो भी बहुत कुछ सत्परिणाम की आशा की जा सकती है । इस प्रकार के आदर्श उपस्थित करने वालों का सार्वजनिक अभिनंदन तथा पत्र-पत्रिकाओं में सराहना छापने से भी विचारशील लोगों को प्रभावित किया जा सकता है । दुराग्रहियों की निंदा एवं भर्त्सना का कुछ क्रम चलता रहे, उन पर धिक्कार पड़ती रहे और आलोचना होती रहे तो भी इस गलित, कुष्ठ जैसी महामारी के निवारण का बहुत कुछ प्रबंध हो सकता है ।

९-खर्चीली शादियों एवं दहेज के विरोध में जनमत तैयार करने हेतु युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित विवाहोन्माद प्रतिरोध

आन्दोलन सैट की पॉकेट बुक्स, झोला पुस्तकालय, ज्ञान मंदिर अथवा बिक्री द्वारा जन-जन को स्वाध्याय हेतु उपलब्ध कराई जाए ताकि जनमत स्वयं आदर्श-विवाहों के समर्थन हेतु तैयार हो सके । समस्या का स्थाई हल तब ही होगा, जब जन मानस इसे हृदय से स्वीकार करे ।

१०-युवक-युवती सम्मेलन-प्रगतिशील जातीय संगठनों को समय-समय पर विवाह योग्य युवकों एवं युवतियों के सम्मेलन कराने चाहिए ताकि संबंध मिलने में आसानी हो । आयोजकों एवं अन्य सम्मानित व्यक्तियों को भी इसमें अपने परिवार के बच्चों सहित भाग लेना चाहिए ।

११-सामूहिक विवाह आयोजन-विवाहों में होने वाली फिजूल खर्ची को रोकने का एक सशक्त माध्यम सामूहिक विवाह है । सम्मानित व्यक्तियों को ऐसे आयोजनों में अपने बच्चों की शादियाँ कराकर आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए ताकि अन्य समाज के व्यक्ति भी उनका अनुकरण करें । उपाय अनेक हैं रास्ते बहुत हैं । आवश्यकता उन पर चलने के लिए प्रयास करने की और ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने की है जिनका अनुकरण करने के लिए सर्व साधारण का उत्साह जगाया जा सके । इस दिशा में युग निर्माण योजना के प्रबुद्ध परिजनों को आगे बढ़कर नेतृत्व करना चाहिए और समय की माँग को पूरा करने के लिए जो भी प्रयत्न संभव हो उसे कार्यान्वित करने के लिए आगे आना चाहिए ।

युग निर्माण योजना के परिजन इस पुनीत प्रक्रिया को अपने घर-परिवार से आरंभ करके उसे समाज व्यापी, देश व्यापी बना सकते हैं । पहल लड़के वालों को करनी चाहिए । यों हर घर में कन्याएँ भी विवाह के लिए होती हैं और लड़के भी, पर जिनके लड़के विवाह योग्य हो गए हैं पहल उन्हीं के हाथ में है । वह यदि अपने सुयोग्य लड़के का विवाह बिना दहेज करने को तैयार हों, तो लड़की वाले उसका सहज ही स्वागत करेंगे और जिनकी आर्थिक स्थिति दुर्बल है वे इस सुविधा के लिए अपना भाग्य सराहेंगे, उस उदार व्यक्ति के कृतज्ञ रहेंगे तथा ईश्वर को

धन्यवाद देंगे ।

जहाँ आदर्श रीति से विवाह हों उनका अधिकाधिक प्रचार किया जाए और ऐसे आदर्शवादियों का सार्वजनिक अभिनंदन पूरे उत्साह के साथ किया जाए । जो भी अन्य तरीके सूझ पड़ें उन्हें सोचा जाना चाहिए और अपने-अपने ढंग से सर्वत्र विवाहोन्माद विरोधी आंदोलन को पनपाने के लिए भूमिका तैयार करनी चाहिए । युग की यह माँग और पुकार आज की घड़ी में अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है । उसे पूरा करने के लिए हम में से हर एक को पूरी तत्परता और निष्ठाके साथ प्रयत्न करना चाहिए । विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन आज के हिंदू समाज की सबसे बड़ी और सबसे प्रमुख आवश्यकता है जिसकी पूर्ति के लिए हमें अगले दिनों बहुत कुछ करना होगा । हमारा यह प्रयत्न निश्चित रूप से सफल होगा । अगले दिनों हवा बदलेगी और आज की खर्चीली वैवाहिक कुरीतियाँ अगली पीढ़ी वालों के लिए एक कौतूहल की बात रह जाएगी ।

अब हम लघु पुस्तक माला का संकलन और प्रकाशन कर रहे हैं । इस पुस्तक माला के अंतर्गत प्रत्येक पुस्तक का मूल्य मात्र १.५० रुपए रखा गया है । यह सब कार्य उन्हीं की प्रेरणा से संपन्न हो रहा है । उन्हीं की प्रेरणा से महाकाल की सीरीज की ९६ पेज की चार रुपये मूल्य की पुस्तकें प्रकाशित करना प्रारंभ किया हैं । इन पुस्तकों को जन-जन तक पहुँचाने के प्रयास अपने कार्यकर्त्ता भाइयों के माध्यम से करते हैं । हमारे भाई बहिन सदा की भाँति हमारे अनुरोध को पूरा करने में कभी पीछे नहीं रहेंगे, ऐसा हमें विश्वास है ।



मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा